पं० मनबोध झा—'की औ बबुआ झा, कतय रहैत छी ? हमरा तँ एहने बुझि पड़ैत अछि जे एकै गाममे रहितहुँ प्रायः तीन मासपर भेँट भऽ रहल अछि ।'

बबुआ झा—'ई हमर दुर्भाग्य जे अपनेसँ भेँट नहि होइत अछि । अपनेसन पाणिनि तुल्य वैयाकरणक दर्शनार्थ आन-आन गामसँ लोक अबैत अछि, मुदा लग रहितहुँ हमरा एतबा दिनपर भेँट होइत अछि । असलमे नोन-रोटीक चिन्तामे लागल रहैत छी आ तेँ अपनेक दर्शनसँ वंचित रहैत छी । कुशल तँ छैक ? संवाद किएक पठाओल गेल छल ?'

मनबोध झा—'हम दु दिनसँ अहाँकेँ तकैत छलहुँ ।'

बबुआ झा पुछलथिन—'कोनो विशेष काज छलैक ?'

मनबोध—'हँ, अहाँकेँ बुझले अछि जे इन्दुमती आब विवाहक योग्य भऽ गेलीह । अगिला वर्ष तँ अतिचार पड़ैत छैक । एहि वर्ष हुनक विवाहसँ निवृत्त भऽ जाय चाहैत छी । हमरा अहाँसँ एतबे कहब अछि जे अहाँ हुनक विवाहमे हमरा सहयोग करी । हम शरीरहुसँ खूब स्वस्थ नहि रहैत छी जे विवाह-दानक काजमे दौड़-बड़हा कऽ सकी । अहाँसँ तँ हमरा बड़ निकट सम्पर्क रहल अछि । जखन कखनहुँ कोनो नीक-अधलाह परिस्थिति हमर सोझाँमे अबैत अछि तँ हम बिनु अहाँक विचारेँ आगाँ नहि बढ़ैत छी ।'

बबुआ—'हम सहयोग करबा लेल तैयार छी, मुदा कोन तरहक सहयोग हमरासँ अपने चाहैत छी ?'

मनबोध झा—'पहिल काज तँ छैक जे वरक अनुसंधान कयल जाय, जे इन्दुमतीक योग्य होथि । अधिकार-माला सभमे दरभंगा आ मधुबनीक वर सभक विवरण छैक । पूर्णिया जिलाक वर सभक नाम ओहिमे नहि छैक । इन्दुमतीकेँ व्याकरण आ साहित्यक नीक योग्यता भऽ गेल छनि । हम स्वयं हुनका पढ़बैत छियनि । तर्क-संग्रहमे हुनका खूब गति लगै छनि । अमरकोष हुनका कंठस्थ छनि । लीलावतीमे सेहो हुनक नीक प्रवेश छनि । हम चाहैत छी जे पूर्णिया

जिलाक कोनो रजवाड़ामे हुनका लेल एकटा सुयोग्य वर भेटि जाय, जाहिसँ हुनका जीवनमे कहियो अभाव नहि होइन । अहाँकेँ वरक अनुसंधानमे जाय पड़त । दरभंगाराजमे हुनका अधिकार नहि हेतनि । तखन तँ बचि गेल पूर्णियाक रजवाड़ा सभ, जतय हुनका लेल सुयोग्य वर भेटि सकय ।'

—'हम एहि काजक हेतु पूर्णिया जयबा लेल तैयार छी ।' बबुआ झा अपन सहमति देलथिन ।

—'हुनरा अहाँसँ एहने आशा छल । आइ रवि थिक, काल्हि पूर्णिया जयबा लेल नीक दिन नहि अछि । सोम दिन दिक्शूल पड़ैत छैक । अहाँ मंगल दिन एतयसँ पूर्णियाक लेल विदा भऽ जाउ । पहिने कतय जायब ?'

बबुआ—'बसैठीमे हमर आ अपनेक सम्बन्धी लोकनि रहैत छथि । ओतहि रहब आ रजवाड़ा सभक वर सभक पता लेब आ जे आवश्यक बुझि पड़त से काज करब ।'

मनबोध—'हमर मन प्रसन्न कऽ देलहुँ । आब चलू इन्दुमतीक मायसँ सेहो गप्प कऽ लिअऽ ।'

बबुआ– 'हुनकासँ हम परसू गप्प कऽ लेब । भिनसरे एहिठाम आबि दही-चूड़ा खा कऽ हम पूर्णियाक यात्रा करब ।'

मनबोध—'बेस, हम स्वयं हुनका अहाँक यात्राक उद्देश्य कहि देबनि ।'

मंगल दिन प्रातःकाल संध्या-पूजासँ निवृत्त भऽ बबुआ झा मनबोध झाक ओहिठाम आबि गेलाह । हुनक पत्नी दही, चूड़ा, गुड़, केरा, अँचार, काँच मेरिचाइ आ नोन पवित्रतापूर्वक उल्लासपूर्ण भावसँ हुनका लेल परसलनि । गामक सम्बन्धेँ मनबोध झाक पत्नीकेँ ओ भौजी कहैत छलथिन आ दुनू परिवारमे खूब आत्मीयता छलनि ।

बबुआ—'भौजी, पन्द्रह-बीस दिनमे हम वरक अनुसंधान कऽ कऽ पूर्णियासँ चल अबैत छी । अपन गाम, इसहपुरसँ बसैठी लगभग एक सय कोस होयत । एतय घुरि कऽ अयबामे किछु दिन लगबे करत । अहाँ लोकनि चिन्ता नहि करब । हम 'इन्दु'क हेतु अनुरूप वर सभक जानकारी देब, तखन अहाँ लोकनि चयन करब ।'

ओ एतहि विदा भेलाह आ किछुए दिनमे बसैठी पहुँचि गेलाह । ओतय अपन सम्बन्धीक ओहिठाम रहलाह । ओतहि ओहि गामक हरखू झासँ हुनका

भेँट भेलनि । हरखू झा पहसराक महाराज रामचन्द्रनारायण रायक फुलतोड़ा छलाह आ बीच-बीचमे छुट्टी भेलापर अपन गाम बसैठी आबि जाथि । गामक काज कऽ ओ पुनः अपन काजपर ड्योढ़ी चल जाथि । हुनक गाम महाराजक राजमहलसँ प्रायः तीन कोसपर छलनि । राजमहल महाराज रामचन्द्रक राजधानी पहसरामे अवस्थित छल । हरखूकेँ एतबा दूर पयरे अयबा-जयबामे कोनो कष्ट नहि होइन । बबुआ झा जे उत्साहपूर्वक पूर्णियाक यात्रापर विदा भेलाह तकर कारण ईहो छलैक जे ओ कोनो रजवाड़ामे नोकरीक प्रयास सेहो करताह । हुनक गामक कतेक गोटे रजवड़े सभमे नोकरी कऽकऽ जगह-जमीन किनने छथि । ओ निश्चय कयलनि जे ओ पहिने पहसरा ड्योढ़ी जेताह । बनैलीक जमींदारक मुख्यालय, बनैली जेताह । ई बनैली ग्राम परगना हवेलीमे अवस्थित अछि । ओतहु एकटा वर छैक । तदुपरान्त ओ 'सौरिया' जेताह । सौरियाक जमींदारी कटिहार परगनामे अवस्थित छैक । शीघ्रतापूर्वक ई तीनू ठाम वर सभक अनुसन्धान करताह । ओ अपन यात्रा प्रारंभ करताह पहसरासँ । महाराज रामचन्द्रनारायणकेँ एके पुत्र । हुनक अवस्था छनि उनैस-बीस बर्खक । आइ भिनसरे हुनका हरखूसँ भेँट भेलनि ।

बबुआ झा—'हरखू झा, ई तँ कहू जे महाराज रामचन्द्रनारायण रायक स्वभाव केहन छनि ?'

हरखू—'स्वभाव हुनक केहन छनि, ई तँ हुनकासँ भेँट भेलापर अहाँ स्वयं अनुभव करू । ओ पूर्णिया जिलाक सभसँ पैघ जमीन्दार छथि । हिनक 'राज' मोरंगक कातसँ गंगा-कात धरि पसरल छनि । हिनकर राजमे केओ भूखल नहि रहि सकैत अछि । महाराजक हुकुम छनि जे राजक कोनो भागमे भूखसँ पीड़ित व्यक्ति राजक अमलासँ कहि अन्न प्राप्त कऽ सकैत अछि ।'

बबुआ झा—'हम महाराजक ओहिठाम पहुनाइ कऽ सकैत छी ?'

हरखू– 'किएक नहि ? किन्तु पहुनाइ तँ पाहुने सन करब ?'

बबुआ—'हँ औ, हमरा महाराजसँ भेँट करा दिअऽ । हमर इच्छा अछि जे दरबारमे जाकऽ महाराजक आचार-विचार देखी ।'

हरखू—'ई कोन पैघ बात छैक ? अभ्यागत लोकनिक लेल बनल अतिथिशालामे अहाँक रहबाक प्रबन्ध कऽ देब । राजक अतिथिक लेल जे भनसाघर छैक, ताहिमे अहाँक भोजनक व्यवस्था सुगमतासँ भऽ जायत ।'

बबुआ—'अहाँ ड्योढ़ी कहिया जायब ?'

हरखू—'हम तँ काल्हिए भिनसर जायब । अहूँक इच्छा हो तँ चलू ।'

दुनू गोटे भिनसरे ड्योढ़ी लेल विदा भेलाह आ पहर दिन उठैत ओतय पहुँचि गेलाह। महाराजकेँ काल्हि कुमारीपुर अयबाक छनि। ओतयसँ मनिहारीघाट लगहि छैक। ओतय ओ गंगास्नान करताह। परसू पूर्णिमा छैक।

अतिथिशालामे बबुआ भाक रहबाक प्रबन्ध आ राजक भनसाघरमे भोजनक व्यवस्था कऽ हरखू भा अपन काजमे लागि गेलाह। महाराजक संग छिनकहु कुमारीपुर अयबाक छलनि। दोसर दिन ओ महाराजक संगे यात्रा पर विदा भऽ गेलाह।

महाराज खूब सबेरे पालकीपर यात्रामे चललाह। बारह कहार हुनक संग छलनि। प्यादाक एक हथियारबन्द टुकड़ी हुनक सुरक्षाक हेतु संग छलनि। कहार सब बदलि-बदलि कऽ चलय आ तेँ आठ कहार खाली रहय आ चारि कहार पालकीमे लागल रहय। प्रत्येक दू घंटापर कहार बदलल जाय। महाराज ओही रातिमे कुमारीपुर परगनाक मुख्यालय पहुँचि गेलाह। तहसीलदार, परगनाक चौधरी, इलाकाक जेठरैयति लोकनि तथा अन्यान्य कर्मचारीगण महाराजक सेवामे उपस्थित छलाह। किछु विश्रामक उपरान्त महाराज तहसील-वसुलक हिसाब सुनलनि, फसिल सभक विषयमे जानकारी प्राप्त कयलनि आ नव पोखरि जे राजक कचहरी लग खुनल जा रहल छल तकर प्रगतिक जानकारी प्राप्त कयलनि। एखन परगनामे कोनो विशेष समस्या उपस्थित नहि छलैक। महाराज भोजनोपरान्त विश्राममे चल गेलाह। काल्हि हुनका मनिहारी घाटमे गंगा-स्नान करबाक छनि आ तदुपरान्त गंगाक कातहिमे ओ पूजादिसँ निवृत्त होयताह। हरखू सेहो संगहि रहताह।

दू

बबुआभा कौशिकीक कछेरपर बसल राजधानीकेँ देखि मुग्ध छलाह। ओ दरभंगा महाराजक भौरा गढ़ी सेहो देखने रहथि, मुदा महाराज रामचन्द्र नारायणक महलक विस्तार, बाग-बगीचा, पोखरि आदि देखिकऽ ओ अवाक् छलाह। अतिथि-अभ्यागतक सम्मान एहिसँ नीक की हेतैक? महाराजक अतिथिगण कौशिकीमे बनल घाटपर स्नान करथि आ मन्दिरपर पूजा-उपासना करथि। एकर बाद पनपिबाइक हेतु बिभो होइक। सकल साधारणो पाहुनक लेल सोहारी-तरकारी, दूध-दही आ मधुरक प्रबन्ध रहैक। दुपहर लेल विन्यासपूर्वक भोजनक प्रबन्ध रहैक। रवि आ एकादशीकेँ छोड़ि सभ दिन माछक प्रबन्ध रहैक। मानु जे भगवतीकेँ चढ़ाओल जाय सैह भनसाघर अबैत छलैक। महाराजक ड्योढ़ीसँ रानीगंजक दूरी प्रायः तीन कोस छलैक। रानीगंज ओहि युगमे दू वस्तुक लेल प्रसिद्ध छल—उत्तम कोटिक घृत आ भेड़ीक ऊनक कम्बल। महाराजक ओहि ठाम घृत आ कम्बल प्रचुर मात्रामे रानीगंजसँ कीनिकऽ मङाओल जाय। सकल-साधारणोक ओढ़ाओनक हेतु महाराजक भंडारसँ कम्बल भेटनि आ नीक कोटिक कम्बल ओढ़बा लेल देल जाइत। ई सभ देखिकऽ तँ बबुआभाक मनमे भेलनि जे कोनो तरहेँ हुनका राजमे एकटा नोकरी भऽ जाइत। महाराजक उदारताक विषयमे सुनि ओ आनन्दित छलाह।

बबुआभा ड्योढ़ीमे ओहिना बैसल नहि छलाह। हुनक मुख्य काज छलनि बरक अन्वेषण आ ओकर संगहि राजक नोकरीक प्रबन्ध। एकक सिद्धिक उपरान्त दोसर सिद्ध भऽ सकैत छलनि। हुनका अपन गाम दिसुका अनेको लोकसँ ओतय भेंट भेलनि। केओ भनसिया, केओ टहलू तँ केओ राजस्व विभागमे कर्मचारी छल। नड़आरक मोहन कामति भनसाघरक कर्मचारी छल। ओकर काज छलैक भनसाघरमे प्रतिदिन जे चाउर, दालि, तरकारी, घृत, दूध-दही आदिक खर्च होइत छल से भंडारसँ लकऽ भनसाघरमे पहुँचा देब। बबुआभा नव अतिथि छलाह। मोहन कामति हुनकासँ परिचय कयलक आ हुनक राजमहल अयबाक अभिप्राय जनबाक हेतु हुनकासँ गप्प आरम्भ कयलक।

मोहन—'सरकार, अपने तँ पहिने एहि दरबारमे नहि आयल छी? सरकारक घर इसहपुर भेल आ हमर घर नड़आर। कोनो विशेष काजेँ आगमन भेल छैक?'

बबुआ—'काज किछु विशेषे प्रकारक अछि।'

—'हमरा कहबामे अपनेकेँ कोनो तारतम्य तँ ने अछि? की हम अपनेक समस्याकेँ बूझि सकैत छी?' मोहन पुछलक।

—'हमरा लोकनि तँ एकेठामक रहनिहार छी। अहाँकेँ नहि कहब तँ हम कार्य-साधन कोना करब?' बबुआभा कनेक सोचैत बजलाह—'बात ई छैक जे हमर गामक वैयाकरण पं० मनबोधभाकेँ एक सुशीला कन्या छथिन।

हुनका लेल वर तकबाक क्रममे हम महाराजकुमार इन्द्रनारायण रायक विषयमे जानकारी प्राप्त करबाक हेतु आयल छी ।'

मोहन—'सरकार, मनबोध बाबू तँ हमरे गामक पं० रामेश्वर भाक जमाय छथिन । मनबोध बाबू सन विद्वानकेँ मिथिलामे के नहि जनैत छनि ? अहाँकेँ महाराजकुमारक विषयमे जे जानकारी चाही से हम देब । अहाँ चाही तँ हुनकासँ भेँटो कऽ सकैत छी ।'

बबुआ—'हुनकासँ भेँट कोना होयत ?'

मोहन—'भिनसर आ साँभमे ओ राजमहलक उद्यानमे टहलैत छथि । अहूँकेँ ओहि समयमे टहलबाक क्रममे हुनकासँ भेँट भऽ सकैत अछि । ओ निरभिमान पुरुष छथि । उनैस-बीसक वयक्रम छनि । पूर्णियाक कोनो रजबाड़ामे एखन हुनकर जोड़क वर नहि भेटत ।'

बबुआ—'हुनक विवाह करयबाक विचार एहि सुरमे छैक ?'

मोहन—'खूब पक्का तँ नहि कहि सकब, मुदा हमरा सुनबामे आयल अछि जे यथाशीघ्र महाराजकुमारक विवाह हेतनि । यदि वैयाकरणजीक कन्याक प्रति अहाँ ओ वर करय चाहब तँ हम एहिमे अहाँक सब तरहेँ सहायता करब । अपन प्रान्तक कन्याक विवाह एहि राजदरबारमे होयत, ई तँ हमरा लेल शुभ सूचक आ लाभदायक होयत ।'

बबुआ—'आर रजबाड़ा सभक वर सभक किछु सूचना अछि ? अहाँ तँ बहुत दिनसँ एहि दरबारमे रहैत छी ।'

मोहन—'महाराजक देयाद 'सौरिया'मे रहैत छथिन । ओतहु दू टा वर छथि—कुमार राजेन्द्रनारायण राय आ कुमार महेन्द्रनारायण राय । मुदा हुनका लोकनिक तुलनामे ई बीस छथि । करबाक योग्य ओहो सभ छथि मुदा महाराजकुमारक जोड़मे नहि अबैत छथि । एकटा आरो मैथिलक रजबाड़ा एहि देशमे छैक आ ओ थिक बनैलीक जमींदारी । बनैलीक जमींदार अपन ड्योढ़ी बनैली नामक ग्राममे बनौने छथि । ओतय जमींदार परमानन्द चौधरीक बालक दुलार चौधरी उत्तम कोटिक वर छथि । मुदा सम्पत्तिमे एहि जिलामे सर्वोपरि छथि पहसरा ड्योढ़ीक वर । ई चारिटा प्रथम कोटिक वर एतुक्का रजबाड़ा सभमे छथि । अहाँ आब कन्याक अनुरूप वरक निश्चय करू ।'

एहि गप्प-सप्पमे सूर्यास्त भऽ गेलैक । बबुआ भा अपन डेरापर आइत छलाह आ ओमहरसँ महाराजकुमार टहलि कऽ अबैत छलाह । बबुआ भा

कनेक ठमकि कऽ अपन परिचय देलथिन । महाराजकुमार हुनका पुछलथिन जे हुनका रहबामे आ भोजनादिमे तँ कोनो कष्ट नहि छनि ? ई पुछैत ओ टहलैत चल गेलाह । बबुआ भा तँ महाराजकुमारकेँ देखि कऽ मुग्ध छलाह । देखबामे कामदेव-सन आ बजबा-भुकबामे अत्यन्त शालीन । पहिल बात जे ओ बबुआ भाकेँ पुछलथिन ओ छल हुनक सुख-सुविधाक विषयमे । अभिमान लेश मात्र नहि ।

बबुआ भा अपन मनमे इन्दुमतीक रूप-गुणकेँ स्मरण कयलनि आ एमहर महाराजकुमारकेँ ध्यानमे अनलनि । हुनका बुझि पड़लनि जे ई जोड़ी विधाता अपनहि हाथेँ सिरजने छथि । आब ओ आन वर सभकेँ देखबाक पक्षमे नहि छलाह, मुदा सोचलनि जे कथा कतय निश्चित होयत से के जनैत अछि ? तेँ ओ निश्चय कयलनि जे सौरियाक वर सभकेँ तथा बनैलीक वरकेँ सेहो देखि ली ।

तीन

महाराज रामचन्द्रनारायण राय कुमारीपुर परगनाक तहसील-वसूलक स्थिति बुझलनि । प्रजाक दुःख-दर्दक जानकारी कयलनि । बहुत लोक सहायतार्थ हुनका लग पहुँचल । ककरहु बेटीक विवाह करबाक छलैक आ ककरहु उपनयन उपस्थित छलैक । मुदा द्रव्याभावमे अथाहमे पड़ल छल । बहुत एहनो छल जकर घर जरि गेल छलैक, मुदा खड़-बाँसक अभावमे घर उठा नहि सकल छल । एहि प्रकारक लोक सभ महाराज लग आवेदन कयलक । एहन आवेदन-पत्र सभपर महाराज आदेश पारित करैत गेलाह । राजक बँसवाड़ि आ खड़होरिसँ अगिलगीवला आ घर खसयवलाक हेतु बाँस आ खड़ देबाक आदेश भेलैक । उपनयन, विवाह आ श्राद्धक लेल 'राज' दिससँ नगदी सहायताक आदेश भेलैक आ परगनाक चौधरी, नगीना सिंहकेँ आदेश देल गेलनि जे ओ आवेदनकर्त्ता सभकेँ साहाय्य-सामग्री आ रुपैया उपलब्ध करा देथुन ।

महाराजकेँ ओतहि पता लगलनि जे परगना सुलतानपुरमे किछु झंझटि उपस्थित भऽ गेल छैक । ई झंझटि 'तीराखारिदह'क जमींदारक कारणेँ भेल छैक । तीराखारिदहक जमींदार छथि परमानन्द चौधरी जे अपन

ड्योढ़ी बनैली ग्राममे बनौने छथि। ई तीराखारिदहक जमींदारी कोना प्राप्त कयलनि, एहि संबंधमे एकटा कथा छैक।

एक बेर महाराज रामचन्द्रनारायण राय पर पूर्णियाक फौजदार नाराज भऽ गेलथिन। फौजदार लोकनि मुगलराजमे बड़ शक्तिशाली आ प्रभावशाली होइत छलाह। एहन स्थितिमे ओ बहुत चिन्तित रहय लगलाह। परमानन्द चौधरीक पिता देवानन्द चौधरीकें जखन एकर खबरि भेलनि तँ ओ महाराजसँ भेँट कयलथिन। देवानन्द बड़ प्रवेशी लोक छलाह आ पूर्णियाक सभ रजवाड़ा तथा फौजदारक ओहिठाम हिनक प्रवेश छलनि। फौजदारकें महाराज रामचन्द्रनारायण रायपर किछु अविश्वास भऽ गेल छलनि आ जखन देवानन्द हुनका स्थितिक विषयमे बुझौलथिन जे ओ हुनक पूर्ण विश्वासपात्र आ वफादार छथि तँ फौजदार दिसँ बात समाप्त भऽ गेल। महाराज रामचन्द्रनारायण राय आ फौजदारक बीच पुनः मधुर संबंध स्थापित भऽ गेल। एहिसँ प्रसन्न भऽ महाराज रामचन्द्रनारायण राय देवानन्द चौधरीकें दू परगना इनाममे देलथिन। ओ दुनू परगना भेल तीराखारिदह आ असजा।

देवानन्द अपन एक पुत्र परमानन्दकें तीराखारिदह देलथिन आ दोसर पुत्र मानिकनन्दनकें असजा देलथिन। आइ ओही महाराज रामचन्द्रनारायणकें परमानन्दसँ भेँट भेल छलनि। तीराखारिदह जमींदारीक उत्तरी सीमापर मोरंग छैक आ दक्षिणी ओ पश्चिमी सीमापर परगना सुलतानपुर। परमानन्द चौधरीक देवान सुलतानपुर परगनाक किछु भागकें तीराखारिदह परगनाक अंश कहैत छलथिन आ एहि कातक महाराज रामचन्द्रनारायणक किछु रैयतिकें बेदखलो कऽ देलथिन। एहिपर रैयति-वर्गमे बनैलीक जमींदारक प्रति आक्रोश छलैक। ओकरा सभक कहब छलैक जे सभ दिनसँ ओ लोकनि जकरा सुलतानपुरक हिस्सा बुझैत आयल अछि, ओ सीमा आइ हठात् कोना बदलि गेलैक, से ओकरा सभकें बुझबामे नहि अबैक।

महाराज रामचन्द्र कुमारीपुरसँ मोहनीगढ़ी अयलाह। मोहनीगढ़ीमे महाराजक कचहरी आ राजभवन सेहो बनल छलनि। ई मोहनीगढ़ी पूर्णियासँ समीपे छल। एतयसँ महाराजकें पूर्णियाक काज करबामे सुविधा होइत। ई पूर्णियामे फौजदारक दफ्तरसँ दू कोसपर स्थित छल। मोहनीगढ़ीसँ दोसर दिन ओ सुलतानपुर परगनाक मुख्यालय पहुँचलाह। बेदखल रैयतिसभ हिनक अयलासँ उल्लसित भेल आ महाराजकें ओ लोकनि अपन दुखनामा सुनौलक। बनैलीक जमींदारक लठैत सभ सीमापरसँ महाराज रामचन्द्रनारायणक सुलतानपुर परगनाक रैयति सभकें हटा देने

छल। महाराज ओकरा सभकें सान्त्वना देलथिन आ सीमाक सटल दोसर जमीन दऽकऽ खड़-बाँस आदिसँ घर बनयबाक लेल सहायता देलथिन। संगहि, ओतय किछु प्यादाकें रहबाक आदेश भेलैक। ओकरा लोकनिकें तावत धरि ओतय रहबाक छलैक यावत धरि बनैलीसँ सीमा-विवादक हल नहि भऽ जाइत छलैक। उद्देश्य छलैक जे प्यादा सभ भविष्यमे सीमाक अतिक्रमणकें रोकत आ रैयतपर विपत्ति अयलापर ओकर सहायता करतैक। महाराज अपन देवानकें आदेश देलथिन जे ओ अपन स्तरसँ बनैलीक देवानसँ यथाशीघ्र अतिक्रमण हटयबाक हेतु सम्पर्क करथि। महाराज रामचन्द्रकें ई खूब स्मरण छलनि जे 1751 ईस्वीमे परगना तीराखारिदह ओ देवानन्दकें उपहारस्वरूप देने छलथिन आ देवानन्द चौधरी अपन ज्येष्ठ पुत्र परमानन्द चौधरीकें ओ परगना देने छलथिन। महाराजकें आशा छलनि जे ई झगड़ा आपसी बातचीतसँ सोझरा जायत।

दोसर दिन महाराज तहसील-असूल आदिक स्थितिसँ अवगत भेलाह। परगनाक राजस्वक किस्त फौजदारक ओहिठाम जमा कयल गेलैक की नहि आदि विषयक छान-बीन कयलाक बाद परगनाक उत्तरी सीमांचलपर स्थित गामक जेठरैयति लोकनिसँ भेँट कयलथिन आ हुनका लोकनिकें स्थितिसँ अवगत करौलथिन। ओ लोकनि हुनका आश्वासन देलथिन जे बनैलीक जमींदारकें गप्पक जबाब गप्पसँ देल जेतैक आ लाठीक जबाब लाठीसँ देल जेतैक। हुनका लोकनिक कहब छलनि जे अतिक्रमण बनैलीक जमींदार कयने छथि जकरा शीघ्रातिशीघ्र हटा देल जाय। भविष्यमे एहि तरहक अतिक्रमण बर्दाश्त नहि कयल जेतैक। बनैलीक जमींदारक कर्मचारी लोकनि चोर जकाँ सीमापर लागल सागुआन आ सखुआक गाछ कटबा देने छलथिन। महाराज शीघ्रातिशीघ्र एहि संबंधमे आवश्यक काररवाइ करबाक सभ गोटेकें आश्वासन देलथिन।

ई सभ व्यवस्था कयलाक बाद महाराज लगभग पचीस कोस रास्ता पालकी द्वारा चलि मोहनीगढ़ी आबि गेलाह। ओतय हवेली परगनाक चौधरीसँ तहसील-असूल आ राजस्वक किस्तक अदायगीक जानकारी प्राप्त कऽ दोसर दिन पहसरा लेल विदा भेलाह आ सायंकाल धरि ओतय पहुँचि गेलाह। मोहनीगढ़ी हवेली परगनाक मुख्यालय सेहो छलैक।

अमात्यवर्गक लोक सभ राजमहलमे महाराजक स्वागतार्थ उपस्थित छलाह। गाम-गामक जेठरैयति लोकनि सेहो उपस्थित छलाह। पहसरासँ कुमारीपुर आ ओतयसँ मोहनीगढ़ी आ मोहनीगढ़ीसँ सुलतानपुरक यात्राक

विवरणमे महाराज हुनका सोभनिकेँ अवगत करौलथिन। सीमा-विवादक संबंधमे सभकेँ दृढ़ता किन्तु शान्तिक मार्ग अपनयबाक निर्देश देलथिन। दीवान जानकीराम सिंह हुनक एहि निर्देशसँ पूर्ण संतुष्ट छलाह।

चारि

बबुआ झाकेँ तँ सौरियाक दुनू वर आ बनैलीक दुलार चौधरीक पता लागिये गेल छलनि मुदा ओ विचारलनि जे यावत महाराज कुमारीपुरसँ घुरि कऽ अबैछथि तावत सोहो बनैली आ सौरियासँ घुरिकऽ आबि जयताह।

बबुआ झा पहसरासँ बनैली पहुँचलाह। प्रायः दस कोसक दूरी छल। परमानन्द चौधरीक ड्योढ़ी प्रथम कोटिक छल। ओतय जाइते देरी हुनका अपन गामक ठक्कन झासँ भेंट भऽ गेलनि। ओ चौधरीजीक मुँहलगुआ छल-थिन। परमानन्द चौधरीक दरबारमे हुनक बेश प्रतिष्ठा छलनि।

ठक्कन झा पुछलथिन--'ओ बबुआ बाबू! आउ, आउ। अहाँ एमहर कोना? हमरा लोकनिकेँ किछु खबरि नहि। अहाँ अबैत छी कतयसँ?'

बबुआ झा—'हमरा तँ ज्ञाते नहि छल जे अहाँ बनैलीक जमींदारक ओहिठाम काज करैत छी। अहाँक ओहिठामक कुशल-मंगल उत्तम। धिया-पुता सभ नीकेँ। हम इसहपुरसँ अबैत छी आ दस दिन पहिने ओतयसँ बिदा भऽकऽ पहसरा ऐलहुँ।'

ठक्कन झा–'पहिने स्नान-ध्यान करू, भोजन करू। तखन गप्प-सप्प हेतैक।'

भोजनोपरान्त दुनू गोटे बैसलाह। बबुआ झाकेँ दुलार चौधरीक विवाहक जानकारी लेबाक छलनि तेँ कथा-वार्ताक प्रसंग उठौलनि--'औ ठक्कन बाबू, अहाँकेँ तँ बुझले अछि जे वैयाकरण मनबोध झाक कन्या आब विवाहक योग्य भऽ गेलथिन। पंडित जीक इच्छा छनि जे पूर्णियाँ जिलाक कोनो रजवाड़ामे हुनका अपन कन्याक अनुरूप वर भेटि जाइन। हमरा ओ एही प्रसंगे पठौने छथि। अहाँ कहू जे दुलार चौधरीक विवाह एहि सूढ़मे करयबाक विचार छनि? यदि होइन तँ हम चौधरीजी लग प्रस्ताव उपस्थित करी।'

ठक्कन बाबू---'दुलार चौधरी तँ प्रथम कोटिक वर छथि। भगवान सब तरहेँ एहि परिवारकेँ देखने छथिन। लक्ष्मीक कृपा एहने छनि जे प्रति वर्ष जमीन-जायदादक विस्तार भऽ रहल छनि। दुलार चौधरी नवयुवक रहितहुँ

बहुत गम्भीर आ अध्यवसायी छथि। वर-गुण तँ बहुत सुन्दर मुदा हमरा नहि बुझि पड़ैत अछि जे एहि बेर हुनक विवाह हेतनि। बेस, संध्याकाल हम बुझिकऽ कहब।'

बबुआ झा —'हिनक ड्योढ़ी, बाग-बगीचा, बखारीक पाँती सभ देखिकऽ तँ एहने बुझि पड़ैत अछि जे ई जमींदार आ कृषक दुनू छथि।'

ठक्कन बाबू–'ई अहाँ ठीके कहलहुँ। पूर्णिया जिलामे एहि युगमे पैह छथि जे जमींदार होइतहुँ पैघ भूभागपर कृषि-कार्य करबैत छथि। पशु-पालनक कारणेँ हिनका घी, दूध, दही आदि पर्याप्त मात्रामे होइत छनि। मुख्यतः माल-जाल पोसबाक हेतु ई खेती सेहो करैत छथि। खेतीसँ चाउर-दालिक अतिरिक्त माल-जालक लेल चारा सेहो उपलब्ध भऽ जाइत छनि। दुलार चौधरी अपन पिताक काजमे सहायक बनि उन्नतिशील जमींदारक कोटिमे आबि गेल छथि। अस्तु, आब अहाँक की कार्यक्रम अछि?'

बबुआ झा–'हमरा एतयसँ सौरिया जयबाक इच्छा अछि। सुनबामे आयल अछि जे ओतहु दू टा वर छैक। हमरा ओतुक्का जानकारी नहि अछि। अहाँकेँ सौरियाक जमींदारी आ ओतुक्का वर सभक विषयमे तँ जानकारी होयत?'

ठक्कन बाबू—'सौरियाक जमींदारी आ ओतुक्का वर लोकनिक जानकारी हमरा किएक नहि रहत? पहसरा राजवंशहिक एक भाग सौरिया भेल। पहसराक महाराज रामचन्द्रनारायण राय गुरगण लोआम मूलक छथि। ई वंशज छथि महाराज समर सिंहक। महाराज समरसिंहकेँ दू बालक—महा-राज कृष्णदेव आ राजा भगीरथ। महाराज कृष्णदेव दिसुका संतान भेलाह महाराज रामचन्द्रनारायण राय आ राजा भगीरथक संतान भेलाह राय राजेन्द्र नारायण आ राय महेन्द्रनारायण। कृष्णदेवक राजधानी भेलनि पहसरा आ राजा भगीरथक राजधानी भेलनि सौरिया। महाराज कृष्णदेव आ राजा भगीरथ कैक पुस्त पहिनहि भेल छथि। सौरिया कटिहारसँ तीन कोसपर अवस्थित अछि। राय राजेन्द्रनारायण आ राय महेन्द्रनारायण सहोदर भाइ छथि। दुनू उत्तम कोटिक वर छथि मुदा वयस्था किछु कम छनि। हमरा जनैत वैयाकरणजीक कन्यामे जोड़ी-मिलान नहि हेतनि। आ, प्रायः एहिबेर हुनका लोकनिक विवाहो नहि हेतनि।

बबुआ झा–औ ठक्कन बाबू, अहाँ तँ बेस फड़िछाकऽ हमरा दुनू वरक परिचय देलहुँ अछि। अहाँक विचारमे वर-कनियाँक जोड़ी-मिलान नहि हेतैक? आब

अहाँसँ अधिक विश्वसनीय आ जानकार लोक हमरा के भेटत ? आब हम एतयसँ सौरिया नहि जायब । सौरियाक काज तँ अहीँ कऽ देलहुँ । आब हम पुनः महाराज रामचन्द्रनारायण रायक भेँट करैत गाम चल जायब ।'

ठक्कन झा--'एखन एतय रहू । किछु दिन रहिकऽ देश जायब ।'

बबुआ झा—'नहि, हमर काज भऽ गेल । हम वरक अन्वेषणमे चलल छी । सौरियाक सब पता अहाँ दऽ देलहुँ । आइ संध्याकाल दुलार चौधरीक विवाहक सम्बन्धमे हमरा अहाँ कहि दी तँ काल्हि भिनसरे हम पहसरा चल जाइ ।'

संध्याकाल परमानन्द चौधरीसँ ठक्कन बाबू गप्प कयलनि मुदा ओ एहि वर्ष बालकक विवाह करयबामे अपन असमर्थता देखौलथिन । परमानन्द चौधरीसँ बबुआ झाकेँ सेहो भेँट भेलनि आ बड़ आत्मीयतासँ ओ गप्प-सप्प कयलथिन । दुलार चौधरीक विवाहक सम्बन्धमे कोनो गप्प नहि भेलनि ।

भिनसरे बबुआ झा ठक्कन बाबूसँ आज्ञा लऽ पहसरा विदा भेलाह । जयबाक काल हुनका कहलथिन जे हुनकहु लेल जँ कोनो नोकरी- चाकरी एहि रजवाड़ा सभमे भऽ जाइत तँ ओ हर्षपूर्वक करताह । हुनक आर्थिक स्थितिक विषयमे तँ ठक्कन बाबूकेँ बुझले छलनि । अतः ओ एहि बातकेँ ध्यानमे रखबाक अनुरोध करैत ओतयसँ विदा भेलाह ।

पाँच

बबुआ झा संध्याकाल पहसरा पहुँचि गेलाह । जहिना ओतय पहुँचलाह, ओ हरखू झा आ मोहन कामतिक खोज कयलथिन । हरखू झासँ तत्काले भेँट भऽ गेलनि । हरखू झा पुछलथिन—'अहाँ तँ बड़ जल्दी बनैली आ सौरियासँ घुरिकऽ चल अयलहुँ !'

—'काज भऽ गेल । बनैलीमे एक राति रहलहुँ आ आइ घुरिकऽ चल अयलहुँ । हमर गामक ठक्कन बाबू ओहि दरबारमे रहैत छथि । खूब खातिर कयलनि । हुनका अहाँ चिन्हैत छिअनि ?' बबुआ झा कहलथिन ।

हरखू—'किएक नहि चिन्हबनि ? जमीन्दार परमानन्द चौधरीक ओ खास दरबारी छथिन आ नीक लोक छथि ।'

एतबहिमे मोहन कामति सेहो आबि गेलाह । हुनकहु ओ यात्राक वृत्तान्त सुनौलथिन ।

मोहन—'सौरिया किएक नहि गेलहुँ ?'

बबुआ—'सौरियाक वरक आ घरक विषयमे सब पता लागि गेल । एहि वर्ष हुनका लोकनिकेँ प्रायः विवाह कर्तव्य नहि छनि । ई सूचना हमरा बनैलियेमे भेटि गेल आ विश्वसनीय छने । तखन ओतय कथी लेल जइतहुँ ? ओना, सौरियाक घर-वर सेहो उत्तम । बेस, आब अहाँ हुनू गोटे छी । हमरा ई पता लगाकऽ कहू जे महाराजकुमार इन्द्रनारायणक विवाह एहि शुद्धमे करयबाक विचार छैक की नहि ।'

हरखू—'हँ, अही शुद्धमे हिनकर विवाह हेतनि । अहाँ गेलहुँ, तकर बादे तीनटा कथा आयल छलैक । महाराजो देवानजीकेँ कहैत रहथिन जे एहि वर्ष महाराजकुमारक विवाह करा देबनि । अपना दऽ कहैत छलथिन जे आब बूढ़ भेलहुँ । महाराजकुमार विवाहक योग्य भऽ गेलाह । एकटा सुयोग्य कन्या देखि कथा स्थिर कऽ ली ।'

बबुआ झा—'ई तँ अत्युत्तम । आब हमरा अहाँ लोकनि ई परामर्श दिअऽ जे हम वैयाकरणजीक कन्याक कथा प्रस्तुत कऽ दिअनि ।'

हरखू अपन विचार देलथिन—'राति।खन अहाँ दरबारमे उपस्थित भऽ महाराजक भेँट करिऔन आ हुनका कहिऔन जे यदि आज्ञा होयत तँ इसहपुरक वैयाकरण मनबोध झाक कन्याक कथा विधिवत् पत्राभ्यन्तर प्रस्तुत करी । अहाँ संध्यावंदनक उपरान्त राजसभामे आबि जायब ।'

संध्याकाल बबुआ झा दरबारमे पहुँचलाह । हरखू महाराजकेँ कहलथिन जे बबुआ झा हुनक दर्शन चाहैत छथि । हुनका किछु गप्पो छनि । महाराज हुनका तुरन्त बजयबाक आदेश देलथिन । अभिवादनोपरान्त बबुआ झा आ महाराजक बीच वार्त्तालाप प्रारंभ भेलनि ।

महाराज जिज्ञासा कयलथिन—'अहाँकेँ ड्योढ़ीमे कोनो कष्ट तँ नहि भेल ?'

बबुआ झा उत्साहपूर्वक कहऽ लगलाह—'महाराज, कष्ट किएक हेतैक ? एतय आनन्दपूर्वक रहलहुँ । एतय मिथिलाक विशुद्ध परिपाटी देखिकऽ तँ गद्‌गद् छी । व्यवहारोमे आत्मीयतासँ मुग्ध छी ।' कनेक काल गम्भीर होइत पुनः कहऽ लगलाह—'महाराज, हम एक बातक आज्ञा चाहैत छी । इसहपुरक वैयाकरण प० मनबोध झाकेँ एक विदुषी कन्या छथिन । मनबोध झाक

पिता भेलथिन गोपीनाथ झा जे महामहोपाध्याय महाराज शुभंकर ठाकुरक दौहित्र छलाह् । मनबोध झाक विवाह नहुआर ग्राम निवासी पचौली मूलक वड़िग्राम शाखाक रामेश्वर झाक कन्यासँ छनि । मनबोध झा माण्डर कुलक रजौरा शाखाक छथि । महाराजकुमारक प्रति ओ कथा उपस्थित करब चाहैत छथि । मनबोध झा अपने अथवा अपन प्रतिनिधि द्वारा ई कथा पन्द्रह् दिनुक अभ्यन्तर प्रस्तुत करताह् । अतः कथा प्रस्तुत करबाक आदेश चाहैत छी ।'

—'महाराजकुमारक विवाह तँ एहि शुद्धमे हेतनि । आरो कथा सभ आयल छैक । अहूँ वैयाकरणजीकेँ कथा प्रस्तुत करबालेल कहि तकैत छियनि । मासाभ्यन्तर विवाहपर निर्णय लेल जेतैक ।' महाराज उत्तर देलथिन ।

बबुआ झा विनम्रतापूर्वक धन्यवादक स्वरमे कहलथिन—'महाराज, डयोढ़ीमे बड़ सुखसँ रहलहुँ । भगवतीक इच्छा हेतनि तँ आयब-जायब लागले रहतैक । हम काल्हि भिनसर ग्राम लेल प्रस्थान करब आ पक्षाभ्यन्तर दरबारमे कथा प्रस्तुत करबाक हेतु उपस्थित होयब ।'

किछुए कालमे सभा समाप्त भेल । सभासद सीताराम झाकेँ बजाकऽ महाराज कहलथिन जे बबुआ झाकेँ एक जोड़ धोती आ इसहपुरसँ पहुलरा आवागमनक खर्च दऽ देल जाइन । हुनका भिनसरे चल जयबाक छनि ।

छओ

सुलतानपुर परगनाक सीमा-विवादक फैसला आइ होयबा लेल छैक । पूर्णियाक फौजदार दुनू तरफसँ—जमींदार परमानन्द चौधरी आ महाराज रामचन्द्रनारायणसँ—अपन-अपन दावा पेश करबा लेल आजुक तिथि निश्चित कयने छथिन ।

पूर्णियाक फौजदार शेरअली खाँक दरबार लागल छनि । हुनक देवान, सिपहसालार तथा अन्यान्य अधिकारी सभ उपस्थित छथि । महाराज रामचन्द्रनारायण राय अपन देवान जानकीराम सिंहक संगे तथा परमानन्द चौधरी अपन पुत्र दुलार चौधरी आ अपन देवानक संग उपस्थित छथि ।

शेरअली खाँ—'परगना तीराखारिदह आ परगना सुलतानपुरक सीमा-संबंधी कोन विवाद छैक ?'

परमानन्द चौधरीक देवान—'हुजूर, कोनो विवाद नहि छैक, मुदा महाराज रामचन्द्रनारायण रायक देवान कहैत छथि जे परगना तीराखारिदहक सीमा पहिलुका सीमाक अतिक्रमण कऽकऽ लगभग आधा कोस दक्षिण सुलतानपुर परगनामे आबि गेल अछि ।'

शेरअली खाँ—'आ मोरंगक राजाक कहब छनि जे जमींदार परमानन्द चौधरी तीराखारिदहक सीमाकेँ उत्तर दिस लगभग आधा कोस बढ़ा नेने छथि । एहि प्रकारेँ उत्तर दिस मोरंगक राजाक क्षेत्र आ दक्षिण दिस महाराज रामचन्द्रनारायणक परगनाक क्षेत्र, जमींदार परमानन्द चौधरीक दखलमे आबि गेल छनि ।'

देवान जानकीराम सिंह—'सरकार, ईह् बात छैक । सुलतानपुर परगनाक उत्तरबारि सीमापर जमींदार परमानन्द चौधरीक लठैत सभ रैयतिकेँ बेदखल कऽ देने छैक ।'

शेरअली खाँ—'परमानन्द चौधरी, अहाँ बाजू जे वस्तुस्थिति की छैक ?'

परमानन्द चौधरीक बदलामे हुनक पुत्र दुलार चौधरी उठलाह् आ प्रारम्भ कयलनि—'हमरा जहियासँ ई परगना भेटल अछि, एकर पैमाइश हम नहि करौने छी । हमरा कागजे द्वारा ई परगना भेटल अछि आ तहियेसँ हम सम्पूर्ण परगनापर दखलकार छी ।'

शेरअली खाँ—'कागजपर परगनाक कतबा रकबा लिखिकऽ देल गेल छल ?'

दुलार चौधरी—'हमरा एखन स्मरण नहि अछि ।'

शेरअली—'अपन देवानकेँ पुछिऔन ।'

दुलार चौधरी—'देवानजी, अहाँकेँ जानकारी हो तँ बुझबिऔन जे तीराखारिदह परगनाक रकबा कतबा छैक आ कतबा बनैलीक दखलमे छैक । फौजदार साहेबकेँ ई सूचना दिऔन ।'

देवान—'ओ कागज हमरा नहि भेटि रहल अछि ।'

शेरअली—'तखन ई सीमा-विवादक फैसला कोना होयत ?'

दुलार चौधरी—'सरकार, हमरा जनैत तँ कोनो विवादे नहि छैक । जेना जे दखलकार छथि, तेना रहथु ।'

शेरअली—'हमरा खुफियासँ सूचना भेटल अछि जे अहाँ तीराखारिदह परगनाक उत्तरी सीमासँ आधा कोस मोरंगमे आ दक्षिण सीमासँ सेहो आधा

कोस दक्षिण दिस सुलतानपुर परगनाक सीमाक अतिक्रमण कयने छिऐक। अहाँ लग परगनाक नक्शा अछि ?'

दुलार चौधरी—-एखन तँ उपलब्ध नहि अछि।'

शेरअली–'हम दुनू पक्षकेँ कागज-पत्र आ सबूत लऽकऽ मोकदमाक फैसलाक हेतु उपस्थित होयबाक सूचना पठौने छलहुँ। एहन स्थितिमे कागज-पत्र लऽकऽ अयबाक छल। मुर्शिदाबादक सूबेदारक ओहिठामसँ हमरा आदेश आयल अछि जे अविलम्ब सीमा-विवादक फैसला भऽ जाय। अहाँ लग तीरा-खारिदह परगनाक नक्शा नहि अछि मुदा हमरा लग अछि। अहाँ देखू। एकर रक्षा सेहो लिखल छैक। मोरंगक राजाक जतबा जमीन अहाँ दखल कयने छिऐक से लाल रंगसँ नक्शाक उत्तर सरहदपर रंगायल गेल छैक आ दक्षिण सरहदपर जतबा परगना सुलतानपुरक क्षेत्र अहाँ अपन दखलमे कयने छिऐक से कारी रंगमे रंगायल छैक। हमरा लग अहाँ जतबा राजस्व जमा करैत छी ताहिसँ बहुत अधिक जमीन अहाँ अपन कब्जामे रखने छी।'

दुलार सिंह—-'हम आब एकर नापी करायब।'

शेरअली कनेक रुक्ष स्वरमे बजलाह–'एहि विवादमे दु जमींदारे नहि छथि, नेपालक मोरंगक राजा सेहो छथि। एहि तरहेँ ई दु देशक बीच सेहो भगड़ा पैदा करैत छैक। अहाँ एहि भगड़ाक आइ तसफीया करू। हम खुद परगना तीराखारिदहक पैमाइश करौने छी आ जतबा भूमिपर दुनू दिश उत्तर आ दक्षिणमे अहाँ कब्जा कयने छिऐक तकरहु नपबौने छी। एहिमे कतहु कोनो गलती नहि छैक। अहाँक परगनाक उत्तर आ दक्षिण सीमापर सखुआ आ सागुआनक गाछ सभ लागल छलैक। अहाँ हालहिमे ओकरा कटने छिऐक। देवानजी, अहाँ की सरजमीन देखने छिऐक ? ने अहाँकेँ कागज अछि आ ने सरजमीने देखने छिऐक ?'

शेरअलीक कथन सुनि सौंसे दरबार स्तब्ध छल।

परमानन्द चौधरीक देवान सकपकाइत बजलाह—'हँ, सरजमीन देखने छिऐक।'

शेरअली—-'सरहद एखनहुँ बरले छैक आ सखुआ आ सागुआनक भुट्ठ सभ लगले छैक। सिम्मरि आ ताड़क पाँती सभ पहिलुका सीमापर एखनहुँ ठाढ़े छैक।'

परमानन्द चौधरीक देवान—'हँ, सरकार यैह स्थिति छैक।'

शेरअली दुलार चौधरी दिस ताकिकऽ पुछलथिन–'अहाँकेँ आब की कहबाक अछि ?'

—'सरकारक जे आदेश हेतैक तकर हम पालन करब।' दुलार चौधरीकेँ ननुनच करबाक साहस नहि रहि गेल छलनि।

शेरअली–'हमर आदेश अछि जे अहाँ मोरंगक राजाक आ महाराज रामचन्द्र नारायणक दखल कयल जमीनकेँ आइए, एखने छोड़ि दिअनु। आब जँ पुनः सीमा-सरहदपर अकारण विवाद उपस्थित करब तँ हमरा आमिल आ फौज-दारक हैसियतसँ सख्त कारवाइ करय पड़त। सूबेदार एहि सीमाक झगड़ासँ बहुत नाराज छथि। आब एकर पुनरावृत्ति नहि होयबाक चाही।'

दरबार समाप्त भेल। लिखित आदेश सेहो दुनू जमींदारकेँ देल गेलनि। मोरंगक राजाकेँ सेहो हुनक अवक्रमित भूमि छोड़बाक सूचना दऽ देल गेलनि। महाराज रामचन्द्र बहुत प्रसन्न छलाह।

सात

बबुआ झा आइ सोलहम दिन पूर्णियासँ घुरिकऽ अपन गाम आबि गेलाह। भिनसरे ओ वैयाकरण मनबोध झाक ओहिठाम उपस्थित भेलाह।

मनबोध झा—'कुशल-मंगल कहू। कखन ऐलहुँ ?'

बबुआ झा—-'संध्याकाल ऐलहुँ, मुदा ततेक थाकल छलहुँ जे अपनेक भेँट करबाक साहस नहि भेल।'

मनबोध—-'कतय-कतय गेलहुँ ?'

बबुआ—-'पहसरा डयोढ़ी आ बनैली डयोढ़ी गेलहुँ। सोना–सौरियाक बरक सूचना सभ सेहो प्राप्त कयलहुँ। एखन पूर्णिया जिलाक मैथिल रजबाड़ा सभमे इन्दुमतीक योग्य चारिटा वर छथि—पहसराक महाराज रामचन्द्र नारायण रायक पुत्र महाराजकुमार इन्द्रनारायण राय हमरा बनैत सर्वोत्तम वर छथि। दोसर योग्य वर छथि जमींदार परमानन्द चौधरीक बालक दुलार चौधरी। हिनक अभिभावक एखन हिनक विवाह करबाक लेल उद्यत नहि छथिन। दू टा वर सौरियामे छथि—राय राजेन्द्रनारायण ओ राय महेन्द्रनारायण। मुदा हिनका लोकनिक वयस किछु कम छनि। ई दुनू

सहोदर भाइ छथि । हिनको लोकनिक विवाह एहि ऋतुमे भरिसक नहि हेतनि ।'

मनबोध—'बेस, हमरा सभटा वरक परिचय आ वरगुण बुझाउ ।' एहि बीच मनबोध झाक स्त्री आ इन्दुमती सेहो केवाड़ लग ठाढ़ि भऽ बबुआ झा आ मनबोध झाक कथोपकथन सुनय लगलीह ।

बबुआ—'तँ सुनू ।'

मनबोध—'सर्वोत्तम जाहि वरकेँ कहैत छिऐक हुनक विषयमे हमरा विस्तारसँ कहू ।'

बबुआ—'पूर्णियाक महाराज रामचन्द्रनारायण राय सब तरहेँ सम्पन्न छथि । ओहि क्षेत्रमे हुनक जोड़क जमींदार नहि छथि । सम्पूर्ण पूर्णिया जिलाक पाँच भागमे दू भागपर हुनक जमींदारी पसरल छनि ।'

मनबोध—'हुनक वंशक विषयमे कहू ।'

बबुआ—'महाराज रामचन्द्रक मूल भेलनि सुरगण लोआम । पञ्जी साहित्यमे एहि मूलक बीजी पुरुष छथि महामहोपाध्याय उमापति । एहि वंशमे प्राणपति नामक व्यक्ति भेलाह जनिक पुत्र भेलाह चौधरी उपाधि सहित समर सिंह । हिनकापर लक्ष्मीक विशेष कृपा भेलनि । समर सिंहकेँ दू विवाह । दुनू पक्षमे एक-एक बालक । प्रथम पक्षमे महाराज कृष्णदेव आ द्वितीय पक्षमे राजा भगीरथ जनिका जीविकाक लेल राजक एक अंश, कटिहार परगना देल गेलनि । राजा भगीरथ सौरियामे अपन ड्योढ़ी बनाकऽ रहय लगलाह । महाराज कृष्णदेवक समयमे राज्यक खूब वृद्धि भेलैक आ हुनका सामाजिक प्रतिष्ठा सेहो खूब भेटलनि । हुनक बालक महाराज विश्वनाथ बड़ प्रतापी भेलाह आ सम्बन्धादि श्रोत्रियकुलमे करय लगलाह । महाराज विश्वनाथक बालक महाराज वीरनारायण सेहो उत्तम कोटिक शासक भेलाह । कहल जाइत अछि जे ओही समयसँ हिनका लोकनिक नामक संग 'नारायण' जुटय लागल । ई लोकनि समर सिंहक समयसँ अररिया अंचलमे पहसरामे ड्योढ़ी बनाकऽ रहय लगलाह । महाराज वीरनारायण किछु वर्ष धरि राज्य कयलाक उपरान्त अपन पुत्र नरनारायणक राज्याभिषेक कराय संन्यास ग्रहण कयलनि आ किछु दिन बाद स्वर्गीय भेलाह । महाराज नरनारायणक पुत्र महाराज रामचन्द्रनारायण राय भेलाह । वर्त्तमानमे वैह महाराज छथि आ अपन पूर्वज समर सिंह जकाँ प्रतापी बुझल जाइत छथि ।'

मनबोध—'वंशक विषयमे तँ अहाँ खूब अनुसंधान कयलहुँ । एहन विवरण तँ कोनो पंजीकारे दऽ सकैत छलाह ।'

बबुआ—'हँ, तँ कहैत छलहुँ जे हुनक विषयमे हमरा जे पता लागल ताहि सूत्रेँ हम कहि सकैत छी जे ओ प्रथम कोटिक प्रजापालक छथि । ओ प्रजाक परिस्थितिक पता लगबय लेल घोड़ापर समय-समयपर गाम-गाम घूमैत छथि आ प्रजाक कष्टक निवारणक प्रयास करैत छथि । एहि प्रतापी महाराजक एकमात्र पुत्र छथिन महाराजकुमार इन्द्रनारायण राय । एही वरक प्रसंग हम कहने छी जे ओ सर्वथा अहाँक कन्याक अनुरूप ।'

एतबा सुनितहि इन्दुमती पड़ेलीह । हुनक माता ओतहि ठाढ़ि रहलीह आ रुचिपूर्वक अग्रिम संवादक अपेक्षा करय लगलीह । बबुआ झा पुनः प्रारम्भ कयलनि—'वर स्वस्थ, सुन्दर, सतर्क एवं मृदुभाषी । हम तँ पहसरा ड्योढ़ीमे राजक एक सामान्य अतिथि छलहुँ मुदा हमरा देखिते ओ पुछलनि जे हमरा रहबामे कोनो असौकर्य तँ नहि भेल । महाराजकुमार टहलैत छलाह आ हमरा हठात् भेँट भऽ गेल । हुनक ओहदाक दोसर कोनो लोक रहैत तँ संभवतः टोकबो नहि करैत ।'

मनबोध—'आब शेष तीनू वरक विषयमे कहू ।'

बबुआ—'दोसर वर छथि दुलार चौधरी । ओ बनैलीक जमींदार परमानन्द चौधरीक पुत्र छथि । लक्ष्मीक हुनकापर खूब कृपा छनि । ओ शक्तिशाली सेहो छथि । कोनो रजवाड़ासँ ओ दबिकऽ नहि रहैत छथि । दिन-प्रति-दिन अपन सम्पत्तिक विस्तार कयने जाइत छथि । पिता आ अपन पितामह देवानन्द चौधरीक अनुरूप कर्मरता छनि आ परोपट्टामे धाख छनि । वैह देवानन्द चौधरी तीराखारिदह आ परगना असजाक उपार्जन कयलनि । ई दुनू परगना हुनका महाराज रामचन्द्रनारायण राय उपहारस्वरूप देने छलथिन ।'

मनबोध—'एहन कोन काज देवानन्द चौधरी कयने छलाह जे उपहारस्वरूप हुनका दू परगना देल गेलनि ?'

बबुआ—'हमरा पता लागल जे पूर्णियाक फौजदार, महाराज रामचन्द्रपर कोनो कारणेँ नाराज भऽ गेल छलथिन । मुदा देवानन्द चौधरीक प्रयाससँ दुनू गोटाक बीच मधुर सम्बन्ध स्थापित भऽ गेल । एहिसँ प्रसन्न भऽ महाराज रामचन्द्रनारायण हुनका दू परगना पुरस्कारस्वरूप देलथिन । देवानन्दकेँ दू पुत्र छलथिन—परमानन्द आ मानिकनन्दन । ओ अपन दुनू पुत्रक बीच एहि दुनू परगनाकेँ बाँटि देलथिन । तीराखारिदह परगना परमानन्दक हिस्सामे पड़लनि आ असजा परगना मानिकनन्दनक हिस्सामे । एखन परमानन्द अपन जमींदारीसँ दूर हवेली परगनाक बनैली ग्राममे अपन

ड्योढ़ी बनाकऽ अपन पुत्र दुलार चौधरीक संग रहि रहल छथि। दुलार चौधरीसँ छोट हुनका एकटा आरो बेटा छलथिन मुदा हुनक देहान्त भऽ गेलनि। दुलार चौधरीक एहि युद्धमे विवाह हेतनि, ताहिमे हमरा सन्देह बुझि पड़ैत अछि। परमानन्द चौधरीक ओहिठाम जे हमरा पता लागल ताहिसँ हम एहि निष्कर्षपर आयल छी जे एहि युद्धमे ओ दुलार चौधरीक विवाह नहि करौताह।'

मनबोध—'परमानन्द चौधरी तीरभुक्तिदह परगनामे ड्योढ़ी नहि बनाकऽ बनैली कोना आबि गेलाह ?'

बबुआ—'हमहूँ एकर अनुसंधान कयल। हमरा पता लागल जे देवानन्दक पिता आ परमानन्दक पितामह छलथिन विश्वेश्वर झा ओ पहुसरा ड्योढ़ीक अपन समकालीन महारानीक खूब सेवा कयलथिन। एहिपर प्रसन्न भऽ ओ महारानी विश्वेश्वरका हुनका 'मुँहदेखना'मे बनैली ग्राम देलथिन। तहियेसँ ओ बनैलीमे रहैत छथि।'

मनबोध—'तेसर आ चारिम वर ?'

बबुआ—'तेसर आ चारिम वरक वंश आ धन-वित्तक स्थितिक विषयमे एखनहि कहि सुनौलहुँ। ओ लोकनि तीरिया ड्योढ़ीमे निवास करैत छथि। संस्कृत आ मिथिलाभाषाक ई परिवार खूब प्रेमी अछि। मुदा दुनू वरक उमेर हमरा किछु कम बुझि पड़ल। आब अहाँ निश्चय करू जे कोन वर करब।'

मनबोध—'अहाँ हमरा ई कहू जे महाराजकुमार कोन तरहेँ हुनर जमाय भऽ सकैत छथि ?'

बबुआ—'आब कथा प्रस्तुत करबाक चाही। किन्तु ताहूसँ पहिने अधिकार लका जी। हम महाराज रामचन्द्रनारायण रायकेँ कहि आयल छियनि जे हम पक्षाभ्यन्तर विधिवत् कथा प्रस्तुत करबाक हेतु पुनः अपनेक सेवामे उपस्थित होयब।'

मनबोध—'एतबा बात अहाँ कऽ नेने छी ?'

बबुआ—'हम काज करय गेल छलहुँ की पहुनाइ करय गेल ?'

मनबोध—'कोना एहि काजमे प्रवृत्त भेल जाय ? अहाँकेँ पहुसरा जाय पड़त। अहाँ नहि करब तँ के करत ? हँ, एक बात तँ बिसरिये गेलहुँ। अहाँकेँ एहि यात्रामे जे खर्च भेल अछि से हमरासँ लऽ लिअऽ।'

बबुआ—'हमरा किछु खर्च नहि भेल।'

मनबोध—'कीआ ई विश्वसनीय गप्प ?'

बबुआ—'हमहुँ अहाँकेँ ई गप्प कहय लेल बिसरि गेलहुँ जे जखन हम पहुसरा ड्योढ़ीसँ विदा होमय लगलहुँ तँ हमरा एक जोड़ धोती आ मार्गव्यय विदाइ भेटल। हम तँ महाराजक सम्बन्धियो नहि छियनि मुदा ओ उदारतापूर्वक हमर विदाइ कयलनि। अहाँकेँ हम फूसि नहि कहब।'

मनबोध—'एहि विषयमे आब हमरा किछु कहबाक नहि अछि। अहाँ तँ अधिकऽ हमर अपेक्षित भै छथि ? आब अगिला बात अहाँक हाथमे अछि।'

बबुआ—'कथा प्रस्तुत करबाक हेतु हम पहुसरा जायब मुदा एक गोटाकेँ हमर संग लगा दी। विवाहक दिन प्रारंभ होयबामे एखन देरी छैक। एक सप्ताह बाद हम पहुसरा जयबा लेल तैयार छी।'

मनबोध—'एक सप्ताह बितबामे कतबा देरी लगतैक ? दोसर ककरा संग लगा दी ?'

बबुआ—'अहाँ अपन ससुर तहुआरक रानेश्वर भाकेँ संग लगा दिअऽ।'

मनबोध—'मुदा ओ तँ बड़ वृद्ध भऽ गेल छथि। पचरेँ सय कोस जायब हुनका पार लगतनि ?'

बबुआ—'तखन अपन सार छत्रदत्त भाकेँ संग लगा दिअऽ।'

मनबोध—'बेस, कालिह भिनसर हम हुनका समाद पठबैत छियनि।

आठ

आइ भोरेभोर पाँच-सात टा इन्दुमतीक सखी-बहिनपा सभ इन्दुमतीक ओहि ठाम पहुँचलीह। हुनक मायकेँ एकगोटे कहलथिन—'काकी, इन्दुमतीक विवाहो निश्चय कऽ लेलिऐक आ हमरा लोकनिकेँ खबरियो नहि ?'

—'के कहलक जे इन्दुमतीक विवाहक निश्चय कऽ लेलिऐक ?'

—'हमरा लोकनिकेँ तँ गामेपर सुनबामे आयल जे कोनो रजवाड़ामे हुनक विवाह ठीक भऽ गेल छनि।'

—'नहि, नहि, एखन कतहु विवाह स्थिर नहि भेल छनि।'

—'अहाँ लोकनि मनाउ जे कोनो रजवाड़ाहिमे इन्दुमतीक विवाह ठीक भऽ जाइत।'

—'मुदा, अहाँ सभ बात चुप्पे-चुप्प किएक रखने छिऐक ?'

—'ककरासँ ई बात उड़ल जे इन्दुमतीक विवाह ठीक भऽ गेलनि ?'

—'लक्ष्मी काल्हि संध्याकाल बबुआ काकाक आङन दिस गेलि छलीह। ओतयसँ आबिकऽ ओ हमरा लोकनिकेँ कहलनि जे पूर्णिया जिलाने एकटा महाराजकुमार छथि, हुनकहिसँ इन्दुमतीक कथा लागि रहल छनि।'

—'नहि, ई सत्य नहि थिक। ई भऽ सकैत अछि जे कोनो बरक प्रति कथा उपस्थित कएल जाए, मुदा जाबत कोनो बात आगाँ नहि बढ़ैत छैक तावत कोना कहल जाय जे वर ठीक भऽ गेलैक ?'

—'काकी, इन्दुमती कतय छथि ?'

—'ओ तँ एखन अहीं ठाम छलीह। अहाँ लोकनिक गप्प-सप्प सुनि लजा कऽ कोनो दिस चल गेलि हेतीह।'

तखन एक सखी पछबरिया घरसँ इन्दुमतीक हाथ पकड़ने हुनका बाहर अनलकनि। आब काकीकेँ छोड़ि सभ इन्दुमतीपर लागि गेलीह। काकी ओतयसँ उठि दोसर दिस चल गेलीह।

एक सखी कहलथिन—'इन्दुमती, एकसँ एक नीक चारित्र्य बरकेँ स्वयं बबुआ काका देखलथिन अछि आ ओहिमे जे सर्वोत्तम, हुनकासँ अहाँक विवाह भऽ रहल अछि। हमरा लोकनिसँ एहि बातकेँ किएक नुकौने छी ?'

सरस्वती कहलथिन—'हिनका डर होइत छनि जे चित्रलेखा जेकाँ ओ वर छीनि लेथि।' चित्रलेखहुक कथा सभ लागि रहल छनि।

लक्ष्मी बाजि उठलीह—'हम बबुआ काकाक आङनमे अपने काने सुनलहुँ जे इन्दुमतीक विवाह महाराज रामचन्द्रनारायण रायक पुत्र महाराजकुमार इन्द्रनारायणसँ भऽ रहल छनि। आब इन्दुमती कहथि जे की सत्त आ की मिथ्या ?'

इन्दुमती—'अहाँ सभ बात गढ़ि-गढ़िकऽ कतयसँ अनने छी ? की हमरासँ दोसर बात लऽकऽ चौल नहि कऽ सकैत छी ?'

—'दोसर बात सुनबामे एखन अहाँकेँ मोन लागत ? एहिसँ रस भरल आरो कोनो बात भऽ सकैत छैक ? लक्ष्मी हमरा सभमे सबसँ तेज अछि। वैह एहि बातकेँ उड़ाओलक। ओ जँ नहि रहितथि तँ संभवतः विवाहेक समयमे

हमरा लोकनि बुझितिऐक जे अहाँक विवाह महाराजकुमारसँ भऽ रहल अछि। विवाहक समयमे हुनकासँ तँ हमरा लोकनिकेँ भेंट होएबे करत।'

इन्दुमती—'ककरासँ ई बात सभ उड़ाकऽ अहाँ सभ लऽ अनने छी ?'

– 'अहाँ हमरा लोकनिकेँ जुनि कहू मुदा हमरा सभकेँ ईहो पता अछि जे बरक उमेर उनैसम-बीसम छनि। गोर वर्ण, दैघ-दैघ आँखि, ठाढ़ नाक, प्रशस्त वक्षस्थल, उन्नत ललाट आ मृदुभाषी।'

—'इन्दुमतीक आँखि जेंघ की बरक आँखि जेंघ ?'

—'बरक अयलाहिपर एकर फड़िछौट होयत।' एक सखी समाधान देलथिन।

—'इन्दुमतीकेँ आब एहि फूसक घरमे कोना रहल जयतनि ? ओ तँ आब पचुरा डयोढ़ीक भव्य राजमहलमे रहतीह।'

—'राजमहलमे तँ रहबे करतीह मुदा हमरा लोकनिकेँ नै बिसरि जाथि !' दोसर सखी कहलथिन।

बहुत काल धरि सखी लोकनि इन्दुमतीक संग हँसी-ठट्ठा करैत रहलथिन। इन्दुमती मनेमन बरगुण सुनि अत्यन्त प्रसन्न छलीह आ माँ पार्वतीसँ प्रार्थना करैत छलीह जे महाराजकुमारेसँ हुनक विवाह होइन।

सब सखीसँ हुनक भाव भलफान करीतथिन आ स्पष्ट रूपेँ कहलथिन जे एखन कतहु कथा स्थिर नहि भेल छैक। मुदा आब तँ इन्दुमती विवाहक योग्य भऽ गेलि छथि। हमरा लोकनि यथाशीघ्र हिनक विवाह करा दिअनि, एहि उद्देश्यसँ वर ताकि रहल छी। सखी सभकेँ मनःपूत नहि भेलनि जे कथा स्थिर नहि भेल छैक। ओ लोकनि सोचथि जे जँ कथा स्थिर नहि भेल छैक तँ बरक नाम, गुण आदिक चर्चा कोना भेलैक ?'

एक सखी बजलीह—'अहिना नाम-गुण वर्णन-जोगत बरक प्राप्ति भऽ जाइत छैक। भगवानहुक प्राप्ति तँ एहिना होइत छैक।'

दोसर सखी बजलीह—'बबुआ काका काल्हिए पूर्णियासँ आयल छथि आ तँ हुनक आङनसँ ई बात पसरल अछि। एहिमे तँ अवश्य किछु तथ्य छैक। दू-तीन टा आरो बरक नाम सुनलिऐ मुदा विशेष जोर महाराजकुमारे पर छैक।'

सब सखी जाइत काल इन्दुमतीकेँ उपदेश देलथिन जे महादेव आ पार्वतीक ध्यान करू। ओही बरसँ विवाह भऽ जायत जनिका अहाँ चाहैत छी।

सभी नम सीताक प्रसंग सुनौलथिन जे ओ गिरिराज कुमारीक कृपाहिँसँ रामचन्द्र सन वर प्राप्त कयलनि। सीताक पुष्पाहिक कारणेँ अवधसँ मिथिला आबि रामचन्द्रजी सीताकेँ वरण कयलनि। ओहि हिसाबेँ पूर्णिया ओ दरभंगासँ लगे छैक। इन्दुमतीक मन छलनि जे आरो किछु काल ई गप्प-सप्प चलैत मुदा सभकेँ अपन-अपन आङनमे काज छलनि आ तेँ सभ विदा होइत गेलीह।

नओ

मनबोध झा रातिमे अपन स्त्रीक संगे विवाहक संबंधमे विचार-विमर्श कयलनि। स्त्री कहलथिन जे ओ बचुआ झा आ अपन पतिक सभ गप्प सुनने छथि। हुनका महाराजकुमार खूब पसिन्न छथिन। हुनक विचार जे एहिमे पड़िकऽ कथा स्थिर कऽ लेल जाय। रुद्रदत्त झा पूर्व कार्यक्रमानुसार बड़ आरसँ आबि गेल छलाह। ओहो अपन बहिनसँ एहि कथाक संबंधमे विचार कयलनि। हिनको कहब छलनि जे महाराजकुमार इन्द्रनारायण रायक तुलनामे इन्दुमतीक योग्य कोनो वर हुनका लोकनिक सोझाँमे नहि छलनि। एहि प्रकारेँ सभक ई विचार भऽ गेल जे इन्दुमतीक कथा यथाशीघ्र प्रस्तुत कयल जाय।

आब ई लोकनि दलानपर आबिकऽ बैसलाह। बचुआ झाकेँ सेहो बजाओल गेलनि। मनबोध झा दरभंगा राजक संबंधी छलाह। तेँ हुनका मनमे छलनि जे बेटीक विवाह रजवाड़ामे भऽ जाइत तँ कन्या सभ दिन सुखी रहैत। बचुआ झाक तँ ई इच्छा छलनिहेँ जे इन्दुमतीकेँ सुयोग्य वर भेटनि मुदा संगहि ईहो स्वार्थ छलनि जे एहि प्रकारेँ हुनक रजवाड़ामे प्रवेश भऽ गेलापर हुनक सभ दुःख-दारिद्र्य पार भऽ जयतनि, ई हुनक विश्वास छलनि आ तेँ ओ एहि पक्षमे छलाह जे इन्दुमतीक विवाह पड़हराक महाराजकुमारसँ होइन। जहाँ धरि रुद्रदत्त झाक प्रश्न छल, ओ एतबे सोचैत छलाह जे भगिनीकेँ नीक उत्तम वर भेटय। जहाँ धरि हुनका बहिनोइसँ बात भेलनि, ताहिसँ ओ एहि निष्कर्षपर पहुँचल छलाह जे इन्दुमती आ महाराजकुमारक जोड़ी दुर्लभ होयत। महाराजकुमार सच्चरित्र छथि, मृदुभाषी छथि आ कर्मठ छथि, ई जानि रुद्रदत्त झा विशेष रूपेँ ओहि परक पक्षमे छलाह। कन्या सेहो विदुषी छलीह। ई वस्तुतः दुर्लभ जोड़ी होयत।

आब एतबे निश्चय करबाक छलनि जे रुद्रदत्त झा आ बचुआ झा कथा प्रस्तुत करबा लेल पड़हरा कहिया जाथि ओ कोना जाथि।

बचुआ झा कहलथिन—'सवारीक झंझटि छोड़ू, हम लोकनि तँ पूर्णियासँ पयरहि आयल छी आ पयरहि गेल छलहुँ। हुनका अनेक लोकसँ नीक जे हुनका लोकनि पैदले जाइ। ई की कोनो नव बात थिकैक? घोड़ा, पालकी, महफा आदि खर्चसाध्य सेहो छैक। बीचमे नदी-नाला। सवारी लऽ कऽ पार करबाक झंझटि, से फराक।'

मनबोधझा—'तखन निश्चय करु जे कोन दिन पड़हरा डयोढ़ीक लेल प्रस्थान करब।'

बचुआ—'काइ बृहस्पति थिक। परसू चलू, शुभस्य शीघ्रम्।'

मनबोध—'हम दिन ताकि देत छी। चारि-पाँच दिनक मध्य एतयसँ प्रस्थान करु। एहि बीच रुद्रदत्तझा पंजीकारक ओहिठाम लकड़ीर चल जाथि आ हुनकासँ अधिकार तका लेथि। कुमार बाबूक संग सेहो अधिकार देखा लेथि।'

रुद्रदत्तझा—'हम अधिकार तका कऽ परसू नहुआरे भेल दरभंगा आबि जाइत छी।'

मनबोध—'रुद्रदत्तझा, अहाँ हमर परिचय आ महाराजकुमार इन्द्रनारायणक परिचय लिखि लियऽ। ओना पंजीकारकेँ ई सभ परिचय बुझले छैनि तथापि अहाँ समदा स्पष्टतेँ लिखिकऽ लऽ जाउ। अहाँकेँ अपन परिचय तँ मन होयत? अहूँक परिचयक काज पड़तैक। तखन ई निश्चय भेल जे रुद्रदत्तझाक घुरलेँ अयलापर पड़हराक हेतु प्रस्थान कयल जेतैक।'

रुद्रदत्तझा अधिकार तका कऽ आबि गेलाह आ ओ लोकनि शुभ मुहूर्तमे पड़हराक लेल विदा भेलाह।

दस

महाराज रामचन्द्रनारायण रायक दरबार लागल अछि। आइ दरबारमे महाराजकुमारक विवाहक प्रसंगमे विचार होयत। एकर अतिरिक्त बनैलीक संगे सीमा-विवादक फैसलाक संबंधमे सेहो चर्चा होयत। बनैलीक

जमींदारक संगे सीमा-विवादमे महाराजक जीत भेलनि। फौजदार हुनके पक्षमे फैसला देलथिन। परगना मुलतानपुरक बेदखल जमीन परमानन्द चौधरीकेँ छोड़ि देबय पड़लनि। महाराज अपन अमात्य वर्गकेँ आ कर्मचारी वर्गकेँ विधिवत् एकर सूचना देबय चाहैत छथिन। ई सूचना दरबारहिमे देल जेतैक।

दरबारमे देवान जानकीराम सिंह, सभासद सीताराम झा, विभिन्न परगनाक जेठ रैयति लोकनि आ मान-दान कर्मचारीगण उपस्थित छथि। राजक प्रमुख अधिकारी लोकनि अग्रिम पंक्तिमे बैसल छलाह।

महाराज—'महाराजकुमार आब विवाहक योग्य भऽ गेलाह। आब यथाशीघ्र हुनक अनुरूप जाति-पाँजिक कन्या ताकि कऽ हुनक विवाह करा देल जाय।'

सीताराम झा—'महाराज, कथारम्भ सँ बहुत रास आवश्यक अछि आ एखन आबिए रहल अछि। मुख्यतः सोतिपुरेक कथा सभ अछि। ओहि सभमेसँ चीछि कऽ एकटा कथा स्थिर करब आ राकैत अछि। एहि विषयमे एकटा बात आरो ध्यातव्य अछि जे विवाहक तैयारीमे प्रायः मास दिन लागि जेतैक। ईहो निश्चित अछि जे सोतिपुरा बरियाती जयबामे छओ-सात दिन लागि जेतैक। सम्बन्धीवर्गकेँ, रजवाड़ा सभकेँ, राज्यक अधिकारी लोकनिकेँ, प्रजावर्गहुँ किछु लोककेँ बरियाती जयबाक हेतु कहल जयतनि। एकर अतिरिक्तो बहुत बात विचारणीय। लोक सभ ई नहि बुझलक अछि जे एहि सन्दर्भमे महाराजकुमारक विवाहक निश्चय कऽ लेल जेतैक। ई समाचार जखन पसरि जेतैक तँ आरो बाधा सभ आओत। एहि बीच पत्राहक पंजीकारकेँ तेहो सूचना देबाक छैक। तरकारक हुनका आदेश भऽ जाइत जे एखन ओ बसौलीमे किछु दिन बितावथि। हुनक घरो बसौलीसँ अधिक दूर नहि छनि। हुनकासँ समय-समयपर विवाह विषयक परामर्श आवश्यक हेतैक।'

विवाहक संदर्भमे एतबे बात भेलैक। उद्देश्य छलनि प्रजावर्गकेँ आ राजक कर्मचारी एवं अधिकारी लोकनिकेँ महाराजकुमारक विवाहक सूचना देब। महाराजकुमार दरबारमे उपस्थित नहि छलाह मुदा हुनका ज्ञात भऽ गेलनि जे शीघ्र हुनक विवाहक निश्चय कऽ लेल जायत।

दोसर बात जे दरबारमे सुनाओल गेल, से छल परगना मुलतानपुरक बेदखल जमीन हासिल करबाक विषयमे। परमानन्द चौधरी आ हुनक पुत्र दुलार चौधरी फौजदारक फैसलासँ अपनाकेँ अपमानित बुझैत छलाह। मुदा

ओ लोकनि की कऽ सकैत छलाह? परगना मुलतानपुरक किछु जेठ रैयति लोकनि सेहो सभामे उपस्थित छलाह। ओ लोकनि फौजदारक फैसलासँ अत्यन्त आनन्दित छलाह। महाराजक आदेशसँ देवान जानकीराम सिंह विस्तारपूर्वक परगना मुलतानपुरक विवादक विषयमे सुनौलथिन आ ईहो कहलथिन जे कोना फौजदार शेरअली खाँ एहि मामिलाक फैसला कयलनि। ओ सविस्तार कहलथिन जे परमानन्द चौधरी आ दुलार चौधरी तथा हुनक देवान कोना टाल-मटोल करैत रहलथिन मुदा फौजदार साहेबक कड़ा रुखि देखि हुनका लोकनिकेँ असल बात पर आबय पड़लनि। फौजदार दरबारहिमे अपन फैसला सुना देलथिन आ आदेश देलथिन जे जबर्दस्ती दखल कयल जमीनकेँ अविलम्ब परमानन्द चौधरी छोड़ि देथि। सम्पूर्ण सभा फौजदारक फैसला सुनि गद्‌गद छल।

एगारह

रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा सकुशल पहसरा पहुँचि गेलाह। पहसरा ओ लोकनि बसैठी होइत अयलाह। हरखू झा गामहिमे छलाह। हिनका लोकनिकेँ सोनहि ज्ञात भऽ गेलनि जे एहि सूत्रमे महाराजकुमारक विवाह करयबाक निर्णय लेल गेल छैक। रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा विचारलनि जे उत्तम यात्राक ई फल थिक। पहसरा पहुँचि राजक अतिथिशालामे ई लोकनि टिकलाह। हरखू झा महाराजकेँ सूचित कऽ देलथिन जे रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा इसहपुरक एकटा उत्तम कुल-शीलक कन्याक कथा लऽ कऽ आयल छथि। महाराज एहि सूचनासँ प्रसन्न भेलाह आ आदेश देलथिन जे अतिथिशालामे हुनका लोकनिकेँ सम्मानपूर्वक राखल जाइत आ भोजनादिक सुव्यवस्था कयल जाइत। रातिमे हुनका लोकनिसँ महाराज दरबारमे गप्प करताह। सीताराम झा आ पंजीकार सेहो एहि अवसरपर उपस्थित रहथि, सेहो आदेश दऽ देल गेलैक।

रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा यथासमय दरबारमे उपस्थित भेलाह। बबुआ झा महाराजकेँ सूचित कयलथिन—हम किछुए दिन पूर्व महाराजसँ आज्ञा लऽ कऽ गाम गेल छलहुँ आ आब मनबोध झाक सार रुद्रदत्त झा अपन भागिनीक कथा प्रस्तुत करबाक हेतु महाराजक सेवामे उपस्थित छथि। वैवाहिक मनबोध झा वृद्ध छथि आ तेँ ओ अपन सारकेँ कथा प्रस्तुत

कन्याक हेतु पठौने छथिन। रुद्रदत्त झा कन्याक अपन भाय छथिन। आब ओ श्रीमान से एहि संबंधमे निवेदन करताह।'

रुद्रदत्त—'महाराज, हम महाराजकुमारक प्रति अपन भगिनीक कथा लऽ कऽ श्रीमानक सेवामे उपस्थित भेल छी।'

महाराज—'पंजीकार, अहाँ हिनकासँ कन्याक परिचय प्राप्त करू। हमहूँ ओकरा सुनबै।'

पंजीकार—'अधिकार लेने छी?'

रुद्रदत्त—'अधिकार होयत।'

पंजीकार—'से तँ हम बाचब। अहाँ अपन परिचय सुनाउ।'

रुद्रदत्त—'इसहपुर निवासी वैयाकरण मनबोध झाक पिता भेलाह गोपीनाथ झा। गोपीनाथ झा दौहित्र भेलाह महामहोपाध्याय महाराज शुभंकर ठाकुरक आ ओ महामहोपाध्याय महाराज महेश ठाकुरक पुत्र भेलाह। मनबोध झाक विवाह नरउआर ग्रामवासी पचौली मूलक बड़िपाम शाखाक रामेश्वर झाक कन्यासँ छनि आ हम हुनके पुत्र रुद्रदत्त झा अर्थात् कन्याक भाइ थिकियनि। मनबोध झाक मूल छनि मड़रम रजौरा।'

महाराज—'पंजीकार! आब ई कहू जे परिचय केहन?'

पंजीकार—'महाराज, कन्याक परिचय अत्युत्तम।'

महाराज—'वर आ कनियामे ककर परिचय उत्तम?'

पंजीकार—'कनियाँक परिचय उत्तम।'

महाराज—'हमरा ई जानि प्रसन्नता भेल जे कनियाँक परिचय बेसी बढ़ियाँ। हम एहने कथा करय चाहैत छी।'

एकर बाद सीताराम झाक खोज होमय लागल। ओ सभामे उपस्थित छलाह।

महाराज—'सीताराम झा, आर कतबा कथा उपस्थित कयल गेल अछि?'

सीताराम—'विचार करबा योग्य सभमे चौदहटा कथा आयल अछि।'

महाराज—'कतय-कतय सँ कथा आयल अछि?'

सीताराम—'उजान, मंगरौनी, बिल्वपाड़, इसहपुर, सरिसब, पाहीं, सर्वसीमा, हाटी, दीप, लोहना, नाहर, कोइलख, गिद्धवाड़, भराम, ककरौल, आदि।'

महाराज—'अच्छा, ई बाजू जे एहिमे पाँजिक दृष्टिसँ सर्वोत्तम कोन कथा अछि?'

सीताराम—'महाराज! पंजीकार सभामे उपस्थित छथि आ हुनका हम सभ कथाक सूचना सभासँ पूर्वहि दऽ देने छियनि आ ओ जाँचियो लेने छथि। वैह श्रीमानक प्रश्नक उत्तर देबाक अधिकारी छथि।'

महाराज—'पंजीकार! अहाँ अपन मत दिअऽ।'

पंजीकार—'जतबा कथा उपस्थित भेल अछि पंजीक दृष्टिसँ इसहपुरक कथा सर्वोत्तम।'

महाराज—'सर्वोत्तम?'

पंजीकार—'हँ, महाराज!'

महाराज—'पंजीकार! रुद्रदत्त झा कहैत छथि जे ओ अधिकार लने छथि। अहाँ सेहो अधिकार देल लिअऽ।'

पंजीकार दुनू पक्षक परिचय एकटा कागज पर लिखलनि, किछु गणना कयलनि आ कहलन्हि जे अधिकार छी। एहि बीच सीताराम झा महाराज लग जाय, आस्ते-आस्ते जाहिसँ दरबारमे उपस्थित लोक नहि सुनि सकय, महाराजकेँ कन्याक शुचि-आचारक विषयमे सूचना देलथिन—'महाराज! हम एहि कन्याक शुचि-आचारक विषयमे अपन सम्बन्धीसँ पता लगा लेने छी। आइ जखनहि रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा पचौली पहुँचलाह, तखनहि हमरा भास भऽ गेल छल जे ई लोकनि आइ श्रीमानक समक्ष कथा उपस्थित करताह। हम अपन संबंधीसँ जे हालहिमे इसहपुरसँ आयल छथि कन्याक संबंधमे आवश्यक जानकारी कऽ लेने छी। कन्या विदुषी छथि। हुनका साहित्य, व्याकरण आ लीलावतीक नीक ज्ञान छनि। हुनक पिते हुनक गुरु छथिन। रूप-गुणमे ओ अद्वितीया छथि।'

महाराज—'सीताराम झा, अहाँ तँ बड़ काजक लोक छी। अहाँ हमरा परामर्श दिअऽ जे आब की कयल जाय।'

सीताराम झा—'हमरा ई बुझबामे आयल अछि जे श्रीमानकेँ अपन महाराजकुमार लेल मनबोध झाक कन्या पसिन्न अछि आ ई ठीको अछि। तेँ हमर परामर्श जे कथा स्वीकार कयल जाय आ सिद्धान्तक दिन निश्चय कऽ देल जाय। जतबा कथा आयल अछि ताहिमे एहन सर्वगुणसम्पन्ना कनियाँ दोसर नहि अछि। संबंधी वर्गक पतातसँ कन्या सभक शुचि-आचार आ योग्यताक पता लागि जाइत छैक।'

महाराज—'राजपंडित कतय छथि ?'

राजपंडित—'सरकार, हम उपस्थित छी ।'

महाराज—'सिद्धान्तक दिन साधू ।'

राजपंडित—'आगुक एगारहम दिन सिद्धान्तक एकटा उत्तम दिन छैक ।'

महाराज—'कन्या पक्षक लोक ओहिमे उपस्थित रहथि । संबंधी वर्गक लोक जे लग-पासमे छथि, हुनकहु एकर सूचना दऽ देल जाइन । मन्दिरपर सिद्धान्तक व्यवस्था कयल जाय ।'

एगारहम दिन मन्दिर पर सिद्धान्तक आयोजन कयल गेल । रसाढ़क पंजीकार सिद्धान्त-पत्र लिखलनि । सिद्धान्त-पत्र महाराज स्वयं अपना हाथें उठा कऽ कन्याक मामक हाथमे देलथिन । पंजीकारकें सिद्धान्त लिखाइमे एक हजार एक टाकाक अतिरिक्त धोती, चद्दरि आ पाग सिदाइमे भेटलनि ।

महाराज देवान जानकीराम सिंहकें आदेश देलथिन जे ओ विवाहक प्रबंधमे लागि जाथि आ प्रतिदिन संध्याकाल एहि काजक लेल हुनका सँ परामर्श करथि ।

बारह

एक दिन समाचार पसरल जे बंगालक नवाब मीरकासिम अंगरेजसँ हारि गेलाह आ युद्ध-भूमिसँ ओ कतय गेलाह तकर ककरो पता नहि भेटलैक । अपन राजधानी उठा कऽ ओ मुंगेर लऽ गेल छलाह । आधुनिक ढंगसँ ओ सेनाकें प्रशिक्षित कयने छलाह मुदा ओ युद्धमे पराजित भेलाह आ हुनक पराजयक बाद मीरजाफर बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक नवाब भेलाह । ई खबरि महाराज रामचन्द्र रायकें सेहो भेटलनि । हुनका एहि बातक चिन्ता भेलनि जे आब पूर्णियाक फौजदार सेहो बदलत । ओ केहन शासक होयत, हुनकासँ केहन संबंध राखत आ आनो जमींदार सभक संग ओकर केहन व्यवहार रहतैक, एहि सभपर ओ सोच-विचार करय लगलाह । किछुए दिनुक बाद पता लगलनि जे पूर्णियाक भूतपूर्व फौजदार सैफ खाँक पुत्र रोहिउद्दीन खाँकें पूर्णियाक फौजदार नियुक्त कयल गेल । हिनक पिताक महाराज रामचन्द्रनारायण रायकें नीक संबंध छलनि आ हुनका ई आशा छलनि जे हुनकासँ संबंध नीके रहतनि । एहि सोच-विचारमे महाराज

आ राजक अधिकारीगण रहथि, तखनहि फौजदारक ओतयसँ एकटा घोड़सवार एहि आशयक सूचना लऽ कऽ आयल जे बंगालक नवाब मीरजाफर खाँ रोहिउद्दीन खाँकें पूर्णियाक फौजदार नियुक्त कयने छथिन । काल्हि अपराह्नमे हुनका नव फौजदारक दरबारमे उपस्थित होयबाक छनि । महाराज सूचना पाबि ड्योढ़ीसँ प्रस्थान करबाक निर्णय लेलनि । महाराजक संग देवानजीक अतिरिक्त राजक किछु प्रमुख अधिकारी सेहो पालकी पर प्रस्थान कयलनि । ओही राति ओ लोकनि मोहनीगढ़ी पहुँचि गेलाह आ ओतहि विश्राम कयलनि ।

अपराह्नमे महाराजकें दरबारमे उपस्थितिक आमंत्रण छलनि । महाराजक संग आरो रजवाड़ाक जमींदार सभ पहुँचल छलाह । सो लोकनि नव फौजदारकें अपन-अपन स्थिति आ हैसियतिक अनुसार नजराना देलथिन । महाराज रामचन्द्रनारायण राय पाँच सय स्वर्णमुद्रा हुनका नजराना देलथिन । नव नवाब स्वयंहिसँ उठि हाथ पकड़ि कऽ महाराजकें आसन ग्रहण करौलथिन आ कहलथिन जे हमर पिता सैफ खाँक अहाँपर बहुत विश्वास छलनि आ हमरा विश्वास अछि जे ई वफादारी कायम रहत । महाराज हुनका सब तरहक सहयोगक आश्वासन देलथिन । जमींदारी आ कृषिक स्थितिक जानकारी लेब सेहो नव नवाबक ध्येय छलनि । महाराजक देवान जानकीराम सिंह हुनका सूचित कयलथिन जे पछिला किस्त धरि राजस्वक भुगतान कऽ देल गेल छैक । वर्षा समय पर भेलाक कारणें कृषिक स्थिति ठीक छैक आ अगिला किस्त सेहो ठीक समय पर जमा कऽ देल जेतैक । हुनका लोकनिक हेतु कहवा मँगाओल गेल आ बीड़ा पान आ इत्र आयल । एहि तरहें सत्कार कऽ कऽ नव नवाब हुनका लोकनिकें विदा कयलथिन ।

महाराज खूब प्रसन्न छलाह । वर्त्तमान फौजदार सँ हुनका अपन पिता सैफ खाँक समयसँ चिन्हैत छलथिन आ हिनक वफादारीक अपेक्षा रखैत छलथिन । देवान जानकीराम सिंह महाराजहिक संग विदा भेलाह । रस्तामे एहि विषयपर गप्प-सप्प करैत रहलाह ।

—'ई नीक भेल जे रोहिउद्दीन खाँ नव फौजदार भेलाह । हिनक स्वभावो उत्तम छनि आ आगुक व्यवहारसँ बूझि पड़ल जे नीके सम्बन्ध बनल रहत ।' महाराज बजलाह ।

एहिपर देवानजी कहऽ लगलथिन—'आब ई आवश्यक अछि जे राजस्वक अगिला किस्त ठीक समय पर जमा कऽ देल जाय । मुर्शिदाबादक नवाब दिससँ राजस्वक चुकतीक बड़ कड़ाइ छैक । अंगरेज जहियासँ पलासीक

पहुँमे चिन्तित भेल छथि, नवाबसँ दरँभंगा-नेपाल सीमा दिन-प्रतिदिन बढ़ले जाइत छैक। नवाबोक लेल कोनो उपाय नहि रहि गेल छैक। ओहो फौजदार आ 'आमिल' सभकेँ समय पर राजस्व चुकतीक हिदायत करैत रहैत छथिन। आब नवाबक ध्यान सदति राजस्वक चुकती पर रहैतनि। एतबे नहि। मूल 'जमा' पर जे 'अबवाब' अथवा अतिरिक्त शुल्क सभ बंगालक विभिन्न नवाब द्वारा लगाओल गेल छैक ओ अनिवार्यतया दैबतिये असूल हेतैक। ओहो हिसाब कराकेँ तैयार करय पड़तैक।'

पुनः महाराज कहलथिन– महाराज कुमारक विवाहक निमंत्रण समयपर नवाबकेँ सेहो पहुँचनाक चाही। अहाँ स्वयं निमंत्रण-पत्र लऽ कऽ जायब। एकटा काज आरो करय पड़त। फौजदारसँ एक चिट्ठी दरभंगाक फौजदारक नामे लिखऽ पड़त जे आइ-काल्हि बरियातीकेँ यात्रामे कोनो कष्ट होइन्ह तँ दरभंगाक फौजदार एहिमे मदति करथि। हुनक निवास बागमतीक तटपर किलाघाटमे छनि।'

एहिना गप-सप्प करैत ओ लोकनि मोहनभिट्टी पहुँचि गेलाह। संध्याकाल पुनः ओतयसँ विदा भऽ पहररातिधरि पहुसरा डयोढ़ी पहुँचि गेलाह।

तेरह

सिद्धान्तक काज सम्पादनार्थ दुइए गोटा नियोजित भऽ सकलाह– रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा। विवाहक दिन सेहो निश्चित भेल। आजुक एकैसम दिन विवाहक उत्तम दिन छैक। वेदीदेनिहरासँ द्विरागमन सेहो भऽ जेतैक।

आब रुद्रदत्त झा आ बबुआ झा चाहैत छलाह जे शीघ्रातिशीघ्र सिद्धान्त-पत्र लऽ कऽ गाम पहुँचि जाथि। महाराजक दिसमे पानकीक प्रबंध कऽ देल गेलनि।

दुनू गोटा पाँचम दिन सिद्धान्त-पत्र लऽ गाम पहुँचि गेलाह। हिनका लोकनिक पहुँचैक संग सम्पूर्ण गाममे ई समाचार पसरि गेल जे दुन्नूभाईक विवाह पहुसराक महाराजकुमार रुद्रनारायण रायक संग निश्चित भेल छनि। आजुक सोलहम दिन विवाहक दिन छैक। सिद्धान्त-पत्र गोसाउनिक सिरापर राखा देल गेल। गीत-नाद होमय लागल।

आब विवाह मात्र दस दिन रहि गेल छलनि। मनबोध बाबू लेन-देन-बजावोन करय लगलाह। पड़िछनि, लावा भुजयवाली, कहार लगयवाली,

विधकरी सब तँ चाही। अपन संबंधीवर्गक लोक सभकेँ बजबय लगलाह। एहि बीच महाराज डयोढ़ीमे कर्मचारीगण दुन्नूपुर घर बनयबाक हेतु, शामियाना आदि लगयबाक हेतु आ एक सप्ताह पहिनहि बरियातीक स्वागतार्थ सब प्रबंध करबाक हेतु पहुँचि गेलाह। मनबोध बाबूक घर-दरबज्जा, हाता सब साफ होमय लागल। हुनक परतीमे जमीन कम छलनि; तेँ विचार भेलैक जे सटले मैदानमे बरियाती लोकनिकेँ ठहरबाक हेतु एकटा नगरक निर्माण कयल जाय। शामियाना, तम्बू-कनात आदि गड़य लागल। महाराज रामचन्द्रनारायण रायक कुटुम्ब बनैक लेल, हुनक दरबारी सभक लेल तथा राजक हाकिम-हुक्काम सभक लेल ओहदाक हिसाबे रहबाक व्यवस्था भेल।

कार्यक्रम ई बनल जे विवाहक दिन बर लऽ कऽ बरियाती लोकनि संध्या काल गोधूलिक बेरमे पहुँचताह। विवाहोपरान्त भोजन करबाक बाद बरियाती लोकनि पहुसराक हेतु प्रस्थान करताह। संध्याकालसँ नृत्य-संगीत, आतिशबाजी आदिक कार्यक्रम रहत। सब किछु मनबोध बाबू दिससँ कयल जेतैक मुदा सब खर्च ओ प्रबंध राज द्वारा कयल जायत। कन्याक द्विरागमन सेहो वेदीदेतहिँ भऽ जेतैक। तेँ बर-बरियाती आ कन्याकेँ विदा करबाक काज मनबोध बाबूकेँ विवाहक रातिमे सम्पन्न करबाक छनि।

मिथिलामे आ विशेषतः सोतिपुरामे विवाहक बाद बरियाती रातिमे भोजनोपरान्त घरवैयाक ओहिठाम नहि रुकैत छैक। यदि मनबोध बाबू पर कभटा भार रहितनि तँ ओ कथमपि एकरा बहुत नहि कऽ सकितथि। मुदा ओ तँ महाराज रामचन्द्रनारायणक समधि भऽ रहल छलाह। तेँ महाराजक कर्मचारी लोकनि मनबोध बाबूक दिससँ सब काज कऽ रहल छलाह।

विवाहक तिथि आबि गेल। पूर्व निश्चित कार्यक्रमानुसार बर-बरियाती सभ संध्याकाल दुन्नूपुर पहुँचि गेलाह। बरियाती सभ सेहो बुढ़ि गेल छलाह। गामक सम्बन्धी वर्ग आ आनो वर्गक लोक सब बरियातीक स्वागतार्थ पंडालमे पहुँचि गेल छलाह। बरियाती लोकनि अपन निर्धारित निवास स्थान पर गेलाह। किन्तु विश्रामक उपरान्त संध्या-वन्दनसँ निवृत्त भऽ दल बना-बना पंडालमे एकत्र होइत गेलाह।

विवाहक कार्य आरंभ भेल आ डेढ़ बजे राति धरि विवाह सम्पन्न भऽ गेल। डेढ़ घंटा पूर्वहिँ विवाह समाप्त भऽ जाइत मुदा बीचमे अरबपहरा बढ़ि गेलाक कारणेँ विवाहक कार्य प्रायः डेढ़ घंटा स्थगित रहल।

बरियाती लोकनिक भोजनक उत्तम प्रबंध छल। नाना प्रकारक व्यंजन बनल मुदा मिथिलाक व्यवहारक अनुसार नहि बनलैक। ऊपरसँ सभकेँ पान देल गेलनि। दूध-दही आ नाना प्रकारक मिठाइक प्रबंध छल। अँचारें तँ नाना प्रकारक—आम, अमड़ा, करौना, धात्री आदि। सभटाँच सर्वोत्तम बनल छल। सभ बरियाती एक स्वरसँ भोजनक प्रशंसा कयलनि। भोजनक ई विन्यास पूर्वमे बहुत बरियाती देखनहुँ नहि छलाह। ई मनबोध बाबूक प्रबंध नहि छल, ई वस्तुतः महाराज रामचन्द्रनारायणक प्रबंध छलनि।

चौदह

निश्चित मुहूर्त्त पर कन्यासहित मनबोध बाबू सपत्नीक समधि ओ बरियाती लोकनिकेँ विदा कयलनि। बिहुर घंटाक व्यवहारक हेतु विवाहक अवसरपर महाराज नगरक निर्माण करा देने छलथिन। बरियाती लोकनि वर-वधू सहित निर्धारित सवारीपर बैसैत गेलाह। कार्यक्रमक अनुसार पाँचम दिन हुनका लोकनिकेँ संध्याकाल पहुसरा ड्योढ़ी पहुँचबाक छलनि।

महाराजकुमार इन्द्रनारायण अपन पत्नीक संग एक पालकीमे बैसाओल गेलाह। बरियातीसभक संग ड्योढ़ी पालकी पहुसराक हेतु विदा भेल। महाराजकुमारक आइए विवाह भेलनि आ द्विरागमन सेहो भऽ गेलनि। एखन धरि ओ अपन पत्नीकेँ नीकजकाँ देखनहुँ नहि छलाह। विवाहक काल तँ मुँह झाँपल रहलाक कारणेँ ओ मात्र हुनक रंग देखि सकल छलथिन मुदा आब पालकीमे दुहू गोटे छलाह। एखन चारि राति आ चारि दिन हुनका लोकनिकेँ पालकीमे बितयबाक छलनि। पहिल राति तँ दू अनचिन्हार व्यक्ति जकाँ बीति गेल।

दोसर दिन दिनुक प्रकाशमे महाराजकुमार इन्दुमतीकेँ देखलथिन। हुनक अपूर्व सौन्दर्यकेँ देखि ओ अत्यन्त आनन्दित छलाह। महाराजकुमारकेँ सेहो इन्दुमती भरि आँखि देखलनि। हुनक रूपक विषयमे पहिने ओ सखीसभसँ सुनने छलीह तेहने दिव्यरूप हुनक छलनि। किछुकाल तँ दुनू गोटामेसँ ककरो मुँहसँ कोनो शब्द नहि बहरयलनि मुदा किछु क्षण बाद महाराजकुमार बजलाह—'अहाँकेँ पाबि हम धन्य छी। हमर पूर्व जन्मक तपस्या छल जे अहाँ सन पत्नी हमरा भेटल।'

इन्दुमती—'भाग्य तँ हमर अछि जे अहाँसन महाराजकुमार हमरा भेटि गेलाह। हँ, एतबा अवश्य जे माँ पार्वतीकेँ हम खूब गोहरौलहुँ आ हुनकेँ प्रसादात् हम अहाँकेँ पौलहुँ।'

महाराजकुमार पत्नीक प्रति संवेदना देखबैत बजलाह—'एहि पालकीमे तँ अहाँ थाकि गेल हैयब। एहिमे जगह खूब फैल नहि छैक।'

इन्दुमती—'अहाँकेँ देखि कऽ हमरा थाकनिक अनुभवे नहि होइत अछि। पिताजीक पुण्यक कारणेँ अहाँ सहजमे हमरा भेटि गेलहुँ।'

महाराजकुमार—'हम अहाँक विद्याक प्रति अनुराग सुनि कऽ अत्यन्त आनन्दित छी। अहाँक पिता सेहो प्रशंस्य छथि जे ओ एतबा कम वयसमे अहाँकेँ विदुषी बना देलनि।'

इन्दुमती—'विद्याक प्रति तँ अनुराग हमर पिताकेँ छनि आ हुनक पुत्री भेलाक कारणेँ हमरहु किछु प्राप्त भऽ गेल।'

महाराजकुमार—'अच्छा, ई तँ कहू जे 'लीलावती' ओ अहाँकेँ किऐक पढ़ौलनि ?'

इन्दुमती—'लीलावती पढ़यबामे हुनक एकटा उद्देश्य छलनि। प्रारंभहिसँ हुनक विचार छलनि जे हमर विवाह कोनो राजकुलमे हो, रजवाड़ामे हो। एहि लेल ओ सोचैत छलाह जे हम बीजगणित आ अंकगणितमे प्रवीण भऽ अपन पतिकेँ साहाय्य प्रदान करियनि। राज-काजमे तँ हिसाब-किताबक प्रयोजन पड़िते छैक। सेहो हुनक सोचबाक मूलमे छलनि।'

महाराजकुमार—'व्याकरण अहाँकेँ किऐक पढ़ौलनि ?'

इन्दुमती—'पिताजीक कहब छनि जे व्याकरण पढ़नेबिना तँ वचनक शुद्धि संभवे नहि छैक। तेँ कोनो शास्त्रक अध्ययनक पूर्व व्याकरण पढ़ब आवश्यक छैक। ओ स्वयं हमरा व्याकरण पढ़ौलनि। अहूँ तँ व्याकरणक पंडित छी।'

महाराजकुमार—'अहाँकेँ के कहलक ?'

इन्दुमती—'बबुआ काका अहाँक ड्योढ़ीसँ अहाँक विषयमे ई सभ जानि हमर पिताकेँ आबि कऽ कहने रहथिन। हमर पिता स्वयं वैयाकरण छथि आ हुनका जमाय सेहो व्याकरण पढ़ल भेटलनि से जानि ओ अत्यन्त आनन्दित छथि।'

महाराजकुमार—'अच्छा ई तँ कहू जे हमसभ दु गोटे आ एखन चारि दिन आ चारि राति—प्रायः चौबीसो घंटा एकके संग रहब, ई सोचि कऽ अहाँकेँ केहन लगैत अछि ?'

इन्दुमती—'ई तँ एहने लगैत अछि जेना आनन्दकेँ परमानन्दसँ मिलन भेल हो। हम तँ चाहैत छी जे बाट आरो किछु बढ़ि जाइक। एहन अवसर तँ दुर्लभ छैक जे आठो पहर हमरा लोकनिकेँ संगहि रहबाक सुयोग अछि।'

महाराजकुमार—'अहाँक प्रति हम कृतज्ञ छी ।'

एहि प्रकारें कोना पाँच दिन बीति गेलैक से हुनका लोकनिकें बुझबामे नहि अयलनि । दुनू एक दोसराकें पाबि अपार सुखक अनुभव करलनि । रस्तामे एक दोसराकें चिन्हबाक सुयोग भेटलनि । दुनू एक दोसराक प्रेमसँ प्रभावित भेलाह ।

कार्यक्रमक अनुसार पाँचम दिन संध्याकाल सभ गोटा दरभंगा पहुँचल भेलाह । पहुँचितहि शुभ मुहूर्तमे वधूक गृह-प्रवेश भेल । सासु इन्दुमतीकें देखलनि । हुनका देखि कऽ ओ मुग्ध छलीह । एहन पुतोहु पाबि ओ अपनाकें भाग्यवती बुझैत छलीह । हुनका नामकरण कयलनि ओ 'इन्द्रावती' ।

महाराजक पुतोहुक संग बधुआ झा सेहो आयल छलाह । हुनका हेतु व्यवस्था भेल जे आब ओ महलेमे रहताह । राजमे हुनका एकटा उपयुक्त स्थानपर नियुक्त कयल गेलनि । महाराज दीवानजीकें एहि संबंधमे कहि देने छथिन । बधुआ झाक आकांक्षाक पूर्ति भेलनि । महाराजकुमारक विवाहमे बधुआ झाक भूमिकासँ सभ परिचित छलाह ।

महाराज रामचन्द्रनारायण हृदय खोलि कऽ महाराजकुमारक विवाहमे खर्च कयलनि । बहुतो दिन धरि एहि विवाहक आ महाराजक उदारताक चर्चा होइत रहल । विवाहोपरान्त महाराज जखन घुरि कऽ अपन ड्योढ़ी ऐलाह तखन पुर्णियाक जमीन्दार रोहितदीन सेहो पहुँचल ड्योढ़ी आबि हुनक जिज्ञासा कयलथिन । बरियाती जयबाक निमंत्रणक बदलामे ओ एतबा काज कयलनि । पुर्णिया जिलाक आन जमीन्दार सभ सेहो ड्योढ़ी आबि महाराजक जिज्ञासा कयलथिन आ अवसरोचित व्यवहार कयलथिन ।

पन्द्रह

महाराजक आब वृद्धावस्था आबि गेल छलनि । महाराजकुमारपर राज-संचालनक भार दऽ ओ आब अधिक समय पूजा-पाठमे बितबय लगलाह । महाराजकुमार शासन-संचालनक कार्यमे सुयोग्य छलाह । प्रजाकें कोनो कष्टक अनुभव नहि होइक । कोनो विशेष परिस्थिति भेलापर ओ महाराजसँ सेहो परामर्श कऽ लैत छलाह । अमात्यवर्ग सेहो हिनक प्रति पूर्ण वफादार छल ।

राज-काज ठीक-ठाक चलि रहल छल । एक दिन पूजा करैत काल महाराज हठात् अचेत भऽ खसि पड़लाह आ फेर नहि उठलाह । महाराजकुमारक विवाहकें दू वर्षसँ अधिक भेल छल मुदा महाराजकें पौत्रक मुँह देखबाक अवसर नहि भेटलनि । सम्पूर्ण राजमे महाराजक निधनसँ हाहाकार मचि गेल । संध्याकाल धरि ड्योढ़ीक समीपे श्मशानमे हिनक अन्त्येष्टि भेल । महाराजकुमार अपन पिताकें आगि नहि देलथिन । हिनका लोकनिमे पुत्र द्वारा मुखाग्नि देबाक परिपाटिये नहि छल । मुदा श्राद्ध महाराजकुमार कयलनि ।

सभ कुटुम्बीजनकें श्राद्धक नोत-पात पठाओल गेल । अड़ोस-पड़ोसक जमींदार आ जेठरैयति लोकनिकें निमंत्रण पठाओल गेल । सभ परगनाक चौधरी लोकनिकें श्राद्धक प्रबंध लेल ड्योढ़ी बजाओल गेल । एहि अवसरलेल विशेष अतिथिशाला आ पाकशाला आदिक निर्माण भेल । कुटुम्ब लोकनिक आवासक यथोचित प्रबंध कयल गेल ।

चाउर-दालि, तरकारी आ आन-आन भोज्य-पदार्थ जुटयबाक भार एक परगनाक चौधरीकें भेटलनि । हवेली परगनाक चौधरीकें दूध-दही जुटयबाक भार ई सोचि कऽ देल गेलनि जे अधिक दूरसँ दूध अथवा दही एकत्र करबामे असुविधा छलैक । अनेक प्रकारक मधुर बनयबाक योजना छलैक । एहि लेल घी, चीनी, बेसन आ मैदा आदिक व्यवस्था होमय लागल । भर्सीगंजसँ घी अयबाक निर्णय लेल गेल । एतुका घी अपन स्वादक लेल विख्यात छल ।

श्राद्धक अवसर पर उत्तम कोटिक भोजक व्यवस्था हेतु वस्तुजातक संचय जोर-शोरसँ आरंभ भऽ गेल । कुटुम्ब लोकनिकें विदाईमे जे धोती देल जयतनि ओहो उत्तम कोटिक होमबाक चाही । राजक दीवान आ अन्य अधिकारीगण पूर्ण विवेचनाक बाद श्राद्धसँ संबंधित काज सभक निर्णय लेलनि ।

महाराज रामचन्द्रनारायणक पिता महाराज नरनारायणक श्राद्धक फर्दी सभ निकालल गेल आ ई निश्चय कयल गेल जे श्राद्ध-संबंधी सभ काज ओहिसँ बीस हो, उन्नीस नहि । राजमे श्राद्ध-कार्यक परिपाटी तँ बनले छलैक आ ओहि हिसाबसँ राज द्वारा नियुक्त अधिकारी लोकनिक देख-रेखमे सभ प्रबंध होमय लागल ।

महाराजकुमार आब उत्तरीय धारण कऽ लेने छलाह । आइ एकादशाह आ काल्हि द्वादशाह । राजक परिपाटीक अनुसार वृषोत्सर्ग श्राद्ध कयल

गेल । श्राद्ध नीक जकाँ सम्पन्न भेल । दरभंगा आ पुर्णियाक कुटुम्ब सभ पूर्ण संख्यामे आयल छलाह । धोती आ अन्य-अन्याक वटवाराक अतिरिक्त विदाईमे सेहो मिठाइ सभ हुनका लोकनिकें भेटल छलनि आ विशेष सारो सँ विदाइक काल देल गेलनि, तकरा कुटुम्ब लोकनि मोटा बन्हलनि आ ओ लोकनि द्वादशाहक दोसर दिन विदा होइत गेलाह । जे रैयतगण जतय आयल छलाह से नीक जकाँ भोजन कयलनि । सम्पूर्ण परोपट्टाक ब्राह्मणकेँ भोजनक हेतु निमंत्रण छल—एकादशाह आ द्वादशाह दुनू दिनुका । अतया बाहरी लोककेँ नोत देल गेल छल, जाहिमे अधिकांश लोक निमंत्रण पूरय एलाह । प्रजावर्गमे डयोढ़ीक पाँच कोसक लग-पासक सभकेँ निमंत्रण छलनि ।

घाटपर आ हवेलीमे श्राद्धक अवसरपर जे वस्तु सभ उत्सर्ग कयल गेल से सभ उत्तम कोटिक छल । उत्तम कोटिक गायसभ घाटपर आ श्राद्धमे दान कयल गेल । शय्या-दानक वस्तु सभ उच्चकोटिक छल । सभ वर्ग भोजन आ दान आदिक प्रशंसा कयलक । पंडित लोकनिकेँ गरुड़पुराण आदि सुनयबाक हेतु प्रचुर दक्षिणा देल गेलनि । राजपंडितक उपस्थितिमे महापात्र द्वारा श्राद्धक कार्य सम्पन्न भेल । राजपंडितकेँ प्रचुर दक्षिणा भेटलनि । महापात्रकेँ उत्सर्ग भेल वस्तुक अतिरिक्त एक सय बीघा जमीन सेहो दानमे देल गेलनि । सुधी, वैदिक आ कर्मकाण्डी लोकनिक विशेष रूपेँ विदाइ कयल गेल ।

महारानी विधवा भऽ गेलीह । आब हुनक पद राजमाताक भऽ गेलनि । तीर्थक जल सभ आनल गेल आ समारोहपूर्वक महाराजकुमार इन्द्रनारायणक राज्याभिषेक भेल । ओ आब महाराज इन्द्रनारायण राय कहाबय लगलाह । सासुर अयलापर इन्दुमतीक नाम इन्द्रावती राखल गेल छलनि । तेँ ओ आब महारानी इन्द्रावती कहबय लगलीह ।

किछुए दिनमे सभ सामान्य भऽ गेल आ महाराज इन्द्रनारायण अपन राज-काज सम्हारलनि । दिवंगत महाराजक समयमे शासन-संबंधी प्रशिक्षणक हेतु हिनका राजक विभिन्न विभागक काज देल जाइत छलनि आ ताहि कारणेँ हिनका प्रशासन-संबंधी कर्त्तव्यक निर्वाहमे कोनो कष्ट नहि होइत ।

हँ, एहि बीच एकटा आरो घटना भेल । महाराजक दिवंगत भेलाक किछुए दिन बाद देवान जानकीराम सेहो स्वर्गीय भऽ गेलाह । आब हुनक पुत्र रामनिहोरा सिंह, जे राजमे दोसर पदपर छलाह, राजक देवान बनाओल गेलाह ।

सोलह

हवेली पुर्णियाक चौधरी देवानजीसँ पुछलथिन जे दिवानीक अर्थ की भेलैक ? देवान रामनिहोरा सिंह चौधरीकेँ बुझबऽ लगलथिन—'1757 ईस्वीमे पलासीक युद्धमे क्लाइव आ सिराजुद्दौलाक बीच लड़ाइ भेल जाहिमे क्लाइव विजयी भेल । क्लाइवक विजयी भेलाक बादेसँ बंगालमे ईस्ट इण्डिया कम्पनीक धाक जमय लगलैक । कम्पनीक शक्ति बंगाल, बिहार आ उड़ीसामे आब खूब बढ़ि गेलैक । एहि कारणेँ ईस्ट इण्डिया कम्पनी आ दिल्लीक मुगल बादशाह शाहआलमक बीच 1765 ईस्वीमे सन्धि भेलैक जकर अनुसार बंगाल, बिहार आ उड़ीसाक दिवानी कम्पनीकेँ प्रदान कयल गेलैक ।

—'ई तँ संधि नहि भेल । ई तँ एक सलीब बात भेल ।' चौधरी बीचमे टोकलथिन ।

—'पूरा बात तँ सुनि लिअ ।' देवानजी आगाँ कहऽ लगलथिन । 'दिवानीक प्राप्तिक बदलामे कम्पनी प्रतिवर्ष दिल्लीक बादशाहकेँ चौबीस लाख टाका राजस्वक रूपमे चुकती करब गछलकैक । फौजदारीक अधिकार मुगल बादशाहक हाथमे रहल जे बंगालक नबाब हुनक प्रतिनिधिस्वरूप नामक मात्रिमक रूपमे उपयोग करत ।'

नकारात्मक स्वरमे चौधरी कहलथिन—'दिवानीक अर्थ तँ तैयो हमरा बुझबामे नहि आयल ।'

देवानजी स्पष्ट करैत बजलाह—'दिवानीक अधिकारक अर्थ भेल राजस्व वसूली आ ओहिसँ संबंधित मोकदमाक फैसला करबाक अधिकार ।'

चौधरी—'तँ आब दिवानी मोकदमाक फैसला बंगालक नबाब नहि करताह ?'

देवानजी- 'संधिक अनुसार तँ ई ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकार छैक ।'

गंभीर होइत चौधरी बजलाह—'तँ एकर ईहो अर्थ भेल जे आब मुगल लोकनिक सम्प्रभुता ईस्ट इण्डिया कम्पनी आ मुगल बादशाहमे बँटि गेल । मुदा कम्पनीकेँ रैयतिसँ खजाना असूल करयवला कर्मचारी कहाँ छनि ?'

देवानजी चौधरीकेँ बुझबैत कहलथिन—'कम्पनीक अधिकारीगण ई निश्चय कयने छथि जे पुरान दिवान अर्थात् बंगालक सूबेदारहिक हाथमे राजस्व असूलीक काज यथावत रहतैक आ फौजदारी विभाग तँ पहिनहु हुनके हाथमे छलनि आ ओहो यथावत रहतैक । बंगालक सूबेदारक कार्यभारी

लोकनि कम्पनीक प्रतिनिधिस्वरूप राजस्व असूलीक काज करताह जाहि पर कम्पनीक निगरानी रहतैक। एहि हेतु मुर्शिदाबाद-दरबारमे कम्पनीक दिससँ 'रेजिडेन्ट' रहतैक।'

परिस्थितिक गंभीरताक अनुभव करैत चौधरी बजलाह—'एकर अर्थ ई भेल जे सूबेदार, नाजिम रहबाक कारणेँ पुलिस, फौजदारी-मोकदमा, फौज आदिक काज देखताह। ई लोकनि दिल्ली सल्तनतक प्रतिनिधिस्वरूप देखताह आ ईस्ट इण्डिया कम्पनीक प्रतिनिधिस्वरूप दिवानीक काज देखताह। एहि प्रकारेँ बंगाल, बिहार आ उड़ीसामे आब द्वैध शासनक सूत्रपात भेल आ हमरा बनैत एहिसँ सभ पक्ष कष्टमे रहत।'

देवानजी—'बेसू, ई संक्रान्ति-काल थिक। मुगल-साम्राज्यपर ईस्ट इण्डिया कम्पनी अपन प्रभुत्व जमा रहल अछि। एहन स्थितिमे तँ किछु अराजकता हेबे करत।'

चौधरी—'हमरा लोकनिसँ राजस्व के लेत?'

देवानजी—'आस्ते-आस्ते सब स्पष्ट भ' जेतैक। एखनतँ हमरा लोकनि फौजदारहिक दफ्तरमे राजस्व जमा करैत छी।

सत्रह

आइ सभ जमींदारकेँ पुर्णियाक फौजदार अपन दरबारमे बजौने अछि। महाराज इन्द्रनारायण सेहो उपस्थित छथि।

फौजदार—'हम अहाँ लोकनिकेँ एहि दुआरेँ बजौने छी जे कम्पनी सरकार कानूनी रूपसँ आब बिहार, बंगाल आ उड़ीसाक दिवानी प्राप्त कयने अछि। मुगल सम्राट शाहआलम चौबीस लाख रुपैया कम्पनी सरकारसँ लेताह आ कम्पनी हुनकासँ राजस्व असूल करबाक व्यवस्था करत।'

खगड़ाक जमींदार बजलाह—'प्रजासँ जे अपने मालगुजारी असूल करताह की हमरहि लोकनिक माध्यमे असूलीक काज चलत?'

फौजदार—'एखन कोनो परिवर्त्तन नहि होयत। जहिना पहिने असूलीक काज चलैत छल तहिना चलैत रहत। दिवानी मोकदमाक फैसला आब कम्पनीक नामपर होयत आ जमींदार लोकनिसँ असूल कयल राजस्व कम्पनीकेँ सुपुर्द क' देल जेतैक। दिवानी मोकदमाक फैसला सेहो एखन पुराने

अधिकारी लोकनि करताह। दिवानीक आमद आ खर्चक हिसाब फराक-फराक राखल जेतैक।'

महाराज इन्द्रनारायण प्रश्न कयलथिन—'जमींदार लोकनि तँ आब कम्पनीक मातहतमे आबि गेलाह तखन हमरा लोकनि रैयतिसँ मालगुजारी असूल करबाक कोना अधिकृत छी? कम्पनी सरकार तँ हमरा लोकनिकेँ किछु नहि कहने अछि।'

फौजदार—'अहाँक प्रश्न बहुत ठीक अछि। कम्पनी आ बंगालक सूबेदारसँ ई समझौता भेल छैक जे राजस्वक असूली पूर्ववत् नवाबक अधिकारी आ कर्मचारीक द्वारा कयल जेतैक। असूलीमे जे खर्च पड़तैक तकरा काटि क' बचल राशि बंगालक नवाब कम्पनीक 'रेजीडेन्ट'क मार्फत ईस्ट इण्डिया कम्पनीक खातामे जमा क' देथिन। एखन अहाँलोकनि अपन-अपन जमींदारीक राजस्व हमरा लग जमा करैत छी। हम ओकरा मुर्शिदाबाद पठबैत छिऐक। अहाँलोकनि पूर्ववत् हमरे लग राजस्व जमा करैत जायब आ पहिलुके जकाँ अहाँ लोकनिकेँ राजस्वक प्राप्तिक रसीद हमर दफ्तरसँ भेटत।'

दुलार चौधरी—'फौजदारी आ अदालती मोकदमाक हेतु पहिलुके सिलसिला रहतैक की कम्पनी द्वारा अदालतक स्थापना कयल जयतैक जाहिमे दिवानी मोकदमाक फैसला हेतैक?'

फौजदार—'एखन सभ व्यवस्था पूर्ववत् रहत। हम पहिनहि कहलहुँ जे फौजदारी आ दिवानीक सभ काज मुख्यतः मुर्शिदाबादक नवाबक हाथमे रहतनि। दिवानीक आमदनी ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ भेटि जेतैक। ओहि विभागपर जे खर्च हेतैक से सूबेदारकेँ भेटि जयतनि।'

महाराज इन्द्रनारायण—'एकर अर्थ भेल जे सिद्धान्ततः आब सूबाक दु मालिक भेल: एक भेल सूबेदार आ दोसर भेल कम्पनी।'

फौजदार—'एहिमे कोनो सन्देह नहि। हम अहाँ लोकनिक समक्ष एहिबात सभकेँ राखबाक हेतु अहाँ लोकनिकेँ बजौलहुँ। अहाँ लोकनिकेँ किछु आरो प्रश्न करबाक रहय तँ क' सकैत छी।'

कसबाक जमींदार—'रौदी-दाही आदिमे राजस्वक माफीक हेतु जे दरखास्त देल जेतैक ताहिपर ककर आदेश हेतैक?'

फौजदार—'रौदी-दाहीक आशंका अहाँ किएक उठौलहुँ? एहन मामिला सबहपर विचार कयल जेतैक।'

ईस्ट इन्डिया कम्पनी द्वारा नियानी शासिक कारणेँ जे जमींदार लोकनि नाना प्रकारक आशंका करैत छलाह तकर फौजदार द्वारा निराकरण कयल गेल। एकर बादे दरबार समाप्त भेल आ सभ जमींदार लोकनि अपन-अपन मुख्यालय गेलाह।

अठारह

मोजेलाल झा—'एहि वर्ष वर्षा हेतैक की नहि ? पचास बीघामे धान छल मुदा खेतमे नागो नहि रहि गेल छैक। कोना लोकक गुजर हेतैक ?'

पुलकित मंडल—'हमरा लोकनिकेँ मजूरक काज नहि भेटैत अछि।'

कनकिर साहु—'मजूरक काज कोन छैक ? फसिल रहितहि पर ने मजूरक काज हेतैक आ मानि लिअउ जे केओ पोखरि खुनावथि तँ मजूरी कतयसँ देथिन ?'

कंचन राउत—'घोर कलिकाल आबि गेल। भगवान जानथि जे वर्षा कहिया हेतैक !'

मोजेलाल—'लोकसभ गाम छोड़ि-छोड़ि आन गाम दिस मजूरीक खोजमे भागि रहल अछि। आइ तँ अपन गाममे अन्न बिनु दू गोटाक मृत्यु भऽ गेलैक। भयानक अकाल पड़ि गेल।'

कंचन राउत—'ई बुझलहुँ जे आब मुसलमान फौजदारक स्थानपर पूर्णियामे अंगरेज फौजदार आबि गेल अछि ?'

मुंशी देवीलाल दास—'अंगरेज फौजदार नहि, ओ 'सुपरवाइजर' कहबैत छथि। पुरनका मुसलमान फौजदार सेहो एखन रहताह।'

कंचन राउत—'एक गोटा कहैत छल जे अंगरेज रहितहुँ ओ उर्दू-फारसी खूब जनैत छथि आ हाकिम बड़ मेहनती छथि।'

मुंशी देवीलाल—'अहाँ कोना बुझलिऐ जे ओ बड़ मेहनती छथि ?'

कंचन—'हमसू पूर्णियामे छलहुँ। ओतय अन्न बिनु भूखसँ तड़पि-तड़पि कऽ लोक मरि रहल अछि। साहेब मृतक सभकेँ अपनहि ठाढ़ भऽ कऽ गड़बा रहल छल आ हिन्दूक मृतककेँ जरबा रहल छल। फौजदार मुहम्मद अली खाँ सेहो एहि इन्तिजाममे लागल छलाह। फौजदार आ सुपरवाइजर दुनू

मिलि कऽ एहि अकालसँ लड़ि रहल छथि। सेहन पूर्णिया दिस अकालक विभीषिका अछि तेहन पहसरा परिसरमे नहि अछि।'

देवीलाल दास—'ओहुने एहने छैक, एतयसँ दक्षिण धर्मपुर परगनामे सेहो एहने भुखमरी छैक मुदा एतय महाराज इन्द्रनारायण आ महारानीजी स्वयं अकालक निवारणमे लागल छथि।'

कंचन—'महारानीजी सेहो ?'

देवीलाल—'हँ, महारानीजी बड़ धर्मनिष्ठ आ दयालु छथि। ओ महाराजकेँ कहलथिन अछि जे एहि अकालमे भीख देलासँ नीक जे लोककेँ काज दियौन आ काजक बदलामे भोजन दियौन।'

कंचन—'ई तँ बहुत नीक बात भेल। सुनैत छिऐक जे महारानी बहुत विदुषी छथि।'

देवीलाल—'महाराजकेँ ओ परामर्श देने छथिन जे मालगुजारीक असूली बन्द करबा दियौक आ कम दिनमे होमय बला अन्न सभ उपजयबामे प्रजाक सहायता करिऔक।'

मोहन—'आइ महाराजक हुकुम भेल छैक जे अतिथिशालाक भनसाघरमे आबयसँ बूढ़-लाचार लोकसभ लेल खिचड़ि बनतैक ओ ओकरा सभकेँ बैसाकऽ भोजन कराओल जेतैक। देवान राम निहोरा सिंहकेँ हुकुम भेटल छनि जे ओ सम्पूर्ण राजमे खेतीमे राज दिससँ लोककेँ मदति करथुन। महाराज सभ काज छोड़ि एखन दुर्भिक्षहिक समस्यापर ध्यान रखने छथिन। सर्वोपरि तँ महारानीकेँ चैन नहि छनि। जहियासँ ओ सुनलथिन अछि जे अकालक कारणेँ लोक मरि रहल अछि, तहियासँ ओ महाराजकेँ अकालक विभीषिकाकेँ रोकबाक हेतु विभिन्न प्रकारक प्रयत्नमे तत्पर कयने रहल छथिन। हुनक कहब छनि जे एक तँ अन्नहीन लोककेँ मरबसँ तत्काल बचाबी आ दोसर जे दू-तीन मासमे उपजयबला नव अन्न उपजाकऽ लोककेँ किछु सहारा दिऐक। राजक भंडारमे विभिन्न परगनामे जे अन्न छैक तकर बिक्रीपर रोक लगा देल गेल छैक। महारानीजी खूब प्रयत्नशील छथि जे एकोटा आदमीकेँ मरय नहि देल जाय आ कृषि उत्पादनपर ध्यान देल जाय। एखन धरि सामान्यतः जमींदार लोकनि कृषिपर ध्यान नहि दैत छलथिन। एकरा मात्र रैयतिक काज बुझल जाइत छल। खेती करत तँ रैयतिये मुदा ओकरा मानि, बीया आदिक सहायता तँ जमींदार कऽ सकैत छथिन ! रैयतिकेँ जँ उपजा नहि हेतैक तँ ओ मालगुजारी कतयसँ देतैक ? आ एहि कारणेँ महारानी एहि बात पर जोर देने छथिन जे अन्न उपजयबामे रैयतिकेँ अधिकाधिक मदति देल जाय। महारानीक परामर्श

पर सभ परगनाक चौधरी, तहसीलदार आ जेठरैयति लोकनिक परसु बैसक होयत। राजक प्रमुख कर्मचारी सभक संग दिवान रामनिहोरा सिंह सेहो ओहि बैसकमे उपस्थित रहताह। एहि बैसकमे अकाल निवारणक हेतु विचार कयल जायत।'

उनैस

जॉर्ज गुस्टावस डकारेल पूर्णियाक प्रथम सुपरवाइजर नियुक्त भेलाह। ईस्ट इण्डिया कम्पनी आब अपन कर्मचारीक माध्यमसँ 'दिवानी'क काज करत। पहिलुका जकाँ बंगालक सूबेदारपर ओ दिवानीक काजक हेतु निर्भर नहि रहत। तेँ विचारि कऽ ईस्ट इण्डिया कम्पनी जॉर्ज गुस्टावस डकारेलकेँ पूर्णियाक सुपरवाइजर नियुक्त कयने अछि। ओ जहिना पूर्णिया ऐलाह, हुनका 1769-70क अकालक सामना करय पड़लनि। एखन बंगालक सूबेदारक दिससँ मुहम्मद अली खाँ फौजदारक काजमे संलग्न रहताह।

अकालक भयावह स्थिति देखि कऽ तँ सुपरवाइजर क्षुब्ध छलाह। फौजदार मुहम्मदअली खाँक संगे ओ विचार करय लगलाह जे कोना रैयतिक प्राण रक्षा हो। संगहि हुनका राजस्व असूलीक सेहो चिन्ता छलनि। राजस्व असूलीक काज तँ आब कम्पनी अपन हाथमे लऽ लेने अछि। अकालक स्थितिकेँ देखैत कम्पनीक उच्चाधिकारीक एखन कोनो आदेश नहि छलनि जे राजस्वक असूलीमे छूट देल जाय अथवा अकालक कारणेँ असूली स्थगित कयल जाय। मुहम्मदअली खाँ पुरान अधिकारी छलाह। पूर्णिया अयबाक पहिने ओ 'बक्सी बन्दर हुगली'क फौजदार छलाह आ ई बूझल जाइत छलैक जे ओ एक निष्ठावान आ कर्मठ अधिकारी छथि। दुनू अधिकारी आपसमे विचार-विमर्श प्रारंभ कयलनि।

डकारेल—'खान साहेब ! ई पचासटा हाथी आ एक सय घोड़ा आ ऊँट आदि तँ सर्वथा एहि अकालक समयमे यथेष्ट चाउर आ बदाम दानाक रूपमे खा रहल अछि। एकर अतिरिक्त घी सेहो हाथीकेँ देल जाइत छैक आ घोड़ाकेँ सातुक संग गुड़ देल जाइत छैक। जतय अन्न बिनु आदमी मरि रहल अछि ओतय हाथी-घोड़ापर चाउर आ बदाम खर्च करब उचित? एहि जानवर सभकेँ बेचि देल जाय तँ बहुत अन्न प्रतिदिन बचि जायत। अहाँक की विचार ?'

मुहम्मद अली—'ई बचल अन्न कहाँ की करब ?'

डकारेल—'एहिसँ क्षुधा पीड़ित प्रजाकेँ सहायता देबैक। मुदा हमरा तँ एकरा लेल कम्पनीसँ आदेश प्राप्त करय पड़त। हम बुझैत छी जे ई खर्च शासनपर व्यर्थ भार अछि। फौजदारक गोदाममे परगना सभसँ आरो अन्न अछि ?'

मुहम्मद अली—'हँ, किछु तँ होयबाक चाही।'

डकारेल—'जमींदार लोकनिसँ क्षुधा पीड़ित रैयतिकेँ बचयबामे सहायता नहि भेटत ?'

मुहम्मद अली—'पूर्णिया जिलाक प्रायः आधा भागपर महाराज इन्द्रनारायण रायक जमींदारी छनि। महाराज आ महारानी दुनू प्रगतिशील विचारक छथि। ओ लोकनि अकाल पीड़ितक सहायतार्थ किछु काज कऽ रहल छथि। हुनका लोकनिक मुख्यालय छनि पहसरा। ओतय ओ लोकनि प्रतिदिन क्षुधापीड़ित लोकक लेल तत्काल खिचड़ि बँटबाक व्यवस्था कयने छथि।'

डकारेल—'ई तँ बहुत खुशीक बात सुनलहुँ। सब जमींदार की ई नहि कऽ सकैत छथि ?'

मुहम्मद अली—'जमींदार सभकेँ बजयबाक चाही आ हुनका लोकनिसँ रैयतिक जीवन-रक्षाक हेतु निवेदन करबाक चाही।'

मुहम्मद अली—'हम काल्हिए प्रत्येक जमींदारक ओहिठाम पियादा पठा देने छिऐक जे ओ लोकनि परसु मुख्यालयमे दरबारमे उपस्थित होथि।'

डकारेल—'अकाल पीड़ितक हेतु की कयल जाय आ ओहिमे जमींदार लोकनि की सहायता कऽ सकैत छथि ? दोसर बात जे एहन दुष्कालमे चोरी-डकैती सेहो बढ़ि गेल अछि तकरासँ रैयतिक रक्षार्थ की कयल जाय ? राजस्व-असूली एहि अकालमे कोना कयल जाय ?'

मुहम्मदअली—'आब हमरालोकनि एखनहि पहसरा चली तँ की हर्ज ? अहाँ तँ घोड़ापर खूब चढ़ैत छी आ हमहूँ चढ़ैत छी। दू-तीन घंटामे हमरालोकनि आरामसँ पहसरा पहुँचि जायब आ विचार-विमर्शक बाद राता मुख्यालय घुरि आयब।'

दुनू गोटे घोड़ापर सवार भऽ पहसरा विदा भेलाह। अपराह्नमे पहसरा पहुँचलाह। एकटा हरकारा आगाँ बढ़ि ड्योढ़ीमे हुनका लोकनिक आगमनक

सूचना पहुँचा देने छल । डकारेलकेँ दुर्भिक्षपा आबक बलो दिन नहि भल छलनि कि अकालक ई भयानक समस्या हुनक सोझामे आबि गेल । महाराज इन्द्रनारायण अपन ड्योढ़ीमे हुनका लोकनिक स्वागत कयलथिन । जहिना ओ लोकनि ऐलाह कहुया आ पानबीड़ा आदि हुनका लोकनिक समक्ष आयल ।

मुहम्मद अली बात आरंभ कयलनि—'महाराज बहादुर ! अकालक विभीषिका तँ पसरले जाइत अछि । एहिमे लोकक प्राण कोना बचाओल जाय ?'

महाराज—'हम तँ काल्हिए सब परगनाक चौधरी लोकनिकेँ बजाकऽ आदेश देने छियनि जे प्रत्येक परगनामे आवश्यकतानुसार प्रतिदिन खिच्चड़ि बँटबाक हेतु व्यवस्था कयल जाय । एक मासक जोगर हमरा लग अन्न अछि जाहिसँ हम अपन सब परगनामे खिच्चड़िक दस-दस टा केन्द्र चलवा सकैत छी । एकर अतिरिक्त हम परगनाक चौधरी लोकनिकेँ आदेश देने छियनि जे ओ लोकनि इनार, पोखरि, सड़क, बान्ह आदि बनवाबथि । एखन मजूरी बहुत सस्त छैक । छओ आनामे मासभरि माटि कोरबाओल मजूर भेटि जाइत छैक । एहन स्थितिमे जतबा निर्माण काज भऽ सकय से कऽ देल जाय । एहि जिलामे बहुत कममे दूर माटि खुनलापर पानि निकलि अबैत छैक । तेँ कच्चा कूप खोदबाक हेतु सेहो हम आदेश देने छिऐक आ ओहिसँ पटौनी कऽकऽ दू-तीन मासमे जे अन्न भऽ जाइत छैक से प्रत्येक गाममे उपजयबाक हम आदेश देने छिऐक । प्रतिदिन एकटो साँझ भोजनक व्यवस्थासँ अकालक वेग किछु घटि जेतैक । अल्पकालमे तैयार होमयवला फसिल सभ यथा कोदो, साम, मड़ुआ, मकै, साठी धान, कावनि आदि तैयार भऽ जेतैक । सजमनि, कदीमा, भिंडी आदि सेहो शीघ्र उपजयवला तरकारी सभ थिक आ अकालक समयमे एहुसँ पेट भरल जा सकैत छैक ।'

डकारेल—'ई अहाँ कोना सोचलहुँ ?'

महाराज—'प्रजाक पीड़ा देखि हम आ महारानी विगत एक पक्षसँ बैसि कऽ ई योजना तैयार कयने छी आ हमर आदेश हमर सम्पूर्ण जमींदारीमे आइएसँ लागू अछि । विभिन्न केन्द्रपर भोजनमे खिच्चड़ि वितरणक व्यवस्था सेहो आरंभ अछि । महारानीक जोर छनि जे भोजन दऽकऽ एहन काज कराओल जाय जे स्थायी सेहो होअय । किछु एहन लोक सेहो खिच्चड़ि केन्द्रमे औताह जे सोझामे भोजन नहि करताह । एहन लोककेँ प्रतिदिन एक पौआ अन्न देबाक व्यवस्था कयल गेल छैक ।'

मुहम्मद अली—'एहने व्यवस्था सब जमींदारीमे भऽ जाय तँ बहुत दूर धरि समस्याक समाधान भऽ जायत ।'

डकारेल—'परन्तु जे हमरालोकनि जमींदार सबकेँ दरबारमे बजौने छियनि ओहिमे कहल जाय जे एहि प्रकारक व्यवस्था सभ जमींदार अपन-अपन जमींदारीमे करथि ।'

मुहम्मद अली आ डकारेल महाराज आ महारानीक साहाय्य कार्यसँ अत्यन्त प्रभावित भेलाह । बातमे ओ लोकनि बातचीत कयलनि जे महारानीक शिक्षा-दीक्षा कतय भेल छनि । मुहम्मद अलीकेँ पहिनहिसँ ज्ञात छलनि जे महारानीक पिता स्वयं उच्चकोटिक पंडित छथि आ ओ अपन कन्याकेँ ई सोचि कऽ पढ़ौने छलथिन जे हिनकर विवाह कोनो राजघरानामे हेतनि आ एहिमे ई आवश्यक हेतैक जे ई विदुषी होथि ।

मुहम्मद अली—'महारानी संस्कृत साहित्य, व्याकरण, तर्कशास्त्र आ लीलावती अपन पितासँ पढ़ने छथि ।'

डकारेल—'लीलावती की थिकै ?'

मुहम्मद अली—'एहि देशक प्रसिद्ध विद्वान भास्कराचार्यक कन्या लीलावती छलथिन । ओ अपन कन्याक नामपर अंकगणित आ बीजगणितक पुस्तकक नाम लीलावती रखलनि । हिसाब-किताबक ज्ञान लेल एहि क्षेत्रमे लोक लीलावतीक अध्ययन करैत अछि ।'

डकारेल—'महारानीक योग्यताक विषयमे सुनिकऽ हम बहुत आनन्दित छी । एतहुर तँ हम सब जमीन्दारहुकेँ पढ़ल-लिखल नहि देखैत छियनि ।'

मुहम्मद अली—'महाराज आ महारानीक कुलमे प्रारंभहिसँ पठन-पाठनक परम्परा छनि ।'

डकारेल—'एहिसँ हमरा बहुत प्रसन्नता भेल अछि । हम एहि राजकुलसँ प्रभावित छी । ई लोकनि उदार आ प्रजावत्सल छथि ।'

मुहम्मद अली—'ई गुण वस्तुतः हिनकालोकनिमे छनि । एकर कारण छैक जे अनेक पीढ़ीसँ ई लोकनि जमींदार भेल चल अबैत छथि ।'

डकारेल—'हिनका लोकनिक जमींदारीक राजस्व ककरासँ लेल जाइत छैक—राजस्व ठिकेदारसँ अथवा जमींदारसँ ?'

मुहम्मद अली—'रैयतिसँ मालगुजारी महाराज अपन अमलासँ असूल करबैत छथि आ देय राजस्व फौजदारक ओहिठाम जमा कयल जाइत अछि । आब कम्पनी सरकार एहिमे जे परिवर्तन करत तदनुसार आगाँ काज कयल जेतैक ।'

डकारेल—'बुझलहुँ ।'

मुहम्मद अली—'एहिसँ तँ फौजदारलोकनि सभ राजस्व जमा होइत आ खर्च काटि कऽ फौजदार जमींदार द्वारा देल राजस्व मुर्शिदाबादक खजानामे जमा करथि।'

इकारेल—'हमरालोकनि तँ परन्तु जमींदार लोकनिकेँ अकालक समस्यापर विचार करबालेल अर्जी देने छथि ?'

मुहम्मद अली—'अकाल पीड़ितक समस्याक अतिरिक्त विधि-व्यवस्थापर सेहो विचार करबाक अछि आ अन्ततोगत्वा सभसँ प्रमुख राजस्व असूलीक विषयमे सेहो विचार करबाक अछि। कम्पनी सरकार राजस्व-असूलीक विषयमे अकालक कारणेँ एखन धरि कोनो निर्देश नहि देने अछि।'

इकारेल—'एकर अर्थ भेल जे जहिना राजस्व असूल कयल जाइत छलैक, ओहिना कयल जैतैक। मुदा एहन स्थितिमे की राजस्वक असूली पूर्णरूपेण भऽ सकतै ?'

मुहम्मद अली—'परसुक सभामे जमींदार लोकनिक मत जनलाक बाद एहि पर विचार कयल जैतैक।'

बीस

महारानी जहियासँ आयल छलीह आ महाराज इन्द्रनारायण रायसँ प्रति-वर्ष पंडितसभाक आयोजन करैत छलीह। महाराज आ महारानी दुनूकेँ विद्याक प्रति असीम अनुराग छलनि। प्रतिवर्ष ड्योढ़ीमे एकटा सभा होमय लागल जाहिमे बंगाल आ मिथिलाक पंडित लोकनि एकत्रित होइत छलाह। एहि सभामे शास्त्रार्थक कार्यक्रम राखल जाइत छल। एहि सभामे जे प्रौढ़ विद्यार्थी लोकनि सुयोग्य पाओल जाइत छलाह, हुनका महाराज स्वयं 'टीका' लगबैत छलथिन। तकर बाद पंडित रूपेँ ओ सुप्रतिष्ठित होइत छलाह।

एहि बेर महाराज विशेष उत्साहसँ बंगाल आ मिथिलाक पंडित लोकनिकेँ शास्त्रार्थक हेतु आमंत्रित कयने छलथिन, आ तेँ बड़का सभाक आयोजन पहिलका ड्योढ़ीमे भेल छल। राजपंडितक देख-रेखमे ई सभा आयोजित भेल छल। नदिया-शान्तिपुरक बंगाली विद्वानसभकेँ विशेषरूपेँ बजाओल गेल छल। मिथिलाक विद्वान सेहो पैघ संख्यामे उपस्थित छलाह। एहि बेर महाराजक आदेशसँ सर्वश्रेष्ठ विद्वानक हेतु एकटा सोनाक सिंहासन बनाओल

गेल छल। महारानी आ महाराजक इच्छा छलनि जे शास्त्रार्थमे विजयी भेलाक कारणेँ जे सर्वश्रेष्ठ विद्वान घोषित होयताह, हुनका ओहि सोनाक सिंहासनपर बैसाय विद्वान सभसँ दुशाला दियाओल जयतनि।

पूर्णिया जिलाक रसाढ़ ग्रामक पं० श्रीमणि ठाकुर सेहो ओहि पंडित-सभामे आमंत्रित छलाह। सभाक कार्य प्रारम्भ हेबाक पूर्वहि ओ ओहि सिंहासनपर जा कऽ बैसि गेलाह। महाराज सभामे उपस्थित भऽ गेल छलाह मुदा ओ हुनकहुँसँ एहि कार्यक लेल अनुमति नहि लेलथिन। हुनक ई कार्य ककरहु नीक नहि लगलैक। हुनके गामक वैयाकरण मतिकान्त ठाकुर हुनका लग जा हुनका कहलथिन—'एहि सिंहासनपरसँ अहाँ उठि जाउ। अहाँक काज नियम आ परम्पराक विरुद्ध अछि।'

श्रीमणि ठाकुर सगर्व कहलथिन—'हम सभामे उपस्थित विद्वान लोकनिकेँ देखिये कऽ एहि सिंहासनपर बैसल छी।'

मतिकान्त ठाकुर प्रश्न कयलथिन—'अहाँ यदि शास्त्रार्थमे हारि गेलहुँ ?'

श्रीमणि ठाकुर—'पराजित भेलापर हम अपन मुँह अहाँ लोकनिकेँ नहि देखायब।'

मतिकान्त—'अहाँकेँ बुझल अछि जे एहि सभामे बंगाल आ मिथिलाक चौदह सय विद्वान उपस्थित छथि।'

श्रीमणि ठाकुर—'खूब बुझल अछि। एहि सभामे उपस्थित सब विद्वानकेँ कहैत छियनि जे ओ हमरासँ शास्त्रार्थ करथु आ हमरा पराजित कऽ कऽ हमरा सिंहासनसँ उतारि देथु।'

मिथिलाक एक प्रतिष्ठित विद्वानसँ हुनक शास्त्रार्थ प्रारम्भ भेल। प्रश्नोत्तरक झड़ी लागि गेल। चारि-पाँच घंटा धरि प्रश्नोत्तर चलैत रहल। श्रीमणि ठाकुर अडिग रहलाह। एहन स्थिति आबि गेल जे हुनक प्रतिपक्षी लग आब प्रश्ने नहि बचि गेल छल। तखन नदिया-शान्तिपुरक एकटा अगड़-धत्त विद्वान हुनकासँ शास्त्रार्थ प्रारम्भ कयलनि। किछुए कालमे बंगाली विद्वानकेँ बुझयामे आबि गेलनि जे ओ हुनक जोड़क नहि छलाह। ओ शास्त्रार्थ समाप्त कऽ देलनि। श्रीमणि ठाकुर बैसल रहलाह जे आरो जे केओ हुनकासँ शास्त्रार्थ करय चाहथि से करथु मुदा केओ आगाँ नहि बढ़लाह।

रनिवासक लोक लेल सेहो ई शास्त्रार्थ देखबाक प्रबंध छलैक। पर्दा लागल रहैक आ ओहो लोकनि शास्त्रार्थक आनन्द लैत छलीह।

श्रीमणि ठाकुरक विजयसँ महाराज आनन्द-विभोर भऽ गेलाह। राजपंडित महाराजसँ परामर्श कऽ घोषणा कयलनि जे, आरो कोनो विद्वान यदि श्रीमणि ठाकुरसँ शास्त्रार्थ करय चाहथि तँ ओ आगाँ आबि शास्त्रार्थ प्रारम्भ करथु। मुदा केओ आगाँ नहि अयलाह।

राजपंडित—'महाराज ! आब अगिला कार्यक्रम प्रारम्भ करबाक आदेश देल जाय।'

महाराज—'अगिला कार्यक्रम लोककेँ बुझा दिऔक।'

राजपंडित—'विद्वद्गण ! हमरा लोकनिक परम्परा रहल अछि जे शास्त्रार्थमे जे पंडित विजयी होथि, हुनका सब पंडितसँ एहि सभामे दुर्वाक्षत दिआओल जायत। श्रीमणि ठाकुर ओहि सिंहासनपर बैसल रहताह आ महाराज सहित पंडित लोकनि हुनका दुर्वाक्षत देथिन।'

एहि बीच महारानीक संदेश पाबि महाराज हुनकासँ जाकऽ भेँट कयलथिन।

महारानी—'अगिला सालसँ पंडितक बीच शास्त्रार्थक अतिरिक्त प्रौढ़ विद्यार्थी लोकनिक बीच सेहो शास्त्रार्थक आयोजन कयल जाय।'

महाराज—'विजयी विद्यार्थीकेँ किछु पारितोषिको देल जेतैक ?' जिज्ञासा करैत बजलाह।

महारानी—'हमरा इच्छा अछि जे ओ विद्यार्थी जे विजयी घोषित होथि, हुनका चारि वर्ष शास्त्रक अध्ययन लेल काशी, नदिया-शांतिपुर अथवा जतय हुनका सुयोग्य गुरु भेटथि ओतय ओ पठाओल जाथि। एहन चारिटा विजेता चुनल जाथि आ पारितोषिक लेल राजक दिससँ चारि वर्ष धरि खर्च वहन कयल जाय।'

—'हमरा स्वीकार अछि। हम एखनहि एकर घोषणा करबा दैत छिऐक' प्रसन्नतापूर्वक महाराज बजलाह।

महाराज सभामे एलाह आ राजपंडितकेँ बजौलथिन आ कहलथिन—'राजपंडितजी, श्रीमणि ठाकुरकेँ दुर्वाक्षत देलाक उपरान्त ई घोषणा कऽ देल जाय जे अगिला वर्षसँ सोलहवर्ष धरिक विद्यार्थीक बीच सेहो शास्त्रार्थ होयत आ ओहिमे प्रथम चारि गोटाकेँ चुनल जायत तथा ओ जतय आगाँ विद्याध्ययनक हेतु जाय चाहथि से राजक खर्च पर जयताह आ चारि वर्ष धरि हुनका ई सुविधा उपलब्ध रहतनि।'

राजपंडित—'उपस्थित विद्वज्जन, आजुक समारोह आब समाप्ति पर अछि। आइ सभामे श्रीमणि ठाकुर विजयी भेलाह। अपने सब गोटासँ निवेदन अछि जे एहि शुभ अवसरपर हुनका अपने लोकनि महाराजक संगहि दुर्वाक्षत दियनि।'

दुर्वाक्षतक उपरान्त राजपंडित पुनः उठलाह आ घोषणा कयलनि—'महाराज आ महारानीक आदेशक अनुसार घोषणा कयल जाइत अछि जे अगिला वर्षसँ सोलह वर्ष धरिक विद्यार्थी लोकनिक बीच सेहो शास्त्रार्थक कार्यक्रम रहत जाहिमे विजयी प्रथम चारिक आगाँ अध्ययनक हेतु राजक दिससँ खर्च वहन कयल जायत। अपन रुचि आ सुविधानुसार जतय ओ विद्यार्थी लोकनि अध्ययन करय चाहथि ओ जयबा लेल स्वतंत्र रहताह।'

एहि घोषणासँ सभामे महाराज ओ महारानीक जयजयकार होमय लागल।'

पुनः राजपंडित उठलाह आ महाराजसँ निवेदन कयलनि—'महाराज, आब अनुरोध अछि जे ई स्वर्णसिंहासन जे विजयी पंडित लेल बनाओल गेल अछि ओ पं० श्रीमणि ठाकुरकेँ प्रदान कयल जाय।'

महाराज उठि कऽ श्रीमणि ठाकुर लग गेलाह आ हुनका ओ स्वर्णसिंहासन प्रदान कयलथिन। एकर अतिरिक्त एक हाथी तथा गढ़ी परसा मौजामे छओ सय बीघा जमीन ओ सिकटी मौजामे बारह सय बीघा जमीन हुनका विदाइ स्वरूप देल गेलनि।

सभाक कारवाइ समाप्त भेल आ लोकसभ महाराज आ महारानीक गुणगान करैत सभा-स्थलसँ प्रस्थान कयलनि। रस्तामे अनेक प्रकारक चर्चा करैत लोक अपन गन्तव्य दिस विदा भेल।

चिन्तामणि ठाकुर बजलाह—'औ रामसेवक बाबू, एहि वंशमे बहुत महाराज आ महारानी भेल छथि मुदा एहन विद्याव्यसनी संभवतः केओ नहि भेल छथि।'

रामसेवक बाबू—'संयोग तँ ई देखू जे दुनू पति-पत्नी समानरूपेँ विद्याव्यसनी छथि।'

चिन्तामणि ठाकुर—'सुनलहुँ अछि जे राजक [illegible] हिसाबकेँ मिलयबाक क्रममे एकटा अशुद्धिकेँ केओ नहि पकड़ि सकल छलाह। जखन महारानीक सोझामे ओकरा राखल गेल तँ ओ तुरत गलती निकालि देलथिन। महाराज आ देवानजी चकित रहि गेलाह।'

रामसेवक बाबू—'अहाँ नहि कहैत छी जे 'लीलावती'मे महारानी पारंगता छथि ? महारानीक पिता ते उत्कृष्ट विद्वान छथि आ महारानीक शिक्षा-दीक्षा अपन पिताक तत्त्वावधानमे भेल छनि ।'

चिन्तामणि—'हम प्रजागण सौभाग्यशाली छी जे हमरालोकनिकेँ एहन महाराज आ महारानी भेटल छथि । ई लोकनि 'गुरगण' कुलक रत्न छथि ।'

रामसेवक—'अच्छा, आइ जे सभामे घोषणा भेल जे सोलह वर्षसँ नीचाक विद्यार्थी लोकनिक बीच अगिला मासदँ नियमित रूपसँ शास्त्रार्थ होयत जाहिमे प्रथम चारि विद्वान वृहत् अध्ययन लेल चुनल जयताह, एकर की फल होयत ?'

चिन्तामणि—'एकर तँ ई फल होयत जे एखनहिसँ मेधावी विद्यार्थी लोकनि अगिला वर्षक प्रतियोगितामे भाग लेबाक लेल अध्ययनमे लागि जेताह । जे नहियों चुनल जेताह से अपन योग्यता तँ अवश्ये बढ़ा लेताह । ओना चारिटा होनिहार विद्वान प्रतिवर्ष राजक खर्चपर विशेष अध्ययनक हेतु सुयोग्य पंडितसँ पढ़ताह ।'

रामसेवक—'ई सामान्य बात नहि भेल अछि ।'

चिन्तामणि—'हमरा तँ बुझि पड़ैत अछि जे राजक आगाँ-आगाँ शिक्षामे बहुत सुधार होयत ।'

चिन्तामणि—'देखु, देखू जे दुर्भिक्षक कारणेँ आन-आन परगन्नामे लोक भूख मरि रहल अछि मुदा आन परगन्नामे महाराज आ महारानीक तत्परतासँ बहुत लोक मृत्युक मुखसँ बहराएल भेल अछि ।'

एकैस

महाराज आ महारानीकेँ एखन धरि कोनो संतान नहि भेल छनि । विवाह भेला तँ अनेक वर्ष बीतलनि । महारानी आइ महाराजकेँ कहलथिन 'विवाह होइत छैक संतानक लेल जाहिसँ वंशपरम्परा कायम रहय । मुदा दैव हमरापर रुष्ट छथि जे एखन धरि हमरा कोनो संतान नहि भेल । तेँ हमर आग्रह अछि जे अहाँ दोसर विवाह करू आ हमर विश्वास अछि जे ओहिसँ अहाँकेँ संतान होयत ।'

महाराजक इन्द्रनारायणक अधर पर विहुँसीक एक रेखा जकाँ झलकलनि । ओ इन्द्रावती दिस स्निग्ध दृष्टिसँ देखैत कोमल स्वरमे बजलाह—'विवाह

एकबेर होइत छैक । हम दोसर विवाहक विषयमे सोचियो नहि सकैत छी । जहाँ धरि संतानक बात छैक तँ सम्पूर्ण प्रजा हमरा लोकनिक संतान थिक । एक-दू संतानक माता-पिता नहि कहाय हमरा लोकनि हजारो-लाखो प्रजाक माता-पिताक पदपर छी । तेँ एहि लेल हमरा अनुरोध नहि करू ।'

इन्द्रावतीक आँखिमे मातृत्वक आकांक्षा अश्रु बनि कऽ जेना बाहर आबऽ चाहैत छलनि । ओ ओकरा संयत करैत बजलीह—'महाराज सर्वदा सहमत रहितहुँ हम राजक उत्तराधिकारीक हेतु एक संतानक कामना करैत छी ।'

—'एहि लेल अहाँ चिन्ता जुनि करू । हमरा सभक बाद भगवती जे करथि से होयत ।'

—'हमर हार्दिक अनुरोध अछि जे अहाँ विवाहक हमर प्रस्तावकेँ स्वीकार करू । प्रजावर्गकेँ सेहो सौख छैक जे ओ लोकनि राजकुमार अथवा भविष्यमे होमयवला महाराजकेँ देखय ।'

—'हम ई सोचियो नहि सकैत छी जे दू स्त्रीसँ लोक कोना सम्पर्क राखत ।'

महारानी बजलीह—'हम हुनक अभिभाविका रहबनि आ हमर तत्त्वावधानमे ओ अहाँक जीवन-संगिनी बनतीह । किछुए दिनमे अहाँकेँ हुनका सगे मधुर संबंध भऽ जायत आ पारस्परिक व्यवहार ठीक भऽ जायत ।'

किछु, क्षण धरि महाराज बजलाह—'अहाँकेँ मन अछि जे दसहपुरसँ पालकीपर अबयाक काल अहाँ कहने छलहुँ जे हमरा लोकनिक मिलन ओहुने अछि जेना आनन्द आ परमानन्दक मिलन हो । की एकर बादो अहाँ हमरा विवाह करबा लेल प्रोत्साहित करैत छी ? विवाहक बादे हमर हृदयाकाश आ क्षितिज एकमात्र इन्दुक प्रकाशसँ आप्लावित-आप्यायित भऽ गेल । आब ओहि स्थितिकेँ बदलि देब हमर सामर्थ्यसँ बाहर अछि ।'

महारानी विभोर होइत कहलथिन—'अहाँ तँ हमर छी । आब हम ओहि अधिकारसँ विवाहक अनुरोध कऽ रहल छी । अहाँकेँ विवाहक बाद कोनो विग्रहक आशंका रहय तँ ओकरा मनसँ निकालि दियऽ ।'

महाराज इन्द्रावतीक प्रस्तावकेँ सुनैत छलाह । तथापि ओ इन्द्रावतीक अनुरोधसँ आन्तरिक धर्मसंकट अनुभव करैत छलाह । ओ इन्द्रावतीक माथपर झुकि अपन हाथसँ हुनक केशक लटकेँ सरियाबऽ लगलाह । दुहू एक दोसराकेँ देखऽ लगलाह । दुहूक दृष्टि मिललनि तँ अकस्मात् दुहूक आँखिसँ अश्रुबिन्दु झलकि गेलनि ।

महारानी पुनः कहलथिन—'अहाँ ई हमर कहलाकेँ मानू ।'

महाराज मर्माहत भऽ उठलाह—'नहि, ई नहि भऽ सकैत अछि। यदि हम पुनः विवाह करबाक अहाँक अनुरोध मानि लैत छी तँ हमर ओ 'समर्पण' मिथ्या हएत। तेँ हमरा एहि लेल जिद नहि करू।'

महारानी—'अहाँक तर्क अकाट्य अछि मुदा राजक लेल, प्रजाक लेल आ संबंधीवर्ग लेल हम चाहैत छी जे अहाँकेँ एकटा संतान भऽ जाथि।'

महाराज—'यदि संतान हमरा लिखल नहि अछि तँ दोसरो स्त्रीसँ संतान नहि भऽ सकैत अछि। एकर उत्तर अहाँ दिअऽ।'

महारानी—'हमरा लोकनिपर भगवान एतेक नाराज नहि हेताह जे अहाँकेँ दोसरो स्त्रीसँ संतान नहि होयत।'

महाराज—'ई तँ अहाँक मनक भावना थिक। हम स्पष्ट रूपसँ अहाँकेँ कहि दैत छी जे शरीर दू अछि मुदा हमर आत्मा आ अहाँक आत्मा मिलिकऽ एक भऽ गेल अछि। अहाँ एतबहुपर हमर पुनर्विवाहपर जोर देब?'

महारानी निरुत्तर भऽ गेलीह। दुनू गोटे किछु काल चुप रहलाह। महाराज उठलाह आ महारानीक माथपर हाथ फेरय लगलाह। हुनक माथ सुँघलथिन आ अपन आँगुरसँ इन्द्रावतीक मुखमंडलकेँ समेटैत बजलाह—'की अहाँ शरत् पूर्णिमाक राति देखलिऐक अछि?'

—'हूँ' रानी निश्चल रहैत बजलीह।

—'तहिना आकाश एकहि गोट इन्दुक ज्योत्स्नासँ परिपूरित रहैत छैक। ओहि इन्दुकेँ प्राकृतिक कोनो शक्ति बदलि सकैत छैक की? अथवा ओहि आकाशमे दोसर इन्दुकेँ अँटाओल जा सकैत छैक की? हमरा एक इन्दुक रहैत दोसर इन्दुक प्रयोजन कोन? हम एही इन्दुक अमित ज्योत्स्नाक अमृत-सीकरक वर्षासँ निरन्तर स्नात-सिक्त होइत रही। की हमरा एहिसँ वंचित करऽ चाहैत छी? बाजू।' ई बाजि महाराज चुप भऽ गेलाह।

महारानी हर्ष-तुष्टिक भावमे दोलायमान होइत अपन पतिक अंकमे अपनाकेँ शिथिल कऽ देलनि।

एकर बाद महारानी महाराजक सोझाँमे कहियो पुनः विवाहक प्रस्ताव नहि रखलनि। प्रजावर्गकेँ सेहो बुझल छलैक जे महाराजकेँ महारानीसँ सर्वाधिक प्रेम छनि आ तेँ ओ दोसर विवाहक नामो नहि सुनय चाहैत छलाह।

बाइस

पूर्णियाक सुपरवाइजर डुकारेलक दरबार लागल छैक। फौजदार मुहम्मद अली खाँ सेहो उपस्थित छथि। यद्यपि डुकारेल दिवानी महकमाक देखभाल करबाक हेतु नियुक्त छथि आ मुहम्मद अली फौजदारी महकमाक, तथापि एखन दुनू गोटा मिलि-जुलि कऽ काज करैत छथि। सम्पूर्ण पूर्णिया जिलाक जमींदार लोकनि उपस्थित छथि। दरबारमे आइ विचारणीय विषय अछि – दुर्भिक्ष आ साहाय्य कार्य, विधि-व्यवस्था आ राजस्व-असूली।

निश्चित समय पर दरबारक काज आरम्भ भेल। मुहम्मदअली उपस्थित जमींदार सभकेँ सम्बोधित करैत कहलथिन—'अहाँ लोकनिकेँ अकालक विभीषिका आ प्रजाक मृत्युक जानकारी अछि? अन्न महग भऽ गेल अछि आ भेड़ओ कम करैत अछि। चोरी आ डकैतीक संख्यामे सेहो वृद्धि भेल अछि। रैयति विपन्नावस्थाक कारणेँ मालगुजारी देबामे अपन असमर्थता देखबैत छथि जकर फल ई होयत जे जमींदारो लोकनिकेँ अपन किस्त जमा करबामे कठिनाइ हेतनि। एहि समस्या सभपर विचार करबाक लेल आजुक दरबारमे अहाँ लोकनिकेँ बजाओल गेल अछि। अहाँ लोकनि प्रत्येक बिन्दुपर अपन विचार दी जाहिसँ समस्याक समाधानमे सहायता भेटय।'

गगनाक जमींदार एहि जिलाक सभसँ पुरान जमींदार छथि। हुनक वंशक लोक मुगल सम्राट हुमायूँक समयसँ गगनाक जमींदार होइत अबैत छथि। सर्वप्रथम ओ उठलाह आ अपन विचार व्यक्त करबाक क्रममे बजलाह–'हमरा लोकनिक आमदनीक स्थिति रैयते अछि। जखन वैह अकालक चपेटमे अछि तँ हमरा लोकनि अकाल-पीड़ितकेँ कोना सहायता करबै? हमरा सुनबामे आयल अछि जे महाराज इन्द्रनारायण राय अपन मुलुकक प्रजाक बीचमे खिचड़ि अथवा अन्य भोज्य पदार्थ बँटैत छथि। हम एकरा नीक बात नहि बुझैत छिऐक कारण जे ओ हमरा लोकनिकेँ अपन एहि काजसँ प्रजाक नजरिमे नीचाँ खसबैत छथि। हम एकरा बन्द करयबाक हेतु हुनका संवादो पठौने छलियनि। आइ ओ एहि सभामे उपस्थित छथि। हुनक समक्ष हम पुनः ओहि बातकेँ दोहरबैत छी। दोसर बात अछि जे हमरा लोकनि तँ राजस्व तखनहि जमा कऽ सकब जखन रैयति हमरा लोकनिकेँ मालगुजारी दिऐ। कम्पनी सरकारकेँ चाही जे ओ राजस्व असूली तखन धरि स्थगित राखय जखन धरि दुर्भिक्ष समाप्त नहि भऽ जाइत छैक। तेसर बात अछि विधि-व्यवस्थाक विषयमे। ई सत्य अछि जे विधि-व्यवस्थाक स्थिति बिगड़ि गेल

अछि । अपन-अपन छोटो मालक लेल लूटपाट आ डकैती प्रारम्भ भऽ गेल अछि । एहि लेल सभ जमींदार एकजुट भऽ अपन-अपन सीमाक रक्षा करथु आ जमींदारीक अन्दर चोर-चंडालपर जेठ-रैयतिक माध्यमसँ निगरानी रखबाक आ अपन सिपाही सभ द्वारा चोरी-डकैतीकेँ रोकबाक प्रयास करथु । वर्षा एखनहुँ नहि भेल अछि । अकालक मार दिनानुदिन प्रचंड भेल जाइत अछि । एहन स्थितिमे चोरी, डाका, छीना-झपटी आ हत्या आदिमे तँ वृद्धि हेबे करत । एकरा रोकब आवश्यक छैक ।'

जमींदार दुलार चौधरी बीचहिमे बाजि उठलाह—'हम एखन आश्वासन दैत छी जे हम अपन परगना सीमावारिदह दने सीमापर स्थित मोरंगसँ चोर-डकैतकेँ नहि आबय देबैक । फल होयत जे सीमा-पारक चोर-डकैतसँ अहाँ लोकनिक जमींदारी सुरक्षित रहत ।'

धर्मपुर परगनाक दरभंगा महाराजक प्रतिनिधि बजलाह—'हमर परगना तँ रौदीसँ सर्वाधिक पीड़ित अछि । हम तँ भूखल प्रजाकेँ खोअयबाक कोनो कार्यक्रम नहि चला सकैत छी । राजक कर्मचारीकेँ खोअयबाक की प्रबन्ध हेतनि, इहो चिन्ताक विषय अछि । राजस्वक किस्त सेहो हमरा लोकनि जमा नहि कऽ सकब । प्रजाक स्थिति एहन नहि छैक जे ओ एकोटा पैसा मालगुजारीक मदमे चुकता कऽ सकय ।'

कंदवा परगनाक जमींदार बजलाह—'हमर परगना विगत कैक वर्षसँ दाही आ रौदीसँ पीड़ित अछि । हम अन्न अथवा पैसासँ साहाय्य-कार्य करबामे असमर्थ छी । रैयतिसँ मालगुजारी नहि भेटबाक कारणेँ राजस्वक चुकती सेहो असम्भव बुझि पड़ैत अछि । महाराज इन्द्रनारायण राय भूखलहक बीच अन्न बँटैत छथि से हमरा पसिन्न नहि अछि । हमरा सुनबामे आयल अछि जे अन्न बँटबाक कार्यक्रम हुनक महारानी जोर दऽकऽ प्रारम्भ करौने छथिन मुदा एहिसँ तँ हमरा लोकनिक बेइज्जती भऽ रहल अछि ।'

आरो-आरो जमींदार सभ अपन-अपन विचार व्यक्त कयलनि । सभक बात सुनि इकारेल बजलाह—'हम तँ पूर्णियाक लेल एकदम नव व्यक्ति छी । खान साहेब अहाँ लोकनिकेँ आ इलाकाकेँ नीक जकाँ जनैत छथि । हुनकासँ विचार कऽ-कऽ हम एहि अकालसँ संबन्धित समस्यापर विचार करबा लेल अहाँ लोकनिकेँ बजौने छी । ओहि जमींदारकेँ कम्पनी दण्ड नहि देत जे समयपर राजस्व अथवा राजस्वक निर्धारित किस्त जमा नहि करताह मुदा एकर उचित कारण होयबाक चाही तथा इहो देखल जेतैक जे राजस्व चुकता करबाक हेतु जमींदार कतबा दूर धरि प्रयत्न कयने छथि ।

दोसर बात अछि विधि-व्यवस्था । दुर्भिक्षक स्थितिमे चोरी-डकैती बढ़िए जाइत छैक । चेष्टा ई होयबाक चाही जे प्रत्येक जमींदार अपन जमींदारीक सीमासँ अनठिया लोककेँ अथवा चोर-डाकूकेँ दोसर जमींदारीमे नहि जाय देथुन । यदि मोरंगसँ चोर-बदमाश तीरा खारिदह परगनामे आओत तँ एकरा लेल तीरा खारिदहक जमींदार जवाबदेह हेताह । श्रीपुर परगनासँ यदि चोर-डाकू अनका परगना जायत तँ महाराज इन्द्रनारायण राय जिम्मेवार होयताह । प्रत्येक गामक जेठ रैयतिपर चोरी-डकैती रोकबाक भार देल जाय । जमींदारक सिपाही सभ एहि संबन्धमे सावधान रहथु ।

तेसर आ सभसँ प्रमुख बात अछि अकाल पीड़ित लोकक बीच साहाय्य वितरणक व्यवस्था । खगड़ा अथवा धमदाहक जमींदारकेँ अकाल पीड़ित लोकक बीच अन्न अथवा भोजनसँ सहायता करब पसिन्न नहि छनि । एहिमे सरकार दिसतँ कोनो जोर जबरदस्तीक बात नहि छैक । दान लोक स्वेच्छासँ करैत अछि, दबावसँ नहि । हम एतबे बात कहब जे अहाँक पालकार लोक मरैत रहत, त्राहि-त्राहि करैत रहत तँ अहाँ भोजन कोना करब । तेँ जतबा संभव भऽ सकय ओतबा साहाय्य पीड़ित रैयतिकेँ देल जाय । इहो विचारणीय अछि जे एक दिस अन्नक भंडार जमा रहत आ दोसर दिस लोक मरैत रहत !'

इकारेल मुहम्मद अलीकेँ सेहो एहि अवसरपर किछु कहबाक हेतु निवेदन कयलथिन ।

मुहम्मद अली—'आजुक सभाक लेल जतबा आवश्यक छलैक से इकारेल बाजि गेलाह । हम एक बात पर जोर देब जे अहाँ लोकनि कम दिनमे उपजयबला फसिल सभ उपजयबापर ध्यान दिअऽ । एहि फसिल सभकेँ उपजयबामे अहाँ लोकनिक दिससँ रैयतिकेँ साहाय्य आ प्रोत्साहन देब आवश्यक ।'

खगड़ाक जमींदार—'से तँ हमहुँ नव चाहैत छी मुदा बिनु पानियेँ ई फसिल सभ हेतैक ?'

मुहम्मद अली—'अहाँ एक बेर पहसरा जाउ आ देखू जे महारानीक प्रयाससँ बहादुरिबाड़ीक भीतर उपजाओल फसिल सभ कोना लहलहा रहल अछि । नाना प्रकारक तरकारी लागल अछि । समय पड़लापर एहूसँ भूखक निवृत्ति हेतैक । खीरा, सजमनि, साग आदि प्रचुर मात्रामे लागल अछि । ई सेती सभ महारानीक देख-रेखमे चलि रहल अछि । छओ-सात हाथ गहीँरमे तँ पानि निकलैत छैक । पहसरा कचहरीक हातामे पचीस-तीसटा चुड़ुकी कोड़ल

गेल अछि । ओहिसँ पशुओक लेल पर्याप्त पानि भेटि जाइत छैक । माल-जालक लेल पानिक प्रबंध सेहो ओहिसँ भऽ जाइत छैक । सुर्यापुर परगनामे तँ एखनहुँ पाँचि हाथपर पानि निकलैत अछि । जे केओ भोजनालयमे खिच्चड़ि खाइत अछि ओ अपन शक्ति आ योग्यताक अनुसार कार्यो करैत अछि । अहाँ लोकनिक प्रयासमे दू मास यदि लोकक प्राण बचि जाय तँ तकर बाद किछुने-किछु अन्न प्राप्त होमय लागत । तेँ हमर निवेदन जे अहाँ लोकनि पहुराक महाराज आ महारानीक अनुकरण करू ।'

डकारेल बजलाह— 'हमरा लोकनिकेँ जे किछु करबाक छल से कहि सुनौलहुँ, जखवा दूर जिनकासँ जे संभव हो से करू । एहि दुष्कालमे प्रजाक प्राण बचबाक लेल जे, जे किछु कऽ सकी से करू ।'

दरबार समाप्त भेल आ दुनू अधिकारी जलालकेँ ध्यानमे रखैत अनावश्यक हाथी, घोड़ा, ऊँट, बड़द आदि बेचबाक आनि गेलाह । ओहि धनिक लोक-सभकेँ रुपैया छलनि ओ लोकनि तखने ई वस्तु सभ फौजदारक दफ्तरमे आ कऽ कीनि लेलनि । कहियो सपनहुँमे एहि वस्तुसभकेँ कीनब ओ लोकनि नहि सोचि सकैत छलाह । सूबेदार अलीवर्दी खाँक देल मोरपंखी नाओ आद बेचल गेल । आरो बहुत पलंग, तख्तपोश, कालीन आदि बेचल गेलैक । ई वस्तु सभ आब अनावश्यक बुझल जाइत छलैक । पाइ सभ कम्पनीक खजानामे जमा भेल गेल । आब घोड़ा, हाथी अथवा अन्य जानवरकेँ जे दाना देल जाइत छलैक से बचलै ।

तेइस

एक वर्ष भऽ गेल । वर्षाक एकोटा बुन्द नहि पड़ल अछि । मनुष्यसँ माल-जालक दशा बेसी खराब छैक । कतहु खाधि-पोखरिमे पानि नहि छैक, जतय माल-जाल पानि पीबि सकय । कतहु घास नहि छैक, जतय ओ मुँह रोपि सकय । पोखर-पीढ तय एक भेल छैक । एहि भयावह माल-जाल सभकेँ किननिहारो केओ नहि छैक । स्त्री-पुरुष अपन बच्चाकेँ बेचय चाहैत अछि मुदा केओ किननिहार नहि छैक । ईस्ट इण्डिया कम्पनी अहू अकालक समयमे मालगुजारी माफ करबा लेल तैयार नहि अछि । बंगालक नायब सूबेदार रेजा खाँ अंगरेज अफसर सभ बहुवाहिं लूटि रहल छथि, जे एहन भयानक अकालक समयमे जतबा राजस्व असूलल जा सकैत छल, से असूल कऽ लेल गेल छैक ।

ई मन्वन्तरिक अकाल नामी भऽ गेल । लोकसभ बजैत छलाह जे ओ लोकनि अपन जीवनमे एहन भयानक अकाल नहि देखने रहथि आ ने सुननहि रहथि । पूर्णियाक फौजदार मुहम्मद अली मुर्शिदाबादक नवाबकेँ प्रतिवेदन देलथिन जे लाखसँ अधिक लोक मरि चुकल अछि । प्रजाकेँ बचबाक बहुत प्रयत्न कयल गेल अछि आ एहि संबंधमे हवेली परगनाक महाराज आ महारानीक प्रयास स्तुत्य अछि । अवशिष्ट लोक रोगसँ पीड़ित अछि । माल-जालक मृत्यु सेहो अधिक संख्यामे भऽ रहल छैक । भुखमरी चलिये रहल अछि ।

सुपरवाइजर डकारेल ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ प्रतिवेदन पठौलथिन जे पूर्णिया शहरक स्थिति देहातसँ कम गंभीर नहि अछि । डकारेल कहिया अपन छलाह तकर तीन दिनुक भीतर एक हजारसँ अधिक मृतकक अंतिम संस्कार हुनका करय पड़ल छलनि । मुदा आब ई संख्या तँ अनेको गुणा बढ़ि गेलैक । मुर्दाकेँ हटायब एक समस्या छलैक । पूर्णिया शहरसँ सटले सौरा नदीक कातमे आलमगंज मंडी छलैक । ओतय आब केओ क्रेता अथवा विक्रेता देखबो नहि जाइत छैक । ओहि मंडीक मकानसभ खंडहरमे परिणत भऽ गेल छैक । ओहि बाजारमे नढ़िया, सियार आदिक डेरा सभ बनि गेल छैक । पूर्णिया शहरक पैघ भाग जंगलमे परिणत भऽ गेल अछि आ जंगली जानवरक निवास-स्थान भऽ गेल अछि । डकारेलक कहब छलनि जे पूर्णिया जिलाक दू लाख लोक एहि अकालमे मरि गेल । जखन मनुष्योक हेतु भोजन उपलब्ध नहि, तँ माल-जालक कोन कथा ! ई अकाल 1769 ईस्वीमे प्रारंभ भेल आ एक वर्षसँ अधिक समय धरि एकर भीषण प्रकोप रहल । वर्षा भेलहुपर अगिला खेतीक हेतु मवेशी कतयसँ उपलब्ध होइतैक ? मवेशी सभ तँ पानि आ चाराक अभावमे कालक ग्रास बनि गेल ।

मुदा एहनो कठिन परिस्थितिमे महाराज इन्द्रनारायण राय अपन प्रजाक संगे मानवताक व्यवहार रखलनि । महारानी इन्द्रावतीक दृष्टिमे बहुत हाथ छलनि । ओ महाराजकेँ कहथिन जे प्रजा बिनु राजा की ? तेँ राजमहलसँ, प्रजाकेँ भूखसँ बचबाक हेतु जे कोनो सहायता संभव छलैक, से देल गेलैक । लगान असूलीक हेतु जमींदार द्वारा रैयतिपर कोनो दबाव नहि देल गेलैक यद्यपि कम्पनी सरकार राजस्वक किस्तक रकममे कमी करबाक पक्षमे नहि छल ।

एक दिन अकालक गंभीरतापर विचार करबा लेल महाराज आ महारानीक बैसक भेल ।

महाराज निराश होइत बजलाह — 'वर्षाक तँ कोनो उमेद नहि बुझि पड़ैत अछि आ अकालक अवधि बढ़ले जा रहल अछि ।'

महारानी—'राजक भंडारमे जे संचित अन्न अछि, ओ तँ अकालक प्रचंडता बढ़तैक, अथवा यदि नहि देल जेतैक तँ ओ लूटि लेत। मुदा हम परामर्श देब जे मात्र अपाहिज आ अशक्त सभक बीच खैराती अन्नक वितरण हो। शारीरिक क्षमता वला लोक सभसँ काज करवाय ओकरा पारिश्रमिकक रूपमे अन्न देल जाय। हमर सुझाव अछि जे जमींदारीमे पानिक स्रोत बढ़यबाक व्यवस्था कयल जाय। बाग-बगीचा सेहो अधिकसँ अधिक लगाओल जाय। जँ आमक बगीचा प्रत्येक गाममे भऽ जाय तँ अकालक स्थितिमे, एक मात्र ओहूसँ लोकक गुजर भऽ जेतैक। खेती-बाड़ीक काज नहि रहने मजूर उपलब्ध अछि। तेँ भविष्यक लेल एखन अधिकसँ अधिक पोखरि, इनार सभ बनबा लेल जाय। पानिक सुविधा भऽ गेलासँ साग-पातपर पटौनीक द्वारा सेहो अन्न उपजाओल जायत। किछु अन्न तँ कम्मे दिनमे भऽ जायत।'

महाराज—'अच्छा, तँ हम ई काज मोहनीगढ़ीमे पोखरि कोड़यबासँ प्रारंभ करबाएब आ अहाँक नामपर ओ 'महारानी पोखरि' कहाओत आ पूर्णियाँसँ रौतारा बीच एकटा खूब पैघ पाँतर छैक ओतय आमक बगीचा लगवायब।'

महारानी—'अहाँ जे नामकरण करी मुदा एहन अनेक पोखरि खुनल जाय। प्रजाक बीच अल्पावधिमे होमयवला अन्नक बीया सभ वितरित कयल जाय। पोखरिमे माछक जीरा सेहो खसाओल जाय। एहि क्षेत्रक लोक तँ माछो खा कऽ किछु दिन काटि लेत।'

महाराज—'हम तँ अहाँक प्रस्ताव सभसँ चमत्कृत छी।'

महारानी—'यदि अकालक अवधि बढ़लैक तँ स्थिति आरो दुरूह होयबाक संभावना। हमरा लोकनि चैनसँ नहि रहि सकब। तेँ अविलम्ब हमरा लोकनिकेँ अकालक भयंकर परिणामसँ बचबाक प्रयासमे लागि जयबाक चाही। हमर तँ एहो विचार अछि जे एहने समयमे राजक विभिन्न स्थानमे शिवालय आदि बनाओल जाय। एखन प्रचुर संख्यामे मजूर उपलब्ध अछि। मन्दिर सभ बनि गेलासँ भजन-कीर्तनक माध्यमसँ ईश्वराराधनाक अतिरिक्त प्रजाक लेल मनोरंजनक साधन सेहो उपलब्ध भऽ जेतैक। मुदा सर्वाधिक पटौनी आ पेय जलक साधनपर ध्यान देल जाय।'

महाराज—'मुदा ई काज सभ तँ जनानी-जनाकचेसँ नहि होयत।'

महारानी—'ई नवीन योजना सभक कार्यान्वितिक भार राजक सुयोग्य अधिकारीकेँ देल जाय। एहि संबंधमे देवान रामनिहोरा सिंहसँ सेहो परामर्श कऽ लेल जाय।'

चौबीस

पूर्णियामे आब अकालक वेग घटि गेल छैक। किछु-किछु खेती-बाड़ी प्रारंभ भेल छैक मुदा माल-जालक मृत्युक कारणेँ लोककेँ असुविधा भऽ रहल छैक। एहि समस्याक समाधान लेल महारानी आ महाराज इन्द्रनारायण राय सक्रिय छथि। प्रजागण सेहो कर्ज लऽ कऽ खेतीक काजमे जुटि रहल अछि।

एहि बीच एकटा आन्दोलन पूर्णियामे प्रारंभ भेल अछि ओ थिक संन्यासी-आन्दोलन। ई पुरने आन्दोलन थिक मुदा बीचमे हमकि गेल छल। संन्यासी सभ जतय-ततय लूट-पाट सेहो करैत अछि आ झुंडमे पैदल वा घोड़ापर चलैत अछि।

एक दिन सुपरवाइजर डकारैल अपन बंगलामे बैसल छलाह। हुनका हरकारा आदिकेँ खबरि देलकनि जे पूर्णियासँ बारह कोसक दूरी पर कोशी नदीक चन्दवा घाट पर पाँच-छओ सय संन्यासी सभ एकत्र भेल अछि। ओ लोकनि अस्त्र-शस्त्रसँ सुसज्जित छल। तीर-धनुष, भाला-बर्छा, बन्दूक-तरुआरि आदिसँ ओ लोकनि लैस छल। सुपरवाइजर थानेदार सभकेँ संन्यासी सभक आवागमन पर ध्यान रखबाक हिदायत करने छलथिन। संन्यासी लोकनिक खबरि सुनतहि डकारैल आतंकित आ सशंकित भऽ गेलाह। एहन समयमे हुनका संन्यासी लोकनिक बनघटल सूचना भेटलनि जखन ओ सोचैत छलाह जे आब संन्यासी-आंदोलन पूर्णियामे समाप्त भऽ गेल अछि। अस्तु। ओ अपन सैनिक सहायक लेफ्टिनेन्ट सिनक्लेयरकेँ बजौलनि आ आदेश देलथिन जे ओ दू कम्पनी सिपाहीक संग चन्दवाघाट जाकऽ संन्यासीसभकेँ पकड़िकेँ हुनक समक्ष हाजिर करथु। सिनलेयर पलटनक संग चन्दवा घाटक लेल विदा भेल आ भिनसर होइत-होइत ओ ओतय पहुँचि गेल। संन्यासी सभक मानस होइत छलैक। जेहन हरकारासँ सूचना भेटल छलैक ओ लोकनि वस्तुतः हथियारबन्द छल। मुदा ओकरा लोकनिक संख्या अढ़ाइ सयसँ तीन सयक बीच छलैक। लेफ्टिनेन्ट सिक्लेयर अही पारसँ ओकरा सभकेँ ललकारलक आ हुकुम देलकै जे ओ लोकनि अपन हथियार राखि कऽ हाथ ऊपर उठाबय। ओ लोकनि पलटनक लोककेँ घबरा गेल आ सिनलेयरक आदेश मानि अपन हथियार सभ हुनका सुपुर्द कयलक। एकर बाद ओ ओकरा सभकेँ गिरफ्तार कऽ कऽ पूर्णियाक सुपरवाइजरक बंगलापर पहुँचल। आब सुपरवाइजरक समक्ष ई समस्या उठलैक जे एतबा आदमीकेँ जेलमे कोना खोआयल जाय। एतेक-एतेक आदमीकेँ जेलमे रखबाक प्रावधान

नहि छलैक आ ने कम्पनी सरकार एकरा आदमीक भोजनक हेतु राशिक सेहो प्रावधान नहि कएने छलैक ।

सुपरवाइजर संन्यासी लोकनिसँ वार्तालाप प्रारंभ कयलनि । ओ पुछलथिन जे तोरासभ एतेक पैघ संख्यामे किएक अयला कऽ रहल छह ?

संन्यासीक सरदार उत्तर देलथिन—'हम सभ माल्दहु जिलाक एक दरगाहमे प्रार्थना करबाक हेतु जा रहल छी । ओतय हमरा लोकनि चद्दरि चढ़ायब ।'

सुपरवाइजर—'तोरासभ हथियार किएक धारण कयने छह ?'

सरदार—'हमरा लोकनि पहिले बेर माल्दह नहि जा रहल छी । विगतवर्ष सेहो गेल छलहुँ मुदा कानाफकीर सभ हमरा लोकनिकेँ लूटि लेने छल । तेँ एहिबेर हमरा लोकनि हथियारबन्द भऽ तैयारीक संग चलल छी ।'

सुपरवाइजर—'तोरा सभ की नानाफकीर नहि छह ?'

सरदार—'नहि, हमरा लोकनि मदारी फकीर छी आ कन्नौजक रहनिहार छी । हमरा लोकनि लूट-पाट नहि करैत छी ।'

आब सुपरवाइजर ओकरा लोकनिकेँ जेल पठयबाक पक्षमे नहि छलाह । हुनक इहो उद्देश्य छलनि जे एकरा लोकनिक पाछाँ कम्पनी सरकारक किछु खर्च नहि होय आ ई लोकनि काबूमे सेहो आबि जाय । ई सभ सोचि सुपरवाइजर सरदारकेँ कहलथिन—'तोँ अपन पाँच आदमी जमानत पर दऽ कऽ आगाँ बढ़ि सकैत छह आ माल्दह जा सकैत छह मुदा तोरा लोकनिकेँ अनुशासित ढंगसँ जयबाक शर्तनामा करय पड़तह आ दोसर बात ई जे हम जे मार्ग माल्दह जयबाक निर्धारित करब, ओही रस्तेँ तोरा लोकनिकेँ जाय पड़तह ।'

ओ लोकनि पाँच लोककेँ जमानतपर छोड़ि आ शर्तनामा लिखि आगाँ विदा भेल । सुपरवाइजरकेँ जे ई चिन्ता छलनि से ओकरा सभकेँ कतय राखल जेतैक आ भोजनक की व्यवस्था हेतैक तकरो समाधान भऽ गेलैक । सुपरवाइजर एतबा अवश्य कयलाह जे ओ लेफ्टिनेन्ट गोवरनरक द्वारा रंगपुर, दिनाजपुर आ माल्दहक सुपरवाइजरकेँ एहि मदारी फकीर सभसँ सावधान रहबाक सूचना पठौलथिन । किछु दिन बाद ओ फकीर सभ माल्दहसँ घूरल आ अपन पाँचो संगीकेँ सुपरवाइजरक ओहिठामसँ छोड़ौलक आ कन्नौजक रस्ता लेलक ।

एहि संन्यासी-आन्दोलनक प्रसंगमे ठीठर झा आ पचकौड़ी सिंह वार्तालाप करैत छथि ।

ठीठर झा प्रारम्भ कयलनि—'औ पचकौड़ी बाबू, अहाँक गाम दिस संन्यासी आंदोलनक की हाल छैक ?'

पचकौड़ी सिंह—'हम नजरिसँ संन्यासी सभकेँ नहि देखलिऐक । परगना सुल्तानपुर भऽ गोटेक सए संन्यासी घोड़ापर सवार भऽ पश्चिम दिस साँझ राति भोरेस विदा भेल से सुनने छलहुँ ।'

ठीठर—'ओ सभ लूट-पाट सेहो करैत छैक ?'

पचकौड़ी—'लूट-पाट करैत तँ नहि देखने छिऐक मुदा इहो सुनबामे आयल अछि जे तीन-चारि टा संन्यासीकेँ सुपरवाइजर बकारेल पकड़बौने छथि ।'

ठीठर—'ई समाचार तँ हमहुँ सुनलहुँ अछि आ इहो पता लागल अछि जे महाराज इन्द्रनारायणक हरकारा सुपरवाइजरकेँ एहि संन्यासी दलक खबरि देलकनि ।'

पचकौड़ी—'तखन तँ ओ हरकारा इनाम पयबाक काज कयने अछि ।'

ठीठर वर्णन करय लगलाह—'सुपरवाइजर जमींदार सभकेँ आदेश देने छथिन जे संन्यासी अथवा फकीर, यदि झुंड बनाकेँ चलैत हो तँ ओकरा घेरि कऽ पकड़ल जाय आ सुपरवाइजरकेँ एहि बातक सूचना देल जाय । यदि ओकरा लोकनिक संख्या अधिक रहैक तँ यथाशीघ्र संबंधित परगनाक जमींदारकेँ आ सुपरवाइजरकेँ सेहो एकर सूचना भेटैक । एहि बातकेँ ध्यानमे राखि महाराज इन्द्रनारायण रायक हरकारा बिना समय नष्ट कयने सुपरवाइजरकेँ एकर सूचना देलकनि । महाराज इन्द्रनारायण राय निर्देश देलनि जे एहि संन्यासी सभसँ सतर्क रहब आवश्यक । ई सभ अतय-ततय खूब लूट-पाट करैत अछि । महाराजक सतर्कताक कारणेँ ई मदारी फकीर सभ पकड़ाएल । ई नहि जानकारी अछि जे ई संन्यासी सभ कहियो अथवा लूट-पाट करैत अछि । मुदा विगतवर्ष तँ मदारी फकीर सभकेँ संन्यासिये सभ लूटने छल जेना ओ लोकनि सुपरवाइजरकेँ कहलकनि । एक तँ अकाल आ ताहूसँ ई संन्यासी सभ । अकालहिक कारणेँ संभवतः ई संन्यासीक उत्पात शुरू भेल मुदा महाराज इन्द्रनारायण राय अपन जमींदारीमे एहि संन्यासी सभक नहि चलय देलथिन ।'

पच्चीस

पूर्णियासँ प्रतिमास सुपरवाइजरकेँ अस्सी हजार रुपैया मुंगेर पठबय पड़ैत छलनि। पूर्णियाक औसत वार्षिक राजस्व बारह लाखक लगभग छलैक। मुंगेरमे फौज रहैत छलैक जकर कमान्डर ब्रिगेडियर होइत छलैक। एहि ब्रिगेडक खर्चक हेतु पूर्णियासँ रुपैया पठयबाक प्रयोजन छलैक। आर्कॉटी अथवा नारायणी टाका बोरिया रूपमे भरिकऽ दू कम्पनी पलटनक संरक्षणमे मुंगेर पठाओल जाइत छलैक। आर्कॉटी रुपैया ओकरा कहल जाइत छल जकर ढलाइ आर्काट प्रान्तक टकसालमे होइत छल आ नारायणी रुपैयाक ढलाइ ढाकाक टकसालमे होइत छल आ ई दुनू प्रकारक सिक्काक प्रचलन पूर्णिया क्षेत्रमे छल। पूर्णियासँ मुंगेर जयबाक रस्तामे कखनहुँ एहनो स्थिति भऽ जाइक जे नदी-नालामे गाड़ी उनटि जाइक आ बोरा फटलासँ किछु रुपैया बाहरो निकलि जाइ। फौजी टुकड़ीक सामान आ रुपैयाक वहन करबाक हेतु प्रतिमास बीस-पचीस गाड़ीक आवश्यकता पड़ैत छलैक। गाड़ीवान पूर्णियासँ मुंगेर जयबाक हेतु तैयार नहि होइक। सुपरवाइजर महाराज इन्द्रनारायण रायकेँ गाड़ीक प्रबन्धक भार देलथिन। पूर्णियासँ मुंगेर जयबा आ घुरबामे गाड़ी सभकेँ पन्द्रह-बीस दिनुक समय लागि जाय तेँ कोनो गाड़ीवान खुशीसँ मुंगेर जायब नहि चाहैक। महाराज इन्द्रनारायण एकर व्यवस्था कऽ देलथिन। ओ प्रत्येक गाड़ीवानक घरपर ओकर अनुपस्थितिक अवधिक खर्च अगाउ दऽ दैत छलथिन आ ओकर परिवारपर एहि अवधिमे कोनो बेर-विपत्ति अयलापर समस्याक समाधान करैत छलथिन। एहि तरहेँ महाराजक सहायतासँ मुंगेर स्थित ब्रिगेडियरक दफ्तरमे रुपैया पठयबाक काज सम्पन्न होइत छल।

मुदा सुपरवाइजरकेँ एतबे टा समस्या नहि छलनि। सुपरवाइजर जखन फौजी टुकड़ीक कमान्डरसँ, जे प्रतिमास मुंगेरसँ अबैत छलैक, प्राप्तिक रसीद माँगथिन तँ ओ नहि दैत छलैक। ओकर कहब छलैक जे फौजी भेजबाक कारणेँ ओकर काज छलैक सुरक्षित रूपेँ रुपैया पहुँचा देब। रुपैया गनिकऽ लेब ओकर काज नहि छलैक। ओ अधिकसँ अधिक एतबे कऽ सकैत छल जे ई लिखिकऽ सुपरवाइजरकेँ दितैक जे एतेक बोरा ओ प्राप्त कयलक जाहिमे सुपरवाइजरक कहलाक अनुसार, रुपैया छलैक। कहियो नालामे गाड़ी उनटि जयबाक कारणेँ अथवा ब्रिगेडऑफिसमे रुपैया गनबामे गड़बड़ीक कारणेँ किछु रुपैया घटि जाइक तँ एकर पूर्ति सुपरवाइजरकेँ अपन वेतनसँ करय पड़ैत छलैक। रुपैयाक प्राप्तिक रसीद ब्रिगेडऑफिसक एकाउन्टेन्ट दैत छलैक।

सुपरवाइजर ड्यारेल एहि समस्याक समाधानार्थ बहुत चिन्तित रहथि। पहिने जिलासँ एतबा रुपैया बाहर नहि पठाओल जाइत छलैक, तेँ एहन समस्या उत्पन्न नहि होइक। सुपरवाइजर महाराज इन्द्रनारायण रायसँ एहि समस्याक समाधानार्थ विमर्श कयलनि।

सुपरवाइजर—'मुंगेर जे मुद्रा-प्रेषणक कार्य होइत अछि ताहिमे प्रतिमास हमर वेतनसँ किछु कटि जाइत अछि। कहियो ब्रिगेडऑफिसमे गनबाक गड़बड़ीक कारणेँ, किंवा कहियो बैलगाड़ी उनटि जयबाक कारणेँ, किछु रुपैया घटि जाइत छैक। सील कयल बोरामे रुपैया पठाओल जाइत छैक तथापि बोरा फाटि गेलापर गनबाक समस्या उत्पन्न भऽ जाइत छैक। बैलगाड़ी जयबा लेल तैयार नहि होइत छलैक। महाराज सहायतासँ एहि समस्याक तँ समाधान भऽ गेल मुदा प्रतिमास जे रुपैया घटि जाइत छैक एकर कोन उपाय हेतैक ?'

महाराज इन्द्रनारायण कहलथिन—'एकरो समाधान भऽ सकैत छैक मुदा अहाँक आदेशसँ ई होयत अथवा कम्पनी सरकारसँ एकर आदेश चाही ?'

सुपरवाइजर —'अहाँ पहिने योजना तँ कहू।'

महाराज इन्द्रनारायण—'मुर्शिदाबादक जगत सेठक माध्यमसँ ई काज भऽ जायत। हमरा जखन पूर्णियासँ बाहर रुपैया पठबय पड़ैत अछि, हम जगत सेठक माध्यमसँ ई काज करैत छी, मुदा एकरा लेल कमीशन देबऽ पड़ैत अछि। कहाँकेँ जतबा यातायात आ फौजक टुकड़ीपर खर्च होइत अछि, तकरासँ कम खर्चमे पूर्णियासँ मुंगेर रुपैया पहुँचि जायत।' महाराज आगाँ कहलथिन—'जगतसेठ मुर्शिदाबादमे रहैत छथि। हुनकासँ सम्पर्क स्थापित करय पड़त। ओ पूर्णियामे अहाँसँ रुपैया लऽ लेताह आ मुंगेर रुपैया पठायब हुनक काज रहतनि। अहाँ अथवा कमीशन कतेक लेताह सेहो बातचीत पहिनहि भऽ जयबाक चाही। अहाँक बहुत परेशानी बचि जायत।'

सुपरवाइजर—'ई खूब कहलहुँ। काल्हिएसँ हम एकर प्रबंधमे लागि जाइत छी। कम्पनीसँ सेहो आदेश लेबय पड़तैक।'

महाराज—'पूर्णिया तँ बाहरसँ रुपैया नहि अबैत अछि। एतय कोनो तेहन उद्योगधंधा सेहो नहि छैक। एतय राजस्वक जे रुपैया वसूल होइत छैक से एतहि यदि खर्च होइतैक तँ मूल्यस्तरमे कमी नहि होइतैक। मूल्यस्तरमे कमी भेलासँ अन्नक भाव एकदम नीचाँ खसि पड़ैत छैक। सिक्काक बाहर निर्यात भेलाक कारणेँ एहन स्थिति होइत छैक। एकर फल ई होइत छैक जे रैयतिकेँ अन्न बेचि मालगुजारी देबाक कष्ट उठबय

पड़ैत छैक। एक रुपैया भेल ओतेक पहिलुका तुलनामे अधिक अन्न देबऽ पड़ैत छैक। एकर अर्थ ई भेल जे वस्तुतः रैयतिक मालगुजारी आ सरकारक राजस्व बिनु बढ़ौनहुँ, बढ़ि गेल छैक। दोसर शब्दमे दू मन धानक लेल पहिने एक रुपैया भेटैत छलैक तँ बादमे तीन मन अथवा ओहिसँ अधिक धान एक रुपैयामे बिकए पड़ैत छैक। रैयति सामान्यतः अन्न बेचि कऽ रुपैयाक प्राप्ति करैत अछि आ ओहिसँ मालगुजारीक चुकता होइत छैक। सिक्काक कमीसँ सेहो रैयति कष्टमे रहैत अछि। मुंगेर जे प्रति मास अस्सी हजार रुपैयाक निर्यात होइत छैक ओहिसँ पूर्णियाक मूल्यस्तर नीचाँ खसैत छैक। मूल्यस्तरक स्थायित्वकेँ ध्यानमे राखि एहि समस्यापर विचार करब आवश्यक।'

सुपरवाइजर डकारेल—'हम सैफ खाँ फौजदारक समयक अभिलेख देखने छिऐक। ओ 1722 ईस्वीमे लगभग तीनवर्ष धरि पूर्णियाक फौजदार रहल छलाह। ओहि समयमे जिलासँ जे आमदनी होइत छलैक से सामान्यतः एत्तहि खर्च होइत छलैक आ तेँ मूल्य-स्तरमे घट-बढ़ नहि होइत छलैक मुदा आब तँ स्थिति बदलि गेल छैक आ एहि कारणेँ रैयतिकेँ कठिनाइक अनुभव करय पड़ैत छैक। हम कम्पनीक उच्चाधिकारी सभसँ एहि समस्यापर विचार-विमर्श करब।'

महाराज—'मुंगेर रुपैया पठयबाक हेतु सर्वोत्तम उपाय छैक जे ई जगत सेठक द्वारा पठाओल जाय। एतय हुनक एजेन्टकेँ सेहो रुपैया दऽ कऽ हुण्डी प्राप्त कऽ लेल जा सकैत छैक आ ओही हुण्डीक आधारपर ब्रिगेडियरक कार्यालयमे चुकती भऽ जेतैक। अन्यथा सिक्का पठयबामे बहुत परेशानी छैक आ जोखिम सेहो।' महाराज आगाँ कहलथिन—'एक बेर किछु वर्ष पूर्व पूर्णियासँ खजाना राजमहल जाइत छलैक। रस्तामे नवाबगंज लग खजाना लूटि लेल गेलैक। बंगालक नवाबकेँ जखन एकर सूचना भेटलनि तँ ओ बहुत नाराज भेलाह। ओ आदेश देलथिन जे घटना-स्थलपर तुरत एक नव बस्ती बसाओल जाय। एतेक जल्दी बस्ती कोना बसाओल जायत, तँ हाजतमे जतबा अपराधी छल तकरा सभकेँ कहल गेलैक जे यदि ओ लोकनि नवाबगंजमे अपन घर बनाबथि तँ ओकरा लोकनिक अपराध क्षमा कऽ देल जेतैक। किछुए दिनमे नव बस्ती बसि गेल आ एहि निर्जन स्थानपर आब कोनो भय नहि रहि गेलैक। ओहि बस्तीक नाम नवाबगंज पड़ल। हमर कहबाक अभिप्राय ई अछि जे सिक्काक ढुलाइपर रुपैया पठयबामे बहुत बखेड़ा छैक। तेँ बैंकर जगत सेठक सहायता लेल जा सकैत अछि।'

डकारेल—'हम अहाँसँ सहमत छी। अहाँक सुझाव बहुत उत्तम अछि। हम आब एही तरहेँ मुंगेर रुपैया पठयबाक प्रबंध करब। कम्पनी सरकारसँ आब एहि संबंधमे लिखा-पढ़ी करैत छी।'

छब्बीस

आब गुस्तावस डकारेल आब कोनो आन ठाम पदस्थापित भेलाह। भू-राजस्वक असूली आ निगरानीक हेतु ईस्ट इण्डिया कम्पनी आब दोसर तरहक प्रणालीक प्रबंध कयलक। डकारेल जखन आयल छलाह तँ हुनक पदनाम छलनि 'पर्यवेक्षक' अथवा 'सुपरवाइजर'। 1772 ईस्वीमे सुपरवाइजरक पदनाम बदलिकेँ कलक्टर कऽ देल गेलैक आ शीघ्रे हुनका लोकनिकेँ जिलासँ हटा लेल गेलनि। नव प्रणालीमे राजस्व असूलीक काज लेल छिटु-फिटु किछु जिला कऽ अनेक 'रेवेन्यू काउन्सिल'क स्थापना कयल गेल। एहि प्रकारेँ बिहार, बंगाल आ उड़ीसामे रेवेन्यू काउन्सिलक काफी संख्या भऽ गेलैक। पूर्णिया आ दिनाजपुर एक रेवेन्यू काउन्सिलमे राखल गेल। एहि काउन्सिल सभक तत्वावधानमे राजस्व असूलीक काज होमए लागल। जिलामे सुपरवाइजरक स्थानपर आब भारतीय दिवानक नियुक्ति कयल गेलैक। एहि नियुक्तिक पाछाँ रहस्य ई छलैक जे कलक्टर लोकनि ओहि देशसँ अबैत छलाह जतय सत्ताधिक स्थापना भऽ चुकल छलैक आ हुनका लोकनिकेँ ई पता नहि छलनि जे राजस्व कर्मचारीगण प्रजापर बर्बरतापूर्ण अत्याचार करए। एहन स्थितिमे अत्याचार संबंधी जानक हेतु एहीठामक लोककेँ उपयुक्त बुझल गेल आ तेँ यूरोपियन पर्यवेक्षकक स्थानपर भारतीय 'दिवान'क नियुक्ति भेल। ई दिवान लोकनि रेवेन्यू काउन्सिलक मातहत काज करैत छलाह।

महाराज इन्द्रनारायणक जमींदारी हुनके हाथमे रहल। ई हुनके काज रहलनि जे ओ अपन रैयतिसँ मालगुजारी असूल कऽ कऽ ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा जिलाक लेल नियुक्त रेवेन्यू फार्मरक हाथमे जमा करथि। हिनक जमींदारीमे कतबा राजस्व असूल कयल जाय, ई ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा निर्धारित कऽ देल गेलैक। महाराज इन्द्रनारायणकेँ यदि अकाल अथवा आनो कारणेँ कहियो प्रजासँ मालगुजारी असूल नहि होइत तँ ओ अपन राजकोषसँ राजस्व चुकता कऽ दैत छलथिन। अभिलाषर्ग नीक

फाजिल भेलापर प्रजासँ मालगुजारी असूल कऽ लैत छलाह। महाराजक एहि प्रकारक नीतिसँ ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकारी लोकनि संतुष्ट रहैत छलाह।

अंगरेज शासक लोकनि 'राजस्व प्रशासन' मे अनेक प्रकारक प्रयोग कयलनि। अहिमे एक वर्षक हेतु जमींदारी, रेवेन्यू फार्मर अर्थात् राजस्व ठिकेदारकेँ ठीका पर देल जाइत छलैक। सर्वाधिक बोली लगाय वलाकेँ ठीका भेटैत छलैक। तकर बाद ई ठीका पाँच वर्षक रूप भेलैक। एहिमे रैयतिक मालगुजारी देबाक क्षमता नहि देखल जाइत छलैक। जे ठिकेदार सबसँ अधिक देलक, तकरे हाथेँ जमींदारी बन्दोबस्त कऽ देल जाइत छलैक। राजा प्रकारक पुरान जमींदार सब अपन रैयतिपर अत्याचार नहि कऽ सकैत छलाह मुदा ठिकेदार सभकेँ तँ रैयति लेल कोनो मोह नहि छलैक आ तेँ ईस्ट इण्डिया कम्पनीक ध्यान ठिकेदारसँ हटि पुरान जमींदार सभ दिस गेलैक आ हुनका लोकनिकेँ आब प्राथमिकता देल जाय लगलनि। एहि सिद्धान्तकेँ ध्यानमे रखैत पाँच दस वर्षक लेल ठीका देल गेलैक। मुदा एकर पहिनहि बहुत राजपरिवार सभ बकेल राजस्व नहि देबाक कारणेँ विछिन्न भेल। गदन्दरा, मोतीलाल आदि कलकत्तासँ पूर्णिया आबि राजस्व ठिकेदार बनल छलाह। मुदा ई सभ व्यवस्था कऽ कऽ जमींदार लोकनिक संग 'चिरस्थायी प्रबंध' कऽ देल गेल। महाराज इन्द्रनारायण कहियो अपन जमींदारीसँ बेदखल नहि भेलाह। ईस्ट इण्डिया कम्पनीक शासक लोकनि हिनका जमींदारी हिनके हाथेँ बन्दोबस्त करैत रहलाह। पूर्णियाक सभसँ पैघ जमींदार होयबाक कारणेँ आ समयपर राजस्व चुकता कऽ देबाक कारणेँ ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकारीगण ई नहि चाहैत छलाह जे कम्पनीकेँ हुनक संग कटु संबंध भऽ जाइक। एहि प्रकारेँ संकामित कालमे सेहो अपन योग्यता आ स्वभावक कारणेँ महाराजक जमींदारीपर कखनहुँ कोनो प्रकारक आँच नहि आयल।

सताइस

महाराजक राजक संचालन सुचारु रूपसँ भऽ रहल छल मुदा 1784 ईस्वीमे एकाएक भयानक विपत्ति आयल। महाराज इन्द्रनारायण राय 'फोर्टविलियम' मे लम्बित एक मोकदमाक सम्बन्धमे कलकत्तासँ बजाओल अपन वकील

पचासराससँ विचार-विमर्श करैत छलाह। हुनक छातीमे जोरसँ दर्द उठलनि आ ओ बेचैनीक अनुभव करय लगलाह। हुनका अन्तःपुर लऽ जायल गेल। राज-वैद्यकेँ बजाओल गेल। किछुकाल धरि ओ बेहोश रहलाह। उपचारक पश्चात् ओ आँखि खोललनि। महारानी हुनकि लग बैसल छलथिन। परि-चारक आ परिचारिका सभ महाराजक सेवामे लागल छलनि।

किछु स्वस्थताक अनुभव कयलापर महारानीकेँ महाराज कहलथिन, 'आब हम नहि बाँचब। दुःखक विषय ई अछि जे हमरा लोकनिकेँ कोनो संतान नहि अछि। एहन स्थितिमे राजसंचालनक सभ भार अहींक माथ पर रहत। हमरा विश्वास अछि जे अहाँ अपन योग्यताक बलपर सभ काज सुचारुरूपसँ कऽ लेब। राजक सिलसिला सभ तँ बनले अछि मुदा विशेष परिस्थितिमे अहाँकेँ स्वयं निर्णय लेबऽ पड़त।'

महारानी विह्वलतासँ कहलथिन—'अहाँ हमरा ई सभ किऐक कहैत छी? अहाँकेँ किछु नहि होयत।'

महाराज—'हमरा बाजऽ दिअऽ; आरम्भमे किछु स्वार्थी तत्वसभ बाधा कऽ सकैत अछि मुदा कर्मचारीगण सभ अहींक संग देत। एहि राजमे प्रजाकेँ कहियो सताओल नहि गेल छैक। ओकर सुख-सुविधाक सतत् राज दिससँ ध्यान राखल गेल छैक। महाराज नमर सिंहसँ आइ धरि एहि राजक कोनो शासक प्रजापर कोनो अत्याचार नहि कयने छथि।'

ई कहैत-कहैत ओ पुनः कमजोरीक अनुभव करय लगलाह। महाराज लगभग छओ मास दुःखिते रहलाह। सम्पूर्ण अन्तःपुर आ राजदरबार तथा प्रजागण चिन्ता-आशंकामे डूबल रहल। जमींदारीक कार्य निष्पादनमे सेहो सुस्ती आबि गेलैक आ तज्जन्य मालगुजारीक असूलीमे सेहो कमी भऽ गेलैक, आ फलस्वरूप कम्पनीक राजस्वक किश्तक चुकतीमे विलम्ब होमय लगलैक।

एक दिन हठात् मुहलहिमे महाराजक प्राणान्त भऽ गेलनि। चारू कात हाहाकार मचि गेल। परिजन आ प्रजावर्गमे शोक व्याप्त भऽ गेल। राजक प्यादा आ हरकारा सभकेँ दौड़ा कऽ प्रत्येक परगनाक चौधरी सभकेँ एकर सूचना पठाओल गेल आ दू दिनुक अभ्यन्तर हुनका लोकनिकेँ मुख्यालय पहुँच-बाक आदेश प्रसारित कयल गेल। राजक देवान रामकिशोर सिंह महाराजक अन्तिम संस्कारक प्रबन्धमे लागि गेलाह।

महाराजक दाह-क्रियाक प्रबन्ध होमय लागल। चानक चिता बनाओल गेल। सुगन्धित तेल, गायक घी आदि वस्तु सभ हुनक चिता पर देल गेल आ

महलमेँ सटले कौशिकी घारमे हुनका दाह भेल। सम्पूर्ण दरभंगाक लोक महाराजकेँ एक काठी देबाक उद्देश्यसँ उमड़ि पड़ल। महाराजकेँ मुखाग्नि दैत देरी चिता धधकि उठल आ किछुए कालमे महाराजक दिव्यशरीर भस्मरूपमे परिणत भऽ गेल।

महारानी आब विधवा भऽ गेलीह। महलक बूढ़-पुरान स्त्रिगण सभ हुनका सान्त्वना दैत रहलीह। पाँचम दिन महाराजक अस्थिसंचय भेल आ गंगामे ओ प्रवाहित कयल गेल।

किलाक आस-पास जमींदार, राजक प्रमुख रैयतिसभ आ कुटुम्बसभ किलामे आबय लगलाह। पूर्णियाक अन्तिम फौजदार मुहम्मद अली खाँ अवकाश प्राप्तिक बाद पूर्णियेमे बसि गेल छलाह। हुनक जेठ पुत्र खानबहादुर मुहम्मद अली खाँ सेहो किलामे अयलाह।

महारानी तीन दिन धरि निराहार रहलीह। हुनका अपन जीवन भार बुझि पड़नि। महाराज आ महारानीकेँ भगवान सभ किछु देने छलथिन मुदा संतान नहि। महाराजक जीवनहिमे संतानक हेतु बहुत प्रयत्न कयल गेल मुदा भाग्यकेँ के मेटि सकैत अछि। महाराज ई चिन्ता लऽ कऽ मुइलाह जे महारानीकेँ देखनिहार केओ योग्य लोक नहि। हुनक ससुरक लोक पैघ संख्यामे हवेलीमे रहैत छलाह मुदा महाराजकेँ हुनका लोकनिसँ कोनो आशा नहि छलनि। हुनक ससुर सेहो स्वर्गीय भऽ गेल छलाह। हुनका यदि आशा छलनि तँ महारानिहिक योग्यता पर आ तेँ ओ अपन अंतिम कालमे महारानीकेँ जटिल समस्याक समाधानार्थ स्वयं निर्णय लेबाक परामर्श देने छलथिन। संबंधीवर्गमे अधिक महाराज महारानीकेँ प्रजापर भरोस करबाक विचार देने छलथिन।

आब सबकेँ महाराजक श्राद्धक हेतु सक्रिय होयबाक छलनि। विभिन्न परगनाक चौधरी चीज-वस्तु जुटयबामे लागि गेलाह। देवान रामनिहोरा सिंह ड्योढ़ी सुपरिन्टेन्डेन्ट सेवाराम मिश्र आ राज पंडितक सहायतासँ नोत-पाता पठयबाक सूची तैयार कयलनि। महाराजक नौरियाक देयाद लोकनिकेँ विशेष दूत द्वारा श्राद्धक प्रबन्धक हेतु अनुरोध कयल गेल। ओ लोकनि पहुँचि अयलाह आ श्राद्ध अवधिमे ओतहि रहलाह।

जेहन महाराजक श्राद्ध होयबाक चाहैत छल, ताही रूपेँ धूमधामसँ श्राद्ध सम्पन्न भेल। महारानीकेँ खूब यश भेटलनि। दान, उत्सर्ग, भोज, विदाइ आदि राजक परम्पराक अनुरूप भेल। घरपर आ आङनमे जे वस्तु सभक

उपयोगमे अबैत छल से उत्तम कोटिक छलैक। उत्तम कोटिक गाय आ बाछी सभ एहि अवसर पर दान कयल गेल। महापात्रकेँ आर वस्तुक अतिरिक्त एकटा हाथी सेहो दानमे भेटलनि। महाराजक फिलखानामे ओहि समयमे एक सय हाथी छलनि आ ओहिमेसँ एकटा उत्तम हाथी श्रीविष्णु हुनका भेटलनि आ हाथीक पालनक हेतु पचबीघा जमीन देल गेलनि।

महारानी श्राद्धक अवसर पर एक विशेष काज कयलनि। ओ प्रत्येक परगनाक मुख्यालयमे एकटा संस्कृत विद्यालयक स्थापनाक घोषणा कयलनि। भवन निर्माणक खर्च आ अध्यापकक वृत्ति सभ राज द्वारा वहन करबाक घोषणा कयल गेल। किन्तु लोक महारानीक एहि विचारसँ सहमत नहि छलाह। देवान रामनिहोरा सिंहक कहब छलनि जे महाराजक दुःखितावस्थामे राजक आमदनी पर सेहो आघात पड़ल छैक आ राजस्वक कैकटा महिनवारी किस्त बाकी पड़ि गेल छलैक आ तेँ देवानजी राज पर नव खर्च जोड़बाक पक्षमे नहि छलाह।

महारानीकेँ सेहो एहि विचारसँ अवगत कराओल गेल मुदा हुनक दृढ़ आदेश छलनि जे प्रत्येक परगना-मुख्यालयमे विद्यालयक स्थापना कयल जाय। हुनक कहब छलनि जे महाराजक पुण्यस्मृतिक लेल ई काज आवश्यक। एहि श्राद्धक लेल राजक सर्वेक्षण कोन-कोन मदमे कटौती कयल जाय, देवानकेँ महारानी तकर सूची बनयबाक आदेश देलथिन। महारानीक तर्क छलनि जे विद्यालयक स्थापना महाराजक स्मृतिसँ जुड़ल रहत आ राज्यमे विद्याक प्रसार होयत। महाराज विद्याप्रेमी छलाह आ तेँ एहि काजसँ हुनक आत्माकेँ शांति भेटतनि। महारानी अपन तर्कपर अडिग रहलीह आ विद्यालय सभ स्थापित भेल। मिथिलाक विभिन्न भागसँ पंडित लोकनिक आवेदन-पत्र आयल आ महारानी हुनका लोकनिक योग्यताक जाँच करबाय हुनका लोकनिकेँ विभिन्न विद्यालयमे नियुक्त कयलनि। हुनका लोकनिक वृत्तिक सेहो प्रबन्ध कऽ देल गेल।

महाराजक श्राद्धक अवसरपर राज्यमे जतेक अपंग आ निराश्रित स्त्री-पुरुष सभ छल, तकरा सभकेँ कपड़ा देल गेल। जेठरैयति लोकनिक परामर्शसँ प्रत्येक गाममे एहन व्यक्ति जे कोनो रोजगार—कुटीर उद्योग-धंधा—करय चाहैत छल मुदा ओकरा पूँजीक अभाव छलैक, बीस-बीस रुपैया पूँजीक रूपमे देल गेलैक। एहि समयमे पूर्णियामे एक टाकामे ढ़ मन उत्तम कोटिक धान भेटैत छलैक आ गोटधान एककर ढ़िगुना भेटैत छलैक। तेँ कोनो गृहउद्योग प्रारंभ करबाक लेल बीस टाकाक राशि कम

नहि छलैक। अपन पतिक मृत्युक बाद महारानीक ई प्रथम प्रशासकीय निर्णय रहल छलनि।

अठाइस

ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा 'दिवान'क पद जिलासँ उठा देल गेल छल। आब कलक्टरक पदनाम 'मुख्य' भऽ गेल छलैक मुदा किछुए वर्ष लेल। तकर बाद जिलाक मुख्य प्रशासक 'कलक्टर' कहबऽ लगलाह। महाराजक मृत्युक समय एस० सी० हिटली जिलाक 'मुख्य' छलाह। महाराजक दिवंगत भेलाक समयमे हुनक जमींदारीक स्थिति ठीक नहि छलनि।

महाराजक मृत्युक पूर्व महारानी प्रत्यक्षरूपेँ शासनमे भाग नहि लैत छलीह। हुनका लेल एतेक पैघ जमींदारीक व्यवस्था सामान्य बात नहि छल। हुनका जमींदारी-संचालनक सेहो कोनो विशेष ज्ञान नहि छलनि। महारानीक नैहर अथवा तकर पास-पड़ोसक बहुत अमला लोकनि राजक सेवामे छलाह मुदा राजक श्रीवृद्धि दिस हुनका लोकनिक ध्यान नहि छलनि। ओ लोकनि बुझैत छलाह जे आब ई राज नसीबसँ भऽ गेलैक आ तेँ अवैध रूपेँ जतबा आमदनी निजी स्वार्थक पूर्तिक लेल कऽ सकी से करी।

महारानी सभटा बात बुझैत छलीह मुदा ओ हिनका लोकनिसँ झगड़ा नहि करए चाहैत छलीह। प्रत्यक्षरूपेँ ने महारानी एहि सभ अमलाकेँ हितैषीक रूपमे उपस्थित करथि मुदा राजक उन्नतिपर हुनका लोकनिक ध्यान नहि छलनि। रैयतिसँ जे मालगुजारी असूल कयल जाय ताहिमे गड़बड़ी होमय लगलैक आ जतबा असूल होयत, ओतबा राशि राजक खजानामे जमा नहि होइत। फलतः सरकारक राजस्वक किस्त समय पर जमा नहि भऽ सकैक। महारानी जे किछु सुधारक काज करथि ताहिमे अमला लोकनि बाधा उपस्थित करथिन। राजक किछु अमला आ किछु अधिकारी लोकनि सोचय लागल छलाह जे ओ लोकनि जे करताह सैह हेतैक। महारानीक नैहरक आ अन्यान्य कुटुम्बगण ई सोचय लागल छलाह जे महारानी तँ अबला छथि आ सैह अवसर अछि जे राजक आयक मुख्यांश हुनका लोकनिक वंशमे पहुँचि जाइत।

तत्कालीन पूर्णियाक मुख्य मिस्टर हिटली महाराजक मृत्युक किछुए समय बाद 'राजस्व पर्षद'केँ लिखलक जे अमला लोकनि जमींदारीक सुव्यवस्था

करबामे महारानीकेँ बाधा उपस्थित करैत छथिन। महाराजक मृत्युक बाद दृढ़तापूर्वक जमींदारीक शासन करब आवश्यक छलैक। महारानी सतत राजक उन्नतिक हेतु सुधारक योजना बना सोचथि मुदा अमला लोकनि महारानीक मुँहपर एक तरहक बात कहथिन आ काजक बेरमे आन तरहक रस्ता अपनाबथि। मुदा महारानी अपन चाटुकार अमला सभकेँ कम्मे दिनमे चीन्हि गेलथिन।

मिस्टर हिटलीक ई मत छलनि जे अमले लोकनि जमींदारीक शासन-सुधारमे बाधा करैत छथिन। महारानीक आत्मीय लोकनि जे अमला वा राजक अधिकारी वर्गमे छलाह, राजक आमदनी हड़पैपर लागल छलाह। मिस्टर हिटली अपन सूत्रसँ एहि विषयक जानकारी प्राप्त कयने छलाह आ तेँ ओ महारानी लग राजक अमलामे परिवर्त्तन करबाक प्रस्ताव देने छलथिन। हुनकर सोचब छलनि जे शासनमे कमजोरी भेलासँ महारानी सरकारक राजस्वक किस्त समयपर दाखिल नहि कऽ सकलीह आ वस्तुतः राज समयपर किस्त दाखिल करबामे पिछड़ि रहल छल।

हिटली एहि बात लेल सशंक छलाह जे रैयतिसँ महारानी मुस्तैदीसँ मालगुजारी असूल कराबथि। एहि कारणेँ ओ ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ सुझाव देने छलथिन जे महारानी अमलामे परिवर्त्तन करथि। किन्तु हिटली एहि संबंधमे जे कोनो प्रस्ताव महारानीकेँ देथिन ओहिपर ओ अपन प्रतिक्रिया व्यक्त नहि करथि आ तेँ ओ सोचथि जे महारानीकेँ अपन अमलाक विरुद्ध जयबाक साहस नहि छनि। मुदा वस्तु-स्थिति विपरीत छल।

राजक किस्त समयपर दाखिल नहि भेलाक कारणेँ, हिटली ईस्ट-इण्डिया कम्पनीक अधिकारीकेँ ई प्रस्ताव देलथिन जे महारानीक जमींदारीक हेतु एक 'सेजावल' नियुक्त कयल जाय। ई एक एहन कर्मचारी होइत छल जे राजक तहसीलदार द्वारा जे मालगुजारी असूल भऽ कऽ आबय से कोनो अधिकारी लग पठा देल जाय, राजक खजानामे नहि पठाओल जाय। सरकारक राजस्वक किस्तक रुपैया पूरा भऽ गेलापर शेष राशि ओ नियुक्त अधिकारी राजक खजानामे पठा देथिन। मुदा हिटलीक एहि प्रस्तावक कार्यान्वयन नहि भेलैक। कम्पनी सरकार एहिमे अपन स्वीकृति नहि देलक।

एमहर महारानी एहि बातमे स्पष्ट छलीह जे समयपर राजस्वक किस्त अवश्य चुकता कऽ देल जाय। ओहिमे विलम्ब हुनका पसिन्न नहि छलनि। संबंधी लोकनिसँ सेहो ओ सतर्क छलीह। वस्तुतः सैह लोकनि अराजकता व

स्थिति उत्पन्न करबामे सफल छलाह। हुनका लोकनिकेँ आर्थिक आधारेँ समर्थन छलनि।

एक दिन महारानी दीवान रामकिशोर सिंहकेँ बजा कऽ आदेश देलथिन जे हुनक जतेक संबंधी—अमला अथवा अधिकारीक रूपमे राजक सेवामे छथि, सभक स्थानान्तरण कऽ देल जाय। हवेली पूर्णियाक चौधरीकेँ बदलि कऽ कुमारीपुर पठाओल जाय आ ओहिठामक चौधरीकेँ बदलि कऽ मुख्यालय बजा लेल जाय। आओरो किछु लोकक एहि प्रकारेँ स्थानान्तरण कऽ देल जाय।

एहिपर दीवान किछु बाजय चाहैत छलाह मुदा महारानी कहलथिन जे दृढ़तापूर्वक हुनकर आदेशक पालन कयल जाय। एहि आदेश सभक कार्यान्वयन भेल। तकर बादे ई लोकनि महारानीक खुशामदमे लगलाह जे हुनका लोकनिकेँ पूर्वेवला स्थानपर रहय देल जाय। महारानी अपन आदेशपर दृढ़ रहलीह। महारानी कर्मचारी अथवा अधिकारी लोकनिकेँ कहलथिन जे नव स्थानपर हुनका लोकनिकेँ यदि कोनो कष्ट छनि तँ राजक दिससँ एहि कष्टकेँ दूर कयल जायत। जिलाक मुख्य हिटलीकेँ सेहो एकर सूचना भेटलनि आ महारानीक एहि कार्यसँ ओ अत्यन्त प्रसन्न भेलाह। आब हुनका बुझना गेलनि जे महारानीक मूल्यांकनमे ओ गलती कयने छलाह। जखन अमला आ अधिकारी लोकनिक दालि नहि गललनि, तखन हारि मानि कऽ ओ लोकनि अपन नव जगहपर योगदान कयलनि आ नियमित रूपेँ अपन-अपन काज करय लगलाह। सरकारी राजस्वक राशि सरकारी खजानामे नियमित रूपेँ जमा होमय लागल। महाराजक मृत्युक बाद किछु दिन राजमे अनिश्चितताक स्थिति रहल मुदा महारानीक दूरदर्शिता आ दृढ़ताक कारणेँ स्थितिमे तेजीसँ सुधार होमय लागल।

उनतीस

आइ मिस्टर हिटलीक ऑफिसक आगाँ अब्दुल गनीक नेतृत्वमे रैयति सभ प्रदर्शन कयलक। एकर पहिने गनी हुनकासँ किछु दिन पूर्व भेँट कयने छल आ हुनका कहने छलनि जे बाढ़िक कारणेँ, पता चलल अछि जे लाट साहेब रैयति सभक मालगुजारी माफ कऽ देने छथिन आ एहन

स्थितिमे राजस्व ठिकेदार अथवा जमीन्दारकेँ मालगुजारी नहि असूल करबाक चाही मुदा असूलीक काज एखनहुँ चालू अछि। हिटली बेर-बेर गनीकेँ कहलथिन जे लाट साहेबसँ अथवा ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकारीसँ एहन कोनो आदेश नहि आयल छैक आ तेँ असूलीक काज जारी रहत। ओ गनीकेँ बुझयबाक बहुत प्रयत्न कयलथिन, मुदा ओ बुझबा लेल तैयार नहि छल। ओकरा विश्वास छलैक जे उपरका आदेशकेँ जिला-मुख्य नुका रखने छथि। जखन ओ बहुत बुझौलहुपर जिद करिते रहल जे जिलाक मुख्य असूलीक आदेशकेँ रोकथि, तखन मिस्टर हिटली ओकरा कोतवालक हवाला कऽ देलथिन। ई गनी परगना श्रीपुरक वासी छल। जखन कोतवाल ओकरा पकड़ि कऽ लऽ गेल तँ ओकर संगी सभ जल्द-जल्द चल गेल आ ओहि दिन मामिला एहिना शांत भऽ गेल।

गनी जखन कोतवालीसँ छूटल तँ ओ अपन गाम गेल आ अपन इलाकामे रैयति सभकेँ संगठित करय लागल। ओकर संगठनक एकेटा उद्देश्य छलैक जे बाढ़िक कारणेँ लाट साहेब रैयतिक मालगुजारी माफ कऽ देने छथिन। आ तेँ जमीन्दार अथवा राजस्व ठिकेदार मालगुजारी असूल नहि कऽ सकैत छथि। गाम-गाममे घूमि कऽ गनी रैयति लोकनिकेँ ई बुझबथि जे लाट साहेबकेँ कलकत्तामे ई पता लगलनि जे परगना श्रीपुर बाढ़िक चोटसँ तबाह छैक आ फसिल सभ दहा गेल छैक। तखन ओ जिलाक मुख्यकेँ आदेश पठौलथिन अछि जे बाढ़िग्रस्त क्षेत्रक असूली बन्द कऽ देल जाय। मुदा 'मुख्य' एहि संबंधमे किछु नहि कऽ रहल छथि। तेँ रैयति लोकनि पूर्णिया चलि कऽ मिस्टर हिटली पर ई दबाव देथि जे ओ माल-गुजारी माफीक आदेश प्रसारित करथि आ जमीन्दार अथवा ठिकेदारकेँ ई आदेश देल जाय जे लगान असूली स्थगित रहय। पूर्णियासँ परगना श्रीपुरक ओ भाग, जतय गनी ई आन्दोलन चला रहल छल, पचीस कोस हैतैक। ओहि बाढ़िमे गनी रैयति सभकेँ जुटा कऽ अनलक। रैयति सभकेँ ओ एकेटा बात कहैत छलैक जे मिस्टर हिटलीकेँ लगान असूली बन्द करय पड़तनि। गनी पचीस वर्षक अति जोशीला छल।

गनी रैयति सभकेँ जुटा कऽ पूर्णिया अनलक आ सौरा नदीक कछेरपर आबल बगीचामे डेरा देलक। हिटलीक दफ्तर लगे छलनि। गनी अपन संगी सभकेँ लऽ ओतय गेल आ नारा लगबय लागल। हिटलीकेँ जखन गनी आ ओकर संगी सभक अबबाक सूचना भेटलनि तखन ओ गनीकेँ अपन लग बजौलथिन। गनी आ मिस्टर हिटलीक बीच एहि प्रकारक वार्तालाप होमय लागल :

रानी—'साहेब, अहाँ बाहर चलि, रैयति लोकनिकेँ ई हुकुम सुना दिऔन जे मालगुजारीक असूली स्थगित रहत।'

हिटली—'हम ई हुकुम कोना सुनबिऐ, जखन हमरा एकर कोनो सूचना नहि अछि।'

रानी—'हमरा लोकनि पचीस-तीस कोसक दूरी चलि कऽ परगना श्रीपुरक विभिन्न भागसँ आयल छी। हमरा लोकनिकेँ तीन दिन रस्तामे लागि गेल अछि। बाढ़िक कारणेँ रस्ता-बाट सभ खराब भऽ गेल छैक आ तेँ हमरा लोकनि बड़ा कठिनतासँ अहाँक भेँट करय आयल छी।'

हिटली—'मुदा अहाँ तँ हमरा एहन बात करए कहैत छी जे हमर सामर्थ्य नहि अछि। अहाँ तँ एकबेर पहिनहुँ हमरासँ भेँट करने छलहुँ। फेर ओहि बातकेँ लऽ कऽ अहाँ लोकनि किएक कष्ट कयलहुँ?'

रानी—'हमरा लोकनि पुनः ओही कार्यसँ आयल छी जाहि कार्यक हेतु अहाँसँ किछु दिन पहिने भेँट कयने छलहुँ। आइ अहाँकेँ ई हुकुम दिअऽ पड़त जे बाढ़िक कारणेँ जमींदार लोकनि असूली स्थगित राखथि।'

हिटली—'असूली स्थगित करबाक हेतु हम कोनो आदेश पारित नहि कऽ सकैत छी। ओहि दिन हम अहाँकेँ ई विषय बुझा कऽ कहि देने छलहुँ, आ आइ फेर अहाँ ओहि काजक लेल आयल छी।'

रानी—'हम असकर ई माफीक बात नहि कऽ रहल छी। जतेक आदमी हमर संगमे अछि, सभ यैह कहय आयल अछि जे अहाँ जमींदार लोकनिकेँ मालगुजारी असूल करबासँ मना करिऔन।'

हिटली—'हम जँ मालगुजारी असूल करबा लेल जमींदारकेँ मना करबैक तँ एकर अर्थ होयत जे जमींदार ओतबा रुपैया निम्हा कऽ कऽ आपनेकेँ भूमि-राजस्व देतैक। आ तेँ ई गलती हम नहि कऽ सकैत छी। ई गलतीक हेतु कम्पनीक उच्चाधिकारी विचार कऽ सकैत छथि। हमरासँ जखन पूछल जायत, तखन हम सरजमीनक जाँच कऽ कऽ अपन रिपोर्ट देबै।'

रानी—'लाट साहेबक माफीक हुकुम भऽ गेल छनि। आब कियो ओहि इलाकाक रैयतिसँ मालगुजारी नहि वसूलि सकैत छथि।'

हिटली बहुत बेर रानी आ ओकर संगी लोकनिकेँ बुझयबाक प्रयास कयलनि मुदा ओ सभ मानबा लेल तैयार नहि छल आ सभ मिलि कऽ खूब हल्ला-गुल्ला करऽ लागल। तखन ओ कोतबालकेँ बजबौलनि आ एक बेर पुनः रानीसँ वार्ता प्रारंभ कयलनि।

हिटली—'अहाँकेँ हम हुकुम दैत छी जे अपन संगीक संग एहि ठामसँ चल जाउ। जे हमरा अहाँ करय कहैत छी से हम कानूनन नहि कऽ सकैत छी। हमरा एहि काजक हेतु अहाँ एकबेर कहब अथवा एक सय बेर कहब, फल एक्के होयत।'

रानी तथापि जिद्द करैत रहलनि आ हिटलीकेँ कहलकनि—'अहाँकेँ माफीक आदेश देबय पड़त आ यदि माफीक आदेश नहि देबैक तँ असूलीक स्थगनक आदेश तुरन्त प्रसारित करू।'

हिटली—'हम लगान असूली स्थगित नहि करब। कोनो बातक एक सीमा होइत छैक। कोतबाल, एकरा सभकेँ पकड़िकऽ कोतवाली लऽ जाउ।' ओ क्रुद्ध भऽ कऽ आदेश देलथिन।

रानी—'अच्छा, तँ लिअऽ लाट साहेब द्वारा देल आदेश जाहिमे लगान माफीक ओ आज्ञा देने छथिन।' ई कहि रानी अपन पाकेटसँ एकटा कागज निकाललक आ हिटलीक हाथमे दऽ देलकनि।

हिटली ओहि कागजकेँ पढ़लनि आ रानीकेँ कहलथिन—'ई कागज तँ लगान माफीक हेतु मात्र एकटा अरजी थिक जे लाट साहेबक आगाँ लिखल गेल छैक। हमरा तँ माफी अथवा असूलीक स्थगनक आदेश चाही।'

रानी—'अहाँकेँ कागज देलहुँ तथापि अहाँ लगान असूली बन्द नहि करबै। आब हमरा लोकनिकेँ किछु करय पड़त।' ई कहि ओ अपन संगी लोकनिक दिस ताकय लागल।

हिटलीक लेल आब स्थिति असह्य भऽ गेल छलनि। कोतबालकेँ ओ हुकुम देलथिन—'एकरा पचास जुत्ता मारू आ एकर दाढ़ी-केश काटि मुँहमे कारी-चून लगा गदहा पर चढ़ा कऽ सम्पूर्ण बाजारमे घुमाउ। ओना ई बुझयबला नहि अछि।'

कोतबाल रानीकेँ पकड़िकऽ कचहरीसँ लऽ गेलैक। ओकरा संग ओकर किछु संगी सभ गेलैक आ किछु जतय-ततय चल गेल।

परगना श्रीपुर महारानी इन्द्रावतीक जमींदारीमे छलनि जतय रानीक घर छलैक। हुनका एहि घटनाक सूचना भेटलनि। हिटली हुनका एहि संबंधमे किछु नहि कहलथिन आ तेँ महारानीकेँ एहिमे किछु करबाक नहि छलनि। रानी वा ओकर संगीलोकनि सेहो महारानीसँ एहि संबंधमे कोनो वार्ता नहि कयलक। मुदा एहि घटनाक प्रभाव महारानी पर आन तरहेँ पड़लनि। ओ रानीक प्रसंगकेँ सुनि ई निश्चय कयलनि जे रैयतिक गरीबी दूर करबाक

उपाय सभ पर ध्यान देबाक चाही। लगानक नियमित वसूलीक हेतु ई आवश्यक छलैक जे प्रजाक आर्थिक स्थिति सुदृढ़ होइ। यदि बाढ़ि अथवा रौदीक कारणें ओकरा समुचित मात्रामे फसिल नहि हेतैक तँ ओ मालगुजारी कोना चुकता करत ?

महारानी निश्चय कयलनि जे ओ बाढ़ि आ रौदीसँ फसिलक रक्षाक हेतु सतर्क रहतीह। रैयति वर्गकेँ आर्थिक उन्नतिक हेतु सभ तरहक सहयोग देथिन। एकर अतिरिक्त अपन जमींदारीमे आवागमनक सुधारक हेतु सेहो ओ सचेष्ट रहतीह।

तीस

आइ महारानीक दरबार लागल अछि। सभ परगनाक चौधरीसभ आयल छथि; राजस्व विभागक प्रधान अधिकारी रिट साहेब अपन स्थानपर विराजमान छथि। अन्य मुख्य अधिकारी बैद्यनाथ सिंह, धर्मलाल सिंह आ मनुलाल अपन-अपन स्थान पकड़ि लेने छथि। डयौढ़ी सुपरिन्टेन्डेन्ट भैयाराम मिश्र आबि कऽ रिट साहेबकेँ सूचित कयलथिन जे दरबारक समय भऽ गेल अछि आ महिला सभकेँ दरबारमे उपस्थित होयबाक छलनि से सभ आबि गेल छथि। महारानी पर्दाक अन्दरमे अपन आसनपर विराजमान छथि। रिट साहेब महारानीसँ दरबार प्रारम्भ करबाक आज्ञा मङलथिन।

रिट साहेब—'महारानीक आदेश छनि जे बाढ़ि आ रौदीसँ जमींदारीमे फसिलक रक्षा कयल जाय। एकरा लेल जतय बान्हक आवश्यकता छैक, ओतय बान्हक निर्माण कयल जाय। पटौनीक हेतु पोखरि खुनाओल जाय। नहरि-छहरिक सेहो सुविधानुसार निर्माण कयल जाय। पुरान नहरिक मुँह सभकेँ साफ कऽ देल जाइक। जलालगढ़क किला लग कौशिकी नदीसँ एकरवा धरि एकटा पुरान नहरि अछि, मुदा ओकर मुँह बन्द भऽ गेल छैक। फल-स्वरूप नदीक पानि नहरिमे नहि जाइत छैक। आ तेँ पटौनी सम्भव नहि होइत छैक। यातायातक दृष्टिएँ सेहो नहरि बेकार भऽ गेल अछि। ई नहरि बहुत दिन पहिने बनल, अपन जलगढ़क कोनो नवाब जलालगढ़ किला बनौलनि। ओहि समयमे पूर्णियाक उत्तरी आ पूर्वी सीमाक रक्षाक भार जलगढ़क नवाबपर रहनि। किलामे रसद पहुँचयबाक हेतु एक नहरि द्वारा कौशिकीक धारकेँ पनार नदीसँ जोड़ि देल गेल छल। एहनो सभ नहरि-छहरिक जीर्णोद्धार कयल जाय। एकर संगे महारानी चाहैत छथि सम्पूर्ण जमींदारीमे यातायातक सुव्यवस्था चाहैत छथि। सभ चौधरीकेँ ई आदेश देल जाइत अछि जे राजक अभियन्ताक सहायतासँ अपन-अपन परगनाक योजना बनबा कऽ प्रस्तुत करथि। एक सप्ताहमे ओकर जाँच होयत आ तकर बाद कार्यान्वयनमे हाथ लागि जायत।'

रिट साहेब पुनः आइ बैसल आ चौधरी लोकनिकेँ कहलथिन—'महारानीक प्रस्ताव पर हुनका लोकनिक जे प्रतिक्रिया अथवा सुझाव होनि से ओ लोकनि राखथु। आनो अधिकारी एहि सम्बन्धमे अपन प्रतिक्रिया व्यक्त कऽ सकैत छथि।'

परगना सुल्तानपुरक चौधरी बजलाह—'हमर परगनाक किछुए भागमे बाढ़ि अबैत अछि। पहाड़ी नदी सभमे जखन अधिक पानि आबि जाइत छैक तखन किछु भागमे ओ पानि पसरि कऽ बाढ़िक रूप धऽ लैत छैक। वर्षाधिक्यक कारणेँ सेहो बाढ़ि अबैत छैक। हुनक परगनामे ओही भागमे बाढ़ी धानक नीक फसिल होइत छैक, जाहिमे बाढ़ि अबैत छैक। सामान्य बाढ़िसँ सुरक्षाक हेतु बान्हक कोनो काज नहि छैक। जे सुझाव देलथिन जे बान्ह आ सड़क बनयबाक बात एक संग सोचल जाय ताहिमे मितव्ययिता हेतैक। बान्ह द्वारा बाढ़िसँ सुरक्षा हेतैक आ संगहि ओ सड़कक काज सेहो करतैक।'

श्रीपुर परगनाक चौधरी बजलाह—'एहि परगनामे कनकइ नदीक बाढ़िमे बहुत उपद्रव होइत छैक। एहि नदीक कटाउ छैक जे दू दिनुक भीतर कोस भरि कटान करैत आगाँ बढ़ि जाइछ। एहि बीच जतबा घर-दरबाजा, गाछी-बिरछी पड़ैत छैक, सभकेँ काटि कऽ ओ धराशायी कऽ दैत अछि। बान्ह द्वारा एहि नदीक बाढ़िसँ रक्षा नहि भऽ सकैत अछि। हमरा लोकनिकेँ बाढ़िक बाद पुनर्वासक हेतु तैयार रहबाक चाही।'

कुमारीपुरक चौधरी यातायातक व्यवस्थाक महारानीक मन्तव्य जानि बहुत आनन्दित छलाह। बाढ़िक समयमे आवागमनक हेतु ओ राज द्वारा स्थान-स्थान पर नाओ रखबाक प्रस्ताव देलथिन।

राजक अधिकारी धर्मलाल सिंह प्रस्ताव देलथिन—'बाढ़ि गाम सभमे बाढ़िक समय पानि प्रवेश कऽ जाइत छैक, ओहि सभमे ऊँच स्थान ताकि कऽ चारि सय हाथ लम्बा, दू सय हाथ चौड़ा आ तीन हाथ ऊँच माटिक चबूतरा बना देल जाय जतऽ बाढ़िक अधिक पानि अयला पर लोक ओ माल-जाल शरण लऽ सकय। कच्चा कूप बाढ़िक समयमे भँसि जाइत छैक आ तखन

पैघ जलक संकट भऽ जाइत छैक। एहि कष्टक निवारण होएबाक चाही।'

राजक प्रमुख अधिकारी, वैद्यनाथ सिंह कहलन्हि—'यातायातक उन्नतिक हेतु नव सड़कक निर्माण आ पुरान सड़कक मरम्मति आवश्यक छैक। एहिमे बहुत द्रव्यक आवश्यकता पड़तैक। यदि राज एहि लेल आधो व्ययक भार वहन करय तँ सड़क-निर्माणक काज रैयतिक मदतिसँ कराओल जा सकैत छैक। रैयति लोकनि सहर्ष एहि काजमे अपन श्रम लगौताह।'

एक गोटाक प्रस्ताव छलनि जे अग्निकाण्डसँ रक्षाक उपाय सेहो सोचल जाय। दोसर व्यक्ति बाजि उठलाह—'प्रत्येक टोलक निवासीकेँ ई हिदायत देल जाय जे ओ अपन घरक कातमे अँठिया केराक करबान लगाबथि। अँठिया केराक गाछ सभ खूब झमटगर आ खूब नाम होइत छैक। एक तँ ई गाछ सभ आगिकेँ पसरय नहि दैत छैक आ दोसर बाढ़िक समयमे एहि केराक गाछक थम्ह सभसँ बेड़ बनाओल जा सकैत अछि, जाहिसँ बाढ़िग्रस्त क्षेत्रमे यातायातमे सुविधा भऽ जायत।'

महारानी सभाक प्रतिक्रिया सुनि उत्साहित छलीह। रिट साहेब आ दीवानजी आरो किछु विषय सभामे रखलनि। जहाँतक द्रव्यक प्रश्न छलैक, रिट साहेब कहलन्हि जे हुनका महारानीक आज्ञा छनि जे सड़क, बान्ह, इनार आदिमे जे रौया खर्च हेतैक से राज दिससँ देल जेतैक। राजकोषसँ यदि पूरा धनक उपाय नहि भऽ सकतै तँ रैयति लोकनि श्रमक रूपमे सहायता देत जेतैक। धनक रूपमे चन्दा लेबामे राजकेँ कोनो आपत्ति नहि हेतैक आ ने रैयतिकेँ देबामे आपत्ति हेतैक, कारण जे सभटा काज रैयतिहिक लाभक लेल कायल जेतैक। प्रत्येक परगनाक प्रत्येक गाममे कमसँ कम एक गोट पक्की इनार अवश्य बनाओल जाय। जाहि वर्षमे कनेको रौदी होइत, ओहि वर्षमे पोखरि खुनबाक प्रयास कयल जाय। रौदीक समयमे भुखमरी प्रारंभ भऽ जाइत छैक आ तेँ कम्मो मजूरी पर मजूर भेटैत छैक। राजक दिससँ सन सत्तरिपोक अकालक समयमे बहुत पोखरि-इनार खुनाओल गेल छल।

एकटा आरो महत्त्वपूर्ण विषय पर एहि बैसकमे विचार भेल आ ओ छल रैयतिक स्वास्थ्यक प्रसंगमे। दवाइ-दारूक अभावमे रैयतिक स्वास्थ्यक दशा दयनीय छलैक। वैद्यक सेहो अभाव छलैक। अंगरेजी दवाइक तँ प्रचारो नहि भेल छलैक। किछुए वर्ष पूर्व पूर्णियामे एक अंगरेजी दवाइ वला

अस्पताल ईस्ट इण्डिया कम्पनी दिससँ प्रारंभ कयल गेल छल। एहि अस्पतालक स्थापनाक प्रस्ताव पूर्णियाक सुपरवाइजर डकारेल द्वारा देल गेल छल। ओ अपन पत्रमे कम्पनीक अधिकारीकेँ लिखने छलथिन जे पूर्णियामे दवाइ-दारूक कोनो प्रबंध नहि छैक। यदि केओ अधिक रुग्ण भऽ जाइत छथि तँ हुनका इलाज लेल मुर्शिदाबाद जाए पड़ैत छलनि आ तेँ ई आवश्यक छल जे पूर्णियामे एकटा अस्पताल स्थापित कयल जाय। एहि अस्पतालक लेल कम्पनी आठ सय रुपैया वार्षिक अनुदान स्वीकृत कयने छल मुदा डाक्टरक तेहन अभाव छलैक जे बहुत दिन धरि अस्पतालक काज प्रारंभ नहि भऽ सकल। जाहि डाक्टरक एहि अस्पतालमे पदस्थापन भेल छलनि हुनका राजस्व विभागक काजसँ छुट्टी नहि देल गेलनि। राजस्व विभागमे अनुभवी आ जानकार अफसरक तेहन अभाव छलैक जे आन-आन विभागसँ योग्य अफसरकेँ आनि राजस्व विभागमे लगा देल जाइत छलैक। डाक्टरकेँ राजस्व विभागसँ छुट्टी नहि भेटलाक कारणेँ बहुत दिन धरि अस्पतालक काज स्थगित रहल।

आजुक सभामे ई निर्णय लेल गेल जे प्रत्येक परगना-मुख्यालयमे एक औषधालयक स्थापना कयल जाय। औषधालयमे एक वैद्य आ हुनक एक सहायक रहथि। औषधालयक घर राज द्वारा प्रदत्त जमीन आ खर्चसँ बनाओल जाय। रैयतिसँ श्रमक रूपमे सहायता लेल जाय। राजक जंगलसँ लकड़ी देबाक आदेश सेहो पारित कयल गेलैक। औषधालयक घर आ वैद्यक रहबाक घर बनयबाक हेतु प्रति औषधालय दस रौया स्वीकृत भेल।

हठात् जेना कोनो बात महारानीजीकेँ मोन पड़लनि। ओ रिट साहेब, वैद्यनाथ सिंह आ दीवानजीकेँ कहलथिन—'एक तय हाथीकेँ दानामे चाउर आ घी देल जाइत छैक। ई तय घोड़ा आदि जकरा दानामे सातु आ गुड़ देल जाइत छैक। यदि अहाँ लोकनि चाही तँ एकरा सभकेँ घटा सकैत छी अथवा हाथी आ घोड़ाक संख्या सेहो घटाओल जा सकैत अछि। एहुसँ यातायात आ पटौनीक समस्याक समाधानमे सहायता भेटत। हम ई एहि कारणेँ कहैत छी जे रैयतिकेँ बिना मूल्यक श्रम देबामे कष्ट भऽ जा सकैत छैक।'

वैद्य आ हुनक सहायक जे दवाइ कुटताह, हुनका लेल क्रमश: मासिक पाँच आ दू रुपैया स्वीकृत भेल। अधिकांश दवाइ स्थानीय वनस्पतिसँ बनबाक छलैक। तेँ दवाइपर मामूली खर्च पड़बाक अनुमान छलैक। महारानी आदेश देलथिन जे प्रत्येक परगना-मुख्यालयमे एक सुयोग्य वैद्य आ हुनक सहायकक बहाली कऽ देल जाय। एहि बीच बिना विलम्ब कयने औषधालय आ वैद्यक निवासक हेतु घर बनि जाय, से आदेश देल गेलैक।

एहि सभामे सभ चौधरीकेँ महारानीक ई आदेश सुनाओल गेल जे उपयुक्त स्थानमे नीक जमीन ताकि कऽ उपयोगी फलक गाछ लगाओल जाय। आम, कटहर, जामुन, लीची आ आरो उपयोगी फल सभक गाछ लगाओल जाय। महारानीकेँ वस्तु तत्त्विक प्रकाण्ड आंशिक लोकमे रहलनि आ तेँ ओ फलदार वृक्षपर विशेष ध्यान दैत छलखिन। महारानीक आदेश छलनि जे सागुवान, सखुआ सीसो आदिक गाछ सेहो प्रचुर संख्यामे रोपल जाय।

एकर अतिरिक्त प्रत्येक परगना-मुख्यालयमे फूलक सुन्दर उद्यान आ औषधिक लेल विभिन्न प्रकारक वनस्पति सभ लगयबाक आदेश पारित कयल गेल। देवानजीकेँ ई आदेश देल गेलनि जे वैद्यजीसँ पूछि कऽ आवश्यक वनस्पति सभ रोपवा देल जाय जाहिसँ औषधि-निर्माणक काज सुचारु रूपेँ चलय।

राजक विकासक हेतु ई महत्त्वपूर्ण बैसक छल। रिट साहेब, बैजनाथ सिंह, देवानजी आ राजक अन्य अधिकारी सभ महारानीक प्रस्ताव पर अपन प्रसन्नता व्यक्त कयलनि।

एकतीस

भैयाजी झा मझुआर छोड़ि अपन नवजात पुत्र आ पत्नीकेँ लऽ महारानीक राजधानी पहसराक समीप फड़किया ग्राम चल आयल छलाह। ओ महाराज इन्द्रनारायणहिक जीवनकालमे फड़किया आबि गेल छलाह। ज्योतिषी कहने छलनि जे एहि बच्चाकेँ राजयोग छैक। ताहिपर महाराज इन्द्रनारायण भैयाजी झाकेँ कहने छलथिन जे जखन हुनक बालककेँ राजयोग छनि तँ ओ सपरिवार बालककेँ लऽ कऽ राजमहलहिमे पहसरा आबि कऽ रहथु। यदि बच्चाकेँ राजयोग छैक तँ राजकुमारे जकाँ ओकर लालन-पालन कयल जैतैक। फड़कियामे पहिलहि तँ बाबू भैयाजी झाक सम्बन्धी लोकनि रहैत छलथिन। मुदा महाराज इन्द्रनारायणक आग्रह पर ओ राजमहलहिमे आबि कऽ रहय लगलाह। एहि बालकक नाम राखल गेलैक विजय गोविन्द। विजयगोविन्दक पिता भैयाजी झा महारानीक मामक पुत्र भेलाक कारणेँ हुनक ममियौत भाय भेलथिन। महाराज इन्द्रनारायणक मृत्युक बाद ई सोचल गेल जे भैयाजी झा यत्नपूर्वक राजक काज-धन्धा देखथि। महारानीकेँ हिनकासँ आन कोनो सम्बन्धिओ नहि छलथिन। विजयगोविन्दक लालन-पालन राजशाही ढंगसँ

होइत रहलनि। महारानीक विश्वासी कार्यकर्त्ताक रूपमे भैयाजी झा राजक काज देखथि। ओ चतुर लोक छलाह आ विपत्ति बुझबाक हुनका नीक क्षमता छलनि। ओ एतबा बात बोधैत छलाह जे महारानीक राज सम्हारोनिहा हुनकहि भेटतनि मुदा महारानी कहियो एकर चर्च नहि करथिन। महारानी निःसन्तान छलीह आ एहि कारणेँ हुनका एक कर्तापुत्रक सेहो आवश्यकता छलनि। मुदा ओ कहियो नहि अजलीह जे ओ बालक कर्तापुत्र बनौथिन। भैयाजी झा कहियो एकरालेल औगुतेलाह नहि।

ओ एहि बातपर ध्यान रखने रहथि जे महारानीक ध्यान कर्तापुत्र बनयबाक लेल कोनो आन व्यक्ति पर तँ नहि जाइत छनि। भैयाजी झा अपने एहि प्रश्नपर चुप रहैत छलाह। मुदा वफादारीसँ राजक काज-धन्धा देखैत रहथि। ओ ई बुझथि जे महाराजक बाद महारानीकेँ एकटा संरक्षकक तँ आवश्यकता छनिहेँ। संभवतः एहि कारणेँ महारानी हुनकासँ संरक्षक काज लैत छलथिन।

महारानीक ध्यान विजयगोविन्दपर सेहो रहैत छलनि। ओ चाहैत छलीह जे विजयगोविन्द सुयोग्य शासक बनथि। आब ओ किशोर भऽ गेल छलाह। महारानी आ भैयाजी झा लगभग समवयस्के छलाह आ तेँ महारानीक ध्यान एहू बातपर रहनि जे भैयाजी झाक बाद के? एहि कारणेँ महारानीक इच्छा रहैत छलनि जे विजयगोविन्दक शिक्षा-दीक्षा राज-गुणक अनुकूल होइक।

एक दिन महारानी भैयाजी झाकेँ बजा कऽ कहलथिन—'राज द्वारा किछु एहन काज होयबाक चाही जे प्रजाक कल्याणवृद्धिमे सहायक होअय। ई किछु दिन पूर्व राजक प्रमुख अधिकारी आ चौधरी लोकनिक सभामे किछु कल्याणकारी काज सभक प्रस्ताव कयलहुँ। ओहि प्रस्ताव पर काज किछु भऽ रहल छैक। हमरा ई नीक नहि लगैत अछि जे रैयति सभ सँ साले-साल मालगुजारी असूल कयल जाय आ ओकरा लोकनिक हितकलेल कोनो काज राज द्वारा नहि कयल जाय। एहि कारणेँ हम चाहैत छी जे प्रजाक कल्याण-सम्बन्धी काज सभ पर विशेष ध्यान देल जाय। अहाँकेँ स्मरण होयत जे दिवंगत महाराजक श्राद्धक अवसर पर हम सभ परगना-मुख्यालयमे संस्कृत विद्यालयक स्थापनाक आदेश देने छलिऐ। अहाँ जनैत छी जे एहि विद्यालय सभक खर्च राज द्वारा वहन कयल जाइत छैक। हमरा सूचना अछि जे रैयति लोकनिक धिया-पुता सभ ओहि विद्यालय सभसँ खूब लाभ उठा रहल छथि। आइ हम अहाँकेँ एहि कारणेँ बजौने छी जे जनता विकास-सम्बन्धी काज

राजक दिससँ होइछ अथवा भविष्यमे प्रारम्भ कयल जायत तकर प्रभारी अहाँ रहब ।'

भैयाजी झा—'हम आज्ञाक पालन करब ।'

महारानी—'ओहि दिन अधिकारी लोकनिक बैसकमे जे विचार-विमर्श भेल छलैक तकरा लिपिबद्ध करबाक भार हम देवानजीकेँ देने छलियनि । पहिने हमरा छल जे रेट साहेबक प्रभारमे ई काज सभ दऽ देल जाय मुदा बादमे हमर ध्यान अहाँपर गेल । हम प्रति वर्ष एहि काज सभ पर एक लाख टाका आ आवश्यकता पड़लापर ओहूसँ किछु अधिक राजकोषसँ खर्च करब । हम प्रजासँ तेरह लाखसँ अधिक टाका सालमे वसूल करैत छी । चारि लाखक लगभग हमरा ईस्ट इण्डिया कम्पनीकेँ राजस्व दिअऽ पड़ैत अछि । ई चारि लाख तँ राजस्वक लेल सुरक्षित रहत । किछु मोट राशि व्यवस्था खर्च पर सेहो राखल जाय । शेष राशिमे हम एक लाख प्रजाक कल्याणपर खर्च करय चाहैत छी । ई राशि हमर सम्पूर्ण आयक लगभग तेरहम भाग भेल । जे योजना बनल अछि, पूर्ण सतर्कतासँ तकर कार्यान्वयन कयलापर राजक काया-पलट भऽ जायत । अहाँकेँ एहि उमेरमे कष्ट पड़त मुदा योजनाक सफल भेलापर राजक श्रीवृद्धि होयत । एक वर्ष धरि हम देखि लेब तखन पुनः आरो किछु काज एहिमे जोड़बाक हमर विचार अछि । पूर्णिया आ मोहनिगंडीक पोखरिसँ सालमे पाँच हजार टाका माछक बिक्रीसँ अबैत अछि । राजमे विकासक काज भेलापर आयमे सेहो वृद्धि हेतैक । देखू, देवान जी सेहो ओ कागत लऽ कऽ चल ऐलाह । एहि कागतकेँ देखू आ जे किछु अहाँकेँ कहबाक हो, हमरा कहू ।'

भैया झा कागज देखैत कहलथिन—'हमरा एकरा पढ़ि कऽ टिप्पणी देबाक हेतु किछु समय चाही । हम बादमे अपन विचार अपनेक समक्ष राखब । एखन एतबा तँ हम कहिए सकैत छी जे एहि योजनाक कार्यान्वयन लेल हमरा फराक कार्यालय चाही आ किछु अमला सेहो ।'

'हँ, ई अहाँ ठीक कहलहुँ । हम नहि चाहब जे नव अमला सभसँ ई कार्य कराओल जाय । अहाँ एहि सभ पर विचार करू आ राजक पुरान अनुभवी अमलाकेँ जतबा अहाँकेँ आवश्यक बुझि पड़य तकर नाम हमरा कहू । एहि कागजक नीक जकाँ अध्ययन करू आ पुनः हमरासँ परामर्श करू ।' महारानी अपन सहमति दैत बजलीह ।

भैया झाक चल गेलाक बाद देवानजी पुनः अयलाह ।

महारानी देवानजीसँ पुछलथिन —'राजक विकासवला नक्सा आ तत्संबंधी आरो कागज-पत्र तैयार भेल ?'

'हम ओ लेनहि आयल छी' । देवानजी विस्तारसँ बुझबऽ लगलथिन । 'सड़कक बनबाक जे प्रस्ताव छलैक से परगना सुल्तानपुरसँ प्रारम्भ कऽ कऽ कुमारीपुर धरि आ पुनः परगना हवेली, नाथपुर, गोड़ारी आदि होइत श्रीपुर परगनाक छोर धरि चल जायत । बीचमे कैकटा नदी पड़ैत छैक । नदी सभमे स्थान-स्थान पर नाओ रखबाक प्रबन्ध करय पड़तैक । किछु नदी एहन छैक जाहिमे किछुए मास नाओ रखबाक प्रयोजन छैक आ किछु नदी-नाला एहन छैक जाहिमे अषाढ़, साओन आ भादव तीनिए मास नाओ रखबाक प्रयोजन हेतैक । नव सड़क बनयबामे आ नाओ तथा मलाहपर सम्पूर्ण राजक लेल कतबा खर्च पड़तैक, सेहो हिसाब तैयार अछि ।'

कनेक गम्भीर भावेँ महारानी कहलथिन—'अहाँ तँ देवानजी, ऐ समस्याक भीतर पैसि कऽ देखबाक प्रयत्न कयने छी ।' पुनः नक्सा देखैत महारानी बजलीह—'श्रीपुर परगनाक मुख्यालयमे औषधालयक चिह्न नहि देल गेल अछि । ओतय औषधालय किएक नहि राखल गेल छैक ?'

'सरकार ! एहि राजमे देवानी करैत ई हमर तेसर पीढ़ी थिक आ हमरा आब राजक विभिन्न पदपर सेवा करैत चालीस वर्ष भऽ गेल । आबहु हम सरकारक इच्छाकेँ कोना नहि बुझबैक !' देवानजी आगाँ नक्सा बुझाबऽ लगलथिन—'जहाँ धरि परगना श्रीपुरक औषधालयक बात अछि ओ मुख्यालयसँ किछुए हटि कऽ कैरी बिशनपुरमे राखल गेल छैक । आवागमनक दृष्टिसँ कैरी बिशनपुर परगनाक मुख्यालयसँ अधिक उपयुक्त छैक आ मुख्यालयसँ एकर दूरी मात्र चारि कोस छैक । मुख्यालय धरमपालपुरसँ किछुए दूर पर कनकइ नदी बहैत छैक आ नदी सतत कटाव करैत रहैत छैक । बाढ़िक समयमे नदीक पाट खूब पसरि जाइत छैक । जलक वेग प्रचंड भऽ जाइत छैक आ बहुत दिन धरि यातायातक असुविधा बनल रहैत छैक ।'

देवानजीक विचार सुनि महारानीक मुखमंडल पर सन्तोषक भाव उदित भेलनि । ओ बजलीह—'देवानजी, हमरा आइ बड़ प्रसन्नता भेल अछि । अच्छा, ओहि दिन आनो आनो योजना सभपर विचार भेल छलैक । ओकरा सभक की प्रगति छैक ?'

देवानजी—'हम सभ हिसाब तैयार करा लेने छी । इनार बनयबाक हिसाब फराक अछि । एहि लेल उत्तम कोटिक राज-मिस्त्री चाही जकर व्यवस्था कऽ लेल गेल छैक ।'

महारानी—'आरो बात सभ भेल छलैक। ओहि सभमे की प्रगति छैक ?'

देवानजी—'सभपर काज भेल छैक। जमीनसँ नक्सा तैयार करा कऽ कतय कोन वस्तु हेतैक सेहो अंकित करा देल गेल छैक। कोन नदीपर कोन-कोन स्थान पर नहराक व्यवस्था रहतैक आ सड़क कोन-कोन गाम धऽ जेतैक से सभ नक्सापर अंकित करा देल गेल छैक। एकरा सभकेँ देखि कऽ जे प्रश्न पुछबाक आवश्यकता पड़ैक, से पुछल जाय। एहि काज सभसँ सम्बद्ध सभ अमला कार्यालयमे उपस्थित छथि।'

—'हमरा ई कहू जे एक वर्षक अभ्यन्तर ई काज सभपर कतेक खर्च पड़त ?' महारानी जिज्ञासा कयलथिन।

—'एहि सभपर लगभग अनठानबे हजार रुपैया खर्च पड़त। एहि कागजमे सभ विवरण देल छैक।' ई कहि देवानजी कागज महारानी दिस बढ़ा देलथिन।

महारानी—'देवानजी, ई तँ अहाँ बड़का काज करौलहुँ। हमरा नहि बुझल छल जे एतेक जल्दी ई काज भऽ सकत। हमरा ई कहू जे एहि लेल किछु नव कर्मचारीक आवश्यकता पड़तै की ?'

देवानजी—'पड़तै। मोटा-मोटी एना देखल जाय जे अनठानबे हजार रुपैयाक खर्चक पाइ-पाइक हिसाब राखय पड़तै। खर्च साले भरि होइते रहतै। काज निरन्तर चलैत रहतै। एहि लेल चारि व्यक्ति अमलाक स्तर पर आ बीस गोट आदेशपाल दौड़हाक स्तरपर चाही। दूटा उच्चस्तरक कर्मचारी जे देहातमे कयल गेल काजक निरीक्षण करथि। एकर अतिरिक्त पचपनटा मलाह चाही जाहिमे किछु गोटाकेँ छओ मास, किछुकेँ तीन मास आ किछु गोटाकेँ बारहो मास काजपर रहय पड़तै। जे जतबा अवधि रहतै, तकरा ओहि अवधिक वेतन देल जेतैक। एहि कागजमे सभक विवरण स्पष्ट रूपेँ देल गेल छैक।'

महारानी—'आब हमरा अहाँसँ एक बातपर परामर्श करबाक अछि। ई सम्पूर्ण विकासकार्यक प्रभारी किनका बनाओल जाय ? अहाँक द्वारा यदि ई कयल जाय तँ की हुअए ?'

देवान—'नहि, एक गोटाकेँ फराक्कँ प्रभारी बनबय पड़तैक आ ओ नीचा स्तरक नहि भऽ अधिकारी स्तरक होथि। मूल्यस्तरकेँ देखैत ई सहजहि अनुमान कयल जा सकैत अछि जे काज कतेक अधिक हेतैक! खुदरा भावसँ

एक पैसामे ढेहसेर मोट चाउर भेटैत अछि। हमर तँ ई विचार अछि जे उच्चाधिकारी वर्गक लोककेँ एकर प्रभारी बनाओल जाय। राजक सम्पूर्ण आय तीनहु लाखसँ अधिक अछि। नव काज सभपर लगभग एक लाख खर्च होयत। तीन लाख पचासी हजार रुपैया हमरा लोकनि प्रतिवर्ष लाट दाखिल करैत छी आ ओहि राशिक संचयपर कतेक ध्यान रहय पड़ैत अछि ? एक लाख रुपैयाक खर्चक ताक-हेर करय योग्य सूझ-बूझवला व्यक्तिकेँ एहि पद पर राखब उचित होयत। ओहि व्यक्तिमे एक आरो गुण होयबाक चाही। हुनका प्रजा लेल प्रेम रहय आ सरकारक प्रति ओ पूर्ण वफादार रहथि।'

महारानी—'बेस तँ एहन कोनो लोक नजरि पर छथि ?'

देवानजी—'छथि।'

महारानी—'के ?'

देवानजी—'अपनेक भाइ आदरणीय भैयाजी छथि।'

महारानी—'की ओ ई काज सभ सुचारु रूपेँ कऽ सकताह ?'

देवानजी—'सरकार, एहिमे 'सकताह'क प्रश्न नहि उठबाक चाही। हुनका वफादारीक संग ई काज करय पड़तनि। ओ स्थिर लोक छथि आ हुनकामे स्वाभाविक रूपेँ वफादारी छनि।'

महारानी—'हुनक कागज-पत्र सभ अहाँक द्वारा हमरा लग आओत ?'

देवान—'सरकार, उचित हेतैक जे रिड साहेब द्वारा हुनक कागज सभ सरकारक समक्ष राखल जाय।'

महारानी—'अच्छा, देवानजी, हमरा ई तँ कहू जे प्रजाक हितक लेल प्रस्तावित काज सभ अहाँकेँ उचित अछि ?'

देवानजी—'उचित तँ अछि मुदा राजक आयक वृद्धि पर ध्यान राखय पड़तैक आ फजूलखर्चीसँ सब तरहेँ बचय पड़तैक।'

महारानी—'आमदनी कोना बढ़ाओल जा सकैत छैक ? फजूलखर्ची कतय होइत अछि ?'

देवान—'नवाबगंजक सैराक महालपर किछु आरो कर्मचारी राखि कऽ आमदनी बढ़ाओल जा सकैत छैक। रातिमे जतबा नाओ महानन्दा नदी भऽ जाइत अछि ओकरा सभसँ चुंगी नहि असूल होइत अछि। चुंगी असूलयमे मारि-पीटक सेहो संभावना रहैत छैक। तेँ किछु मजगूत सिपाही सभकेँ एहि काजपर तैनात करब आवश्यक हेतैक। मलाह सभक संग मारिक

महालक बन्दोबस्त करबामे आर अधिक सतर्कताक आवश्यकता छैक। मलाह् सभ ढाक बजराक काछ मिलि जाइत अछि। नबावगंजक गैरात महालसँ वर्षमे पचीस हजार टाक आमदनी बढ़ाओल जा सकैत छैक। मुदा एकरा लेल अधिक परिश्रम आ सतर्कताक आवश्यकता छैक।'

ओ आगाँ बजलाह—'राजक हाथी-घोड़ा सभपर जे खर्च होइत छैक ताहूमे कटौतीक गुंजाइश छैक।'

महारानी—'अच्छा, एहि विषय सभ पर आरो गहन विचारक आवश्यकता छैक।'

देवानजी—'आहिहुएसँ आदरणीय भैयाजी म्हाकेँ शिक्षामक कार्यक भार देल जाय। आज्ञा भेटय तँ सरकारसँ हम हुकुमनामा पर काल्हि दस्तखत करा ली।'

देवानजीसँ प्रस्तावित कार्य सबहक अर्थतिक विषयमे जानकारी प्राप्त कऽकऽ महारानी संतुष्ट छलीह। ओ एहु बातसँ प्रसन्न छलीह जे भैयाजी म्हाक नामक प्रस्ताव देवानजी आनलनि। महारानी तँ पहिलहि एकर निश्चय कऽ चुकल छलीह।

बत्तीस

आइ महाराज इन्द्रनारायणरायक पाँचम बर्खी छिकनि। आब हुनक पुण्य तिथिक दिन पंडित सभा होइत अछि आ ओहि दिन शास्त्रार्थक कार्यक्रम सेहो रहैत अछि। स्वर्गीय महाराजक जीवनहिमे ई शुरु कयल गेल छल आ तेँ हुनक स्मृतिमे एहि कार्यक्रमकेँ आरो उत्साह पूर्वक महारानीजी करबैत छथि। जतेक नवका विद्वान सभ निकलैत छथि सेहो लोकनि एहि सभामे उपस्थित भऽ शास्त्रार्थमे भाग लैत छथि।

महाराजक स्वर्गीय भेलाक बादे प्रथमे वर्षमे एहि संबंधमे एकटा समस्या उपस्थित भेल। समस्या छल जे सभाक अध्यक्षता के करथि आ नवका पंडित लोकनिकेँ टीका के लगाबथि। महाराजक जीवनमे तँ ई काज सभ महाराज द्वारा कयल जाइत छल। किन्तु गोसाँथ प्रस्ताव भेलनि जे स्वयं महारानी अध्यक्षता करथि आ टीका सेहो लगाबथि। ओहो तँ प्रथम कोटिक विदुषी छथि। मुदा एहि संबंधमे ई कहल गेल जे महारानी पर्दानशीन छथि आ तेँ

ओ ई काज नहि करतीह। ओकराकेँ टीका लगायब सेहो महारानी उचित नहि बुझलनि आ तेँ महारानीक विचार भेलनि जे भैयाजी आ द्वारा ई काज सम्पन्न हो आ तहियेसँ ई परिपाटी चलि रहल अछि।

शास्त्रार्थक क्रम एना रहैत छैक जे मिथिला आ मिथिलासँ बाहरसँ आयल पंडित लोकनिक शास्त्रार्थ एक विशाल मंडपमे पन्द्रह-बीस फराक-फराक स्थान-पर होइत रहैत अछि। प्रत्येक जोड़ीक फैसला पूर्वमे शास्त्रार्थमे विजयी भेल पंडित सभ करैत छथि। जे सभ एक बेर शास्त्रार्थमे विजेता भऽ चुकल छथि ओ लोकनि शास्त्रार्थमे पुनः भाग नहि लैत छथि। सभ जोड़ीक शास्त्रार्थ समाप्त भेला पर फेर विजेता सभक जोड़ी बनाकऽ शास्त्रार्थ होइत अछि आ अन्तमे दू दिनसँ दूटा जे विजेता होइत छथि हुनका लोकनिक बीच शास्त्रार्थ होइत अछि। ई प्रक्रिया कैक दिनमे समाप्त होइत अछि।

अंतिम दू पंडितमे जे शास्त्रार्थ होइत अछि ओहिमे भैयाजी आ राजपंडित आ गतवर्षक विजयी पंडित निर्णायकक रूपमे रहैत छथि। एहि सम्मिलित निर्णयानुसार विजयी पंडितकेँ टीका लगा देल जाइत छनि। हुनका सभ गोटा मिलि कऽ दुर्वाक्षत दैत छथिन्ह आ राजदिससँ सम्मानपूर्वक हुनक विदाइ कयल जाइत छनि।

जहाँ धरि राजक नव पंडित लोकनिक प्रश्न छनि, प्रत्येक परगनाक मुख्यालयपर सञ्चालित विद्यालयक आचार्यक तत्त्वावधानमे ओ लोकनि शास्त्रार्थमे भाग लैत छथि। एहि तरहेँ प्रत्येक परगनासँ चुनि कऽ दू-दू विद्वान आबि जाइत छथि जे पंडित सभाक शास्त्रार्थक कार्यक्रममे भाग लैत छथि। हिनका लोकनिक बीच शास्त्रार्थ होइत अछि आ सर्वोत्तम विद्वानक निर्वाचन होइत अछि आ ओ राजक श्रेष्ठ पंडितक कोटिमे आबि जाइत छथि। ई शास्त्रार्थक आयोजन महाराजक पुण्यतिथिसँ दू मास पहिनहि प्रारम्भ भऽ जाइत अछि। जाहि नवका विद्वान लोकनिक स्तर संतोषजनक रहैत छनि हुनका लोकनिकेँ टीका लगाओल जाइत छनि आ ओहि दिनसँ ओ पंडितक गणनामे आबि जाइत छथि। सभा समाप्तिक समय पंडित लोकनिक योग्यतानुसार विदाइ सेहो होइत छनि।

एहि पंडित सभामे नवका पंडित लोकनिक परीक्षाक एकटा प्रसंग अछि। शास्त्रार्थ चलि रहल छल। एकटा प्रतिपक्षी शास्त्रार्थी पुछलथिन—'सभसँ तीव्र गति ककर छैक?' दोसर शास्त्रार्थी कहलथिन—'वायुक गति सभसँ तीव्र होइत अछि।' सभामे भावी पंडितक निर्वाचन भऽ रहल छल। भैयाजी आ हुनका पुछलथिन—'मनक गतियोँ सेहो ककरो गति अधिक होइत छैक?'

ओ एहिपर चुप रहि गेलाह। हुनका कहल गेलनि जे ओ पुनः अगिला वर्ष शास्त्रार्थमे भाग लेथि। एहि वर्ष ओ पंडितक कोटिमे नहि आबि सकलाह। हुनका टीका नहि लगाओल गेलनि।

जे कोनो पंडित नव ग्रन्थ लिखैत छलाह, पहुसराक पंडित सभामे ओकरो चर्चा कयल जाइत छलैक। प्रत्येक वर्ष जे कोनो नव ग्रन्थ लिखल जाइत छल, एहि सभामे ओकरो सूचना प्रसारित भऽ जाइत छल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचित 'वर्णरत्नाकर'क सम्बन्धमे कहल जाइत अछि जे एकर प्रतिलिपि तीरियामे 'मनिकर' द्वारा तैयार कयल गेल छल आ एकर पांडुलिपि सर्वप्रथम पहुसराक पंडित सभामे प्रस्तावित भेल छल।

महारानीक सम्पूर्ण राज्यमे विद्याक प्रकाश एहि ठामसँ प्रस्फुटित होइत छल। एतबे नहि, मिथिलाक शीर्ष कोटिक विद्वानकेँ एतय एक दोसरासँ भेँट भऽ जाइत आ विचार-विनिमयक अवसर भेटि जाइत।

पंडित सभामे जतबा पंडित भाग लैत छलाह, हुनका लोकनिक रहबाक व्यवस्था राज द्वारा कयल जाइत छल। यात्रा-व्यय सेहो राज द्वारा वहन कयल जाइत छल। पंडित लोकनिक संगमे जे विद्यार्थी अथवा टहलू अबैत छलथिन, सभ राजक अतिथि होथि।

तैंतीस

दरबार लागल अछि। सभ परगनाक चौधरी लोकनि उपस्थित छथि। भैयाजी सेहो आबि गेल छथि। राजमे आवागमनक सुविधा बढ़यबाक, औषधालयक स्थापना, औषधि निर्माणक हेतु पौधशालाक प्रबंध, पटौनीक हेतु बान्ह आ छहरि आ इनार आदिक प्रबंधक हेतु जे भार महारानी मुख्यरूपसँ भैयाजी भाकेँ देने छलथिन तकर प्रगतिक आइ समीक्षा होयत। राजक देवान आ उच्च पदाधिकारी लोकनि सेहो उपस्थित छथि। महारानीजी दर्शक ओटमे अपन आसन पर विराजमान छथि। दूटा परिचारिका हुनकार दुनू बगल ठाढ़ि छनि। सभाक कार्य प्रारंभ भेल।

सभसँ पहिने भैयाजी अपन आसनपरसँ उठि कऽ कहब आरम्भ कयलनि—'सम्पूर्ण राज्यमे तीन वर्षक अभ्यन्तर दू सय संतावन पोखरि खुनाओल गेल। इनारक संख्या चारि सय पाँच अछि। इनार सभ मुख्यतः सड़कक कातमे

खुनाओल गेल अछि। आइ पर्यन्त सवा सय कोससँ अधिक लाम सड़कक निर्माण भऽ चुकल अछि।'

देवानजी बीचमे टोकलथिन—'महारानीजी जानय चाहैत छथि जे एहि अभ्यन्तर इनार, पोखरि, सड़क आ बान्हक मरम्मतिपर सेहो खर्च भेल छैक ?'

भैयाजी—'हँ, भेल छैक। पोखरि आ सड़कपर वर्षाऋतु आ बाढ़िक बाद सामान्य मरम्मतिक आवश्यकता प्रतिवर्ष पड़ैत छैक मुदा इनारपर मरम्मतिक कोनो आवश्यकता नहि भेल छैक। हमर विचार अछि जे प्रत्येक इनारमे लहरा बनबा देलासँ लोककेँ स्नानादिमे सुगमता भऽ जेतैक।'

देवानजी—'महारानीजी जानय चाहैत छथि जे एतेक दिनसँ ई लहरा किएक ने बनबाओल गेलैक ?'

भैयाजी—'नहि बनयबाक मुख्य कारण ई छल जे इनारक अगल-बगलक माटि जावत नहि बैसि जेतैक तावत ओतय लहरा बनओलासँ लहराक भहकि जयबाक संभावना छलैक। दोसर बात ई जे एहि मद के व्ययक आकलन भेल छल आ ने सरकारक आज्ञा प्राप्त कयल गेल छलैक।'

देवानजी—'महारानीजीकेँ जानकारी चाही जे सभटा इनारक लहरा बनयबामे कतबा खर्च लगतै।'

भैयाजी—'पाँच सय रुपैयामे ई काज नीक जकाँ सम्पन्न भऽ जेतैक।'

देवान—'महारानीजीक आदेश छनि जे एहि काजमे हाथ लगा देल जाय। जे राशि अहाँ सुनौलियनि अछि से महारानीजी स्वीकृत करैत छथि।'

भैयाजी—'पौधशालाक सभक ई स्थिति अछि जे अपन चिकित्सालय सभ लेल आवश्यक औषधिक निर्माणक हेतु पौधशाला सभसँ जड़ी-बूटी भेटि जाइत अछि। एकर अतिरिक्त सागुआन आ शीशोक दू लाख गाछ विभिन्न परगनामे लगाओल गेल अछि। जलालगढ़ किला लग दस हजार सागुआनक गाछ रोपल गेल अछि आ ओकर वार्धक्य प्रशंसनीय अछि।'

आरो प्रगति-विवरण उपस्थित कयल गेल आ महारानी एहि पर अपन प्रसन्नता व्यक्त कयलनि।

देवानजी—'महारानीजी विद्यालय भवन-निर्माणक स्थितिक जानकारी चाहैत छथि।'

भैयाजी—'कुमारीपुर छोड़ि सभ परगना मुख्यालयक विद्यालय-भवनक स्थिति ठीक छैक।'

महारानी कुमारीपुर परगनाक 'कानूनगो' सेहो छथि जाहि लेल सरकारसँ हुनका आठ सय रुपैया प्रतिवर्ष वृत्तिक रूपमे भेटैत छनि। मुगलकालमे कानूनगो लोकनि जमीनमे रैयतिक हकक रक्षक छलाह। जमींदार अथवा सरकार रैयतिक हकपर कोनो आघात नहि कऽ सकथि तकरा लेल एहि संस्थाक निर्माण कयल गेल छलैक। आइ ई संस्था शक्तिहीन भऽ गेल अछि मुदा महारानी परम्परानुसार एखनहुँ कुमारीपुरक कानूनगो छथीह। ओ हास्य कयलथिन जे ओहीटा परगनाक विद्यालय-भवन ठीक नहि छैक जकर ओ कानूनगो छथि! एहिपर सकपकाइत भैयाजी झा कहलथिन जे गलतीसँ बाढ़िक पानिक सतहकेँ ध्यानमे नहि राखि कुमारीपुरक विद्यालय-भवनक नीव खूब भरल नहि गेल छलैक।

एतेकखान धरि चुपचाप सुनैत रहनिहार रिट साहेब बजलाह—'अथवा विद्यालय-भवन छैक ओकर फर्शकेँ ईंटासँ पाटि कऽ सुर्खी-चूनसँ जोड़ि देल जाय। सम्पूर्ण जिलाक जलवायु प्रायः आर्द्र छैक आ तेँ बरसातमे सहजहि आर्द्रता रहैत छैक। हमर प्रस्ताव अछि जे आवश्यकतानुसार नीवकेँ आरो भरि कऽ ईंटा सभकेँ सुर्खी-चूनसँ जोड़ि देल जाय।'

देवानजी—'महारानीजी रिट साहेबक सुझावकेँ स्वीकार करैत छथि। ओ एही आशय चाहैत छथि जे बाढ़िसँ सुरक्षाक लेल बाढ़िग्रस्त क्षेत्रक प्रत्येक गाममे गोटेक ऊँच चबूतरा बनबेबाक जे प्रस्ताव छल तकर की भेलैक।'

भैयाजी—'एहिमे हाथ नहि लागल छैक। राजमे एखन दू हजार गाममे ई काज करब आवश्यक हेतैक। परगना हवेलीमे एक हजार गाम छैक जाहिमे बाधासँ कम्मे गाममे बाढ़िक जल पहुँचैत छैक। सम्पूर्ण राजमे परगना हवेली छाड़ि दू हजार गाम एहन छैक जाहिमे बाढ़िक पानि आबैत छैक। एहिमे एक चबूतराक पचीस टाकाक हिसाबेँ दू हजार चबूतराक पचास हजार रुपैया खर्च पड़तै।'

देवानजी—'महारानी जी कहैत छथि जे प्रतिवर्ष चारि सय चबूतरा बनाओल जाय आ ओहि लेल एहि वर्षक हेतु दस हजार रुपैया स्वीकृत कयल गेल।'

भैयाजी—'एही तरहेँ काज कयल जेतै।'

देवानजी—'महारानीजी पुछैत छथि जे आरो कोनो नव काज भेल छैक। विजयगोविन्दकेँ कोन काज देल गेल छनि?'

भैया—'विजयगोविन्द महारानीजीक आदेशसँ हमर सहायकक रूपमे काज कऽ रहल छथि। राजक काजसँ किछु मास पूर्व ओ पटना गेल छलाह।

परगना गोसाईसँ सम्बन्धित किछु कागज अंतरसँ निकास करबाक छलनि। एही क्रममे ओ पटनासँ तरभुज आ खरभुजक बीया अनलनि। ओकरा ओ परगना धौंपुरमे कमला नदीक कछेरपर लगवा देने छलथिन। किछुए दिनमे खाय फल भऽ गेलैक। एकर अतिरिक्त अंगूरक दू या लता सेहो अनने छथि। लतीकेँ राजमहलक हातामे लगा देल गेल छैक। दुनू जानि गेल छैक आ बढ़ि रहल छैक। लतीक हेतु मचान बना देल गेल छैक। तरभुज आ खरभुजक बीया बिहारमे खेतीक लेल पहिले-पहिल पटनाक नायब सूबेदार राजा सिताब राय कलय-तारसँ मङौने छलाह। अंगूरक खेती पटनामे वैह अपन शासनकालमे आरम्भ करौलनि।'

एहि तरभुज आ खरभुजक नव फलक नाम सुनि सभक मोनमे उत्सुकता जागि गेलनि। ओकर आकार, ओकर रंग, ओकर स्वादक बहुत गोटे मोने-मोन अनुमान करऽ लगलाह। पहुँचल राजक निवासीक लेल ई एकटा अभिनव अद्भुत समाचार छल। अंगूरक लती देखबाक सभक मोनमे इच्छा जागि उठलनि। किन्तु एखन धरि देवानजीकेँ ई बात सभ नहि बुझल छलनि। ओ बजलाह—'महारानीजी कहैत छथिन जे हुनका एकर सूचना एतबा दिनसँ किएक नहि देल गेलनि।'

भैयाजी—'ई हमरासँ गलती भेल। विकास-सम्बन्धी दोसर-दोसर काजमे लागल रहलाक कारणेँ ई हमर धोखसँ छूटि गेल।'

देवान—'महारानीजी स्मरण दियबैत छथि जे महाराजक बिमारीमे फ्रांस देशसँ आवश्यकता भेलापर अंगूर कलकत्तासँ मङाओल जाइत छल। हुनक इच्छा छनि जे अंगूरक खेतीपर विशेष ध्यान देल जाय। आरो लती मङाओल जाय।'

एहि काज सभक प्रगतिक समीक्षाक बाद सभा समाप्त भेल। आइ ई नवफलक खेतीक विषयमे सुनि महारानी अत्यन्त आनन्दित छलीह आ भातिज विजयगोविन्दक कर्मठतापर सेहो प्रसन्न छलीह।

चौंतीस

बहुत दिनसँ महारानीक इच्छा छलनि तीर्थाटन पर जयबाक। उपयुक्त समय देखि ओ भैयाजी झा आ देवानजीसँ तीर्थाटनपर जयबाक विचार-विमर्श कयलनि। महादेवक प्रति हुनका बहुत भक्ति छलनि आ तेँ वैद्यनाथ

जयबाक निश्चय कयल गेल। मुदा वैद्यनाथ गेलापर ओ वासुकीनाथ सेहो जेतीह। किछु वृद्ध-पुरान स्त्रीगण आ पुरुषक सेहो लालसा छलनि जे महारानीक संगहि ओहो लोकनि तीर्थाटनपर जाथि। महारानीसँ एकरा लेल ओ लोकनि प्रार्थना कयलनि। एहन लोकक संख्या सेहो बहुत छलैक। महारानी हुनकहु लोकनिकेँ अपना संग चलबाक स्वीकृति देलथिन। बाबा धामक ओरी लगा देलथिन।

भैयाजी आ देवानजीपर एहि यात्राक तैयारीक भार देल गेलनि आ हुनकहु लोकनिकेँ यात्रापर जयबाक लेल कहल गेलनि। राजपंडित सेहो एहि यात्रामे उत्साहपूर्वक सम्मिलित भेलाह। परिचारक, परिचारिका, भनसीया, टहलू, कहार आदिक अतिरिक्त पन्द्रह गोट सवार आ बीसटा हथियारबन्द सिपाही रक्षाक दृष्टिकोणसँ महारानीक संगे रहथिन। एहि प्रकारेँ लगभग एक सय व्यक्तिक महारानीजीक दल बनि गेल।

विचार भेलैक जे श्रीपंचमीक दिन यात्रा प्रारम्भ कयल जाय। महारानीजी अपन पालकीपर रहतीह। शेष लोकक हेतु पदक्रमक अनुसार पालकी, महफा, घोड़ा आ वस्तु-जात उघबाक लेल भरिया सभक प्रबन्ध कयल गेल। चाउर, दालि, नोन, घी, तेल, मसाला आदिक अतिरिक्त दनौड़ी, तिलौड़ी, अदौड़ी आदि सेहो लऽ लेल गेल। ओढ़ीन-बिछौन, कपड़ा-लत्ता सभ सेहो भार सभपर बोझल गेल। एकर अतिरिक्त किछु तम्बू आर शामियाना, भोजनादि बनयबाक बरतन-बासन, पीबाक पानि राखल संगमे रहय तकरा लेल किछु तम-घैल, प्रचुर संख्यामे थारी, कटोरा, लोटा-गिलास आदि लेल गेल।

श्रीपंचमीक दिन यात्रीदल पहलसाँ वैद्यनाथ धाम लेल विदा भेल। पहिल दिन ओ लोकनि आबिकऽ सोहनीगढ़ीमे रात्रि विश्राम कयलनि। ओतऽ पहिनहिसँ सभ इन्तजाम छलैक। दोसर दिन प्रातःकाल स्नानादिसँ निवृत्त भऽ जलपिबाइक बाद दल गंगाक अगवानी घाटक हेतु विदा भेल।

भोजन-आवास आदिक व्यवस्था कर्मनिहार लोकनि पहर राति पहिनहि विदा भऽ जाथि आ ठहरबाक स्थानपर पहुँचिकऽ ओ लोकनि व्यवस्था कऽ राखि देथि। पाछाँसँ यात्रीदल पहुँचिकऽ भोजनादिसँ निवृत्त होथि आ किछु विश्राम कयलाक बाद ओ लोकनि पुनः यात्रा प्रारम्भ करथि। एवंप्रकारेँ सुलतानगंज जयबाक लेल अगवानी घाट पहुँचबामे सात-आठ दिन लागि गेलनि।

ओतऽ दैष नावी सभपर यात्री दल गंगा पार भेल। ओहि ठामसँ विदा भऽ सभ गोटे सुलतानगंजक गंगाक सीढ़ी घाटपर पहुँचलाह। ओतए रात्रि

विश्राम कयलनि आ तेसर दिन सभ गोटे गंगाक धारक मध्य स्थित अजगैबीनाथक दर्शन कयलनि आ हुनका गंगाजल चढ़ौलनि। तत्पश्चात् बाबा वैद्यनाथकेँ चढ़यबाक हेतु उत्तरवाहिनी गंगामे जल भरलनि। पुनः सभ पहिलुके हिसाबेँ यात्रा प्रारम्भ कयलनि।

बाटमे कुहु काल पहाड़ ओ जंगलक दृश्य अत्यन्त मनोरम छल। ऊबड़-खाबड़, ऊँच-ऊँच बाटसँ चलबामे कठिनता होइक मुदा बाबाक ध्यान आ पर्वत-शृंखलाक दृश्यावलीसँ कष्टक अनुभूति कखनहु नहि होनि।

महारानीक हेतु ई दृश्य सभ अपूर्व छलनि, अद्भुत छलनि। ओ जेना बाल-सुलभ चपलतासँ, उत्सुकतासँ सभक अवलोकन करैत जाथि आ कखनोकऽ बिसरि जाथि जे ओ महारानी थिकीह। कखनो कऽ बाबाक ध्यान अधिक काल आत्मविस्मृत कऽ जाथि। कुहु आँखि बन्द भऽ जाइत। ओ अपनहिमे डूबि जाथि। अकस्मात् कोनो ऊँच-ऊँच स्थानक कुमचर्याक 'बोल बम' सँ ध्यान टूटि जाइत आ फेर कुहु काल अपलक नजरिसँ देखऽ लागथि।

यात्री-दल चलैत जाय। कखनो केओ भजारी आ महेशवाणी गाबय लागय। तखन कोनो भिड़हुर स्थान आबय कि सभक मुँहसँ एकेबेर समवेत स्वर बहराय लागय— 'बोल बम', 'बमबम महादेव', 'जय बाबा वैद्यनाथ', अथवा 'हरहर महादेव'!

एवंप्रकारेण यात्रीगण वैद्यनाथ धाम पहुँचैत गेलाह आ शिवगंगाक मोहाड़पर तम्बू शामियाना आदि लगाओल गेल।

भैयाजी आ देवानजी, महारानीक यात्रा शुरू होइतहि, एकरा लेल सम्पूर्ण रास्ता सतर्क रहलाह। सारो यात्रीक सुख-सुविधाक भार आन-आन कर्मचारीपर छलनि।

महारानीजीक संग ई समाचार पाबि अत्यन्त आनन्दित भऽ पण्डाजी संग हुनक पड़ावपर पहुँचलाह। बाद ओ लोकनि ओसारामे पहुँचलाह। पट बन्द भऽ गेल छलैक। सभ गोटे बाबाक मन्दिरक शिखर ओ त्रिशूलक दर्शन मात्र कयलनि। बाद एतबहि, ओ लोकनि काल्हि सविधि पूजा करताह।

महारानीजी तीन दिन वैद्यनाथ धाममे रहलीह। कोढ़ि, नाङड़, लूल्ह, आन्हर लोक सभकेँ महारानीजी वस्त्र आ अन्न दानमे देलथिन। एक सय एक पंडाकेँ न्योत देल गेलनि आ हुनका लोकनिकेँ विधि-विधानसँ भोजन करायल गेलनि। मन्दिर परिसरमे वैद्यनाथ आ पार्वतीक ओ पूजा कयलनि आ सुलतानगंजक उत्तरवाहिनी गंगाजल चढ़ाओल गेलनि। महादेव आ पार्वतीक

मन्दिरमे सोनाक छत्र चढ़ाओल गेल। काली मन्दिर, गणेश मन्दिर, हनुमान मन्दिर आदि सभमे सेहो महारानी पूजा कयलनि। देवानजी, भैयाजी झा आ संगक लोक सभ सेहो स्वस्थ चित्तें पूजा करलनि।

महारानीक निवास-स्थान पर सिपाही आ घोड़सवार सभक पहरा पड़ैत छलैक। बड़का शामियाना सभ लगा देल गेल छलैक जाहिमे सभ लोक विश्राम करैत छलाह। महारानीजीक जे तम्बू छलनि ओहिपर विशेष निगरानी राखल जाइत छलैक। भैयाजी झा आ देवानजीक तम्बू सेहो ओहि परिसरमे लागल छलनि।

तीन दिन धरि महारानीजी आ हुनक संगक लोक सभ मन्दिर परिसरमे नियमित रूपें बाबाक पूजा-अर्चा करथि। सायंकाल सभ गोटे बाबाक शृंगारक दर्शन करथि। तीन दिनुक बाबाक शृंगारक व्यय महारानी दिससँ देल गेल। मन्दिर परिसरमे एहन व्यवस्था कयल गेल जाहिसँ महारानी निर्विघ्नतासँ शृंगार आ आरतीक दर्शन कऽ सकथि। महारानी तँ अभिभूत छलीह। तीनू दिन जेना समग्र सांसारिकतासँ विच्छिन्न—विमुक्त भऽ अलौकिक आनन्दक सागरमे निमग्न रहलीह।

महारानी छलीह अत्यन्त व्यवहार-कुशला। बाबासँ पूजाक पश्चात् लोक सभ प्रणाम करबाक लेल, आशीर्वाद लेबाक लेल अबैत छलनि। ते जोहि कऽ देवानजी आ भैयाजी झाकेँ वजवाय बाबाक प्रसाद लऽ लेबाक आदेश देलथिन। कुछ गोटा कनेक संकुचित भऽ गेलाह जे ई बात जे महारानीकेँ कहऽ चाहलनि से हुनके सबकेँ पहिने किएक ने फुरलनि।

महारानीक आदेशसँ बाबाक प्रसादक रूपमे पेड़ा, अढ़ौआ आ चूड़ी प्रचुर मात्रामे कऽ लेल गेल। स्त्रगण लोकनिकेँ प्रसाद आ सनेसक रूपमे देबाक हेतु सिन्दूर, लहठी, चूड़ी इत्यादि सेहो कीनल गेल। सभ वस्तुकेँ छोरियाकऽ बान्हि कऽ राखि लेल गेल।

चारिम दिन सभ गोटे पंडा सभकेँ दान-दक्षिणा दऽ ओतयसँ विदा होइत गेलाह।

आब विचार छलैक बाबा बासुकीनाथक दर्शन आ पूजनक। परिपाटी छलैक जे मिथिलासँ जे केओ बाबा वैद्यनाथक पूजा लेल पहुँचथि ओ लोकनि ओतयसँ वासुकीनाथ सेहो अवश्य जाथि। महारानीजी बाबा वासुकीनाथक दर्शनक विचार पहिनहि कऽ लेने छलीह। महारानीक संरक्षक आ कर्मचारी लोकनि ओतय पहिनहि पहुँचि कऽ हिनक निवासक लेल सभ प्रबन्ध कऽ लेने छल। देवानजी, भैयाजी झा आ महारानीक दलक अन्यान्य तीर्थ-यात्री

तथा स्वयं महारानी जी आ हुनक परिचारिका लोकनि बेर खसैत-खसैत वासुकीनाथ धाम पहुँचैत गेलीह। वासुकीनाथ स्थित महारानीक लोकसँ समाचार भेटलनि। ओ महारानीक दलकेँ ओरियाति कऽ लऽ गेलथिन।

चारोकातमे ई समाचार पसरि गेल जे पहसराक महारानी बाबाक दर्शन करबा लेल सय गोटासँ अधिक लोकक संग आयलि छथि। लोक हुनक दर्शन हेतु घोड़सवार आ सिपाही सभकेँ देखबा लेल एकत्र भऽ गेल। महारानी अपन निवासपर गेलीह। ओ लोकनि अबेर कऽ वासुकीनाथ पहुँचल छलाह आ तेँ पूजा नहि कऽ सकलाह।

रातिमे महारानी बाबाक शृंगार-पूजा देखलनि। हुनका संगे सभ केओ बाबाक शृंगार-पूजा देखि मुग्ध छल। रातिमे अपन-अपन निवासपर सम्पूर्ण दल विश्राम कयलक। दोसर दिनसँ चारिम दिन धरि पूजा-अर्चा होइत रहल। चारिम दिन पूजाक काल महारानीजी बाबा वासुकीनाथकेँ सोनाक एकटा फल चढ़ाबल आ पार्वतीक पूजाक उपरान्त, पंडा लोकनिकेँ प्रचुर दक्षिणा देलथिन।

पूजा कयलाक बाद सम्पूर्ण दल अपन-अपन सवारीपर बैसल। महारानी जी अपन पालकीपर बैसलीह। पार्वतीक महादेवक स्मरण करैत पुरबी यात्रा आरम्भ कयलक आ बीच-बीचमे ठहरैत सिमरिया घाट पहुँचल। ओतय रामक गंगास्नान भेल। गंगाक कछेरपर महारानी आ हुनक दलक आगमनसँ एकटा छोट-छीन नगर बसि गेल छल। सेहो दिन आ राति ओ लोकनि गंगाक सेवन कयलनि आ दोसर दिन सभ गोटे गंगास्नान कयलनि। सभकेँ लोटामे प्रचुर गंगा-जल भरल गेल। मईट आ बालु लऽ लेल गेल। भोजनोपरान्त सभ गोटे पहसराक हेतु विदा भेलाह आ सकुशल ई दल मोहनीगढ़ी पहुँचल।

महारानी आ हुनक दलक पहुँचबाक समाचार मोहनीगढ़ी पहिनहि पहुँचि गेल छल। अमात्यवर्गक लोकसभ, राजक प्रमुख कर्मचारी लोकनि तथा किछु हेठरैयति लोकनि महारानीक स्वागतार्थ पहिनहिसँ ओतय उपस्थित छलाह। देवानजी आ भैयाजी झा लोकनि जिज्ञासापर सभकेँ यात्राक विवरण सुनौलथिन। सभ गोटे ई जानि प्रसन्न भेलाह जे एतेक दूरक यात्रामे एतेक लोक, घोड़ा, हाथी, पालकी आदि लऽ कऽ जयबामे कतहु कोनो विघ्न-बाधा नहि भेलनि। सबसँ महत्त्वपूर्ण ई छल जे राजपंडितजीक सतर्कताक कारणेँ सभ ठाम सभ गोटे विधि-विधानपूर्वक पूजा-अर्चा कयलनि। मोहनीगढ़ीमे

अनेक लोक जिज्ञासा हेतु आयल छल, सभकेँ बाबाक प्रसाद वितरण भेल। सभ भक्तिपूर्वक बाबाक प्रसाद ग्रहण कयलनि।

सम्पूर्ण दल दू दिन मोहनीगढ़ीमे विश्राम कयलक। तीर्थ-यात्रीगण खूब थाकल छलाह। मुदा मोहनीगढ़ीमे विश्रामक बाद ओ लोकनि स्वस्थताक अनुभव कयलनि।

तेसर दिन प्रातःकाल दल पहसराक लेल विदा भेल। रस्तहिमे भोजनादि भेलैक आ पहर रातिक समय सभ गोटे पहसरा ड्योढ़ी पहुँचि गेलाह। महारानीजीक आदेश छलनि जे सभ तीर्थ-यात्री रातिमे ड्योढ़ीमे भोजनोपरान्त अपन-अपन घर जयताह। ड्योढ़ीमे सम्पूर्ण परगन्नाक लोक बहुसंख्या जमा छल। अमात्यवर्गक अतिरिक्त राजक कर्मचारीगण आ सम्बन्धी लोकनि सेहो महारानीजीक अभिनन्दनक हेतु ड्योढ़ीमे उपस्थित छलाह।

महारानी सभसँ पहिने कुलदेवताकेँ जाकऽ प्रणाम कयलनि। हुनका प्रसाद उत्सर्ग कयलनि। तखन ड्योढ़ीमे अनेक लोक उपस्थित छलाह तनिका सभक ऊपर गंगाजल छीटल गेलनि। पुनः बाबाक प्रसाद उपस्थित लोकक मध्य वितरण भेल। ड्योढ़ीक भीतर जे सधवा लोकनि छलीह, से महारानीक पैर पर आँचर राखि-राखि प्रणाम कयलथिन। महारानी हुनका माथपर हाथ राखि-राखि अहिवात, कोखि, आरवल (आयुर्बल)सँ जुड़ायल रहबाक आशीर्वाद देलथिन। पुनः सभकेँ अपना हाथेँ बाबाक प्रसादक संग सिन्दूर, लहठी, मउनी इत्यादि सनेस देलथिन। सभ महारानीक आशीर्वाद पाबि कृतकृत्य छलीह।

एतबा दिनक बाद आइ पर्यन्त महारानीजी बाहर नहि गेल छलीह। ओ सकुशल अपन ड्योढ़ी आबि गेलीह तेँ एकटा विशिष्ट प्रकारक आनन्द आ उत्साहसँ वातावरण भरल छल।

महारानीजीक अनुपस्थितिक अवधिमे रिट साहेब, वैद्यनाथ सिंह आदि राजक अधिकारीगण तत्परतापूर्वक राज-काजकेँ देखलनि आ तेँ कतहु कोनो विघटन नहि भेलैक अ ई जानि महारानीजी अत्यन्त संतुष्ट भेलीह। पंडाजी आ देवान रामकिशोरी सिंह प्रसन्न छलाह जे ओहो लोकनि महारानीक कृपासँ सुविधापूर्वक तीर्थाटन कऽ लेलनि। राजपंडित बुधनाथ मिश्र एहि यात्रासँ बड़ आनन्दित छलाह।

महारानीजी तीर्थ-यात्रासँ बहुत प्रसन्न रहथि। हुनक संगमे जायवला बूढ़-पुरान लोक सभक प्रसन्नताक तँ कोनो ठेकाने नहि छलनि। ओ लोकनि

सोचथि जे धन्य महारानीजी जे दुर्बल शरीर लऽ कऽ वैद्यनाथ आ बासुकीनाथक दर्शन करवलहुँ आ सिमरियाघाटमे गंगा-स्नान करवलहुँ। महारानी सवारीक व्यवस्था कऽ कऽ हुनका लोकनिकेँ वृद्धावस्थामे चलबाक कष्टसँ बचा देलथिन।

तीर्थाटनसँ सकुशल घुरि कऽ अयबाक अवसरपर परगन्नाक ब्राह्मण आ वेठ-रैयति लोकनिकेँ निमंत्रण देल गेल। बनैटी, सोरा, फड़किया, हरसा, शिव-नगर, काला बलुआ आदिक ब्राह्मण आ रैयति लोकनि भोजमे सम्मिलित भेलाह।

विशाल भोजक प्रबंध भेल। नाना प्रकारक भोज्य वस्तुक व्यवस्था छल। दूध, दही, खोआ आ छेनाक मधुरक प्रचुर मात्रामे प्रबंध कयल गेल छल। सभ गोटे भोजन आ सम्मानसँ संतुष्ट भऽ गेलाह।

महादेवक स्थापनाकेँ महारानी कखनहु नहि बिसरथि। वैद्यनाथ धाममे महारानीजी बाबा वैद्यनाथकेँ खूब निहारि कऽ देखलनि आ जल रिसाल करबाक काल हुनकासँ ई प्रार्थना कयलनि जे 'प्रभु हमर राजधानी लग निवास करबा लेल चलू। सभ लोकनि अहाँक लग नहि पहुँचि सकैत अछि।'

एहि प्रसंगमे चन्द्रकूपकेँ सेहो ओ देखलनि आ ओकर उपयोगिताकेँ बुझलनि। शिवगंगाक सीढ़ीपर ओ डेरा देने छलीह। अनेक तीर्थयात्री बाबा वैद्यनाथक पूजा लेल आबथि से सभ पहिने शिवगंगामे स्नान करथि आ तखन चन्द्रकूपसँ जल भरि वैद्यनाथकेँ चढ़ाबथि। सभकेँ गंगा कात जाय गंगा जल अनबाक सुयोग नहि होइत छलैक। गंगाजल प्राप्त करबामे बड़ कठिनाइ होइत छलैक। तेँ बाबाक पूजाक हेतु चन्द्रकूपक जल अनिवार्य होइत छलैक।

महारानी वैद्यनाथहिमे पूजाक काल मनमे ई संकल्प लेलनि जे ओ अपन राजधानीक लग-पासमे महादेवक स्थापना करतीह। चन्द्रकूप सन एकटा इनार कोड़तीह आ शिवगंगाक सन एकटा पोखरि खुनतीह। एहि संकल्पक विषयमे ओ ककरहु नहि कहलथिन मुदा एकरा लेल ओ सतर्क आ सचेष्ट रहलीह।

जाहि दिन ओ वैद्यनाथक पूजा कयलनि ओहि दिनसँ महादेव हुनका मानस-पटलपर अवस्थित भऽ गेलथिन आ प्रतिदिन ओ हुनक स्थापनाक बात सोचैत रहलीह। हुनक वैद्यनाथसँ प्रार्थना छलनि जे यथाशीघ्र ओ समय आबय, जखन ओ अपन राजधानी लग हुनक स्थापना कऽ सकथि, पोखरि आ इनार

कोइवा लगवि, जतय शिव-रात्रिक अवसरपर आ आनो दिन हजार-हजार लोक महादेवक दर्शन कऽ सकैत आ हुनका जल चढ़ा सकथि ।

महारानीजीक मानस पटलपर महादेवक भावी मन्दिर, ओकर सोनहुल कलशयुक्त त्रिशूल, आगाँमे चन्द्रकूप आ ओहिसँ आगाँ स्वच्छ जलसँ पूर्ण सरोवर चित्तपर निरन्तर अबैत रहनि । ओ मानसचक्षुसँ देखैत रहथि, मन्दिरक दिशामे अरोहि लगल, सरोवरमे स्नान करैत चन्द्रकूपसँ जल भरि-भरि मन्दिरमे पूजाक लेल जाइत, पूजा कऽ कऽ अबैत शिवभक्त नर-नारीक समूह । हुनक कान अनवरत सुनैत रहय डमरूक लयपूर्ण नाद, घंटाक टन-टन, बम-बम बंभोलाक निनाद... ।

पैंतीस

शाह खान बहादुर अहमदअली पूर्णियासँ महारानीक शिवालयमे आयल छथि । ओ विजयगोविन्दक मित्र छथिन आ प्रायः हुनके वयसक छथि । ओ मधुरभाषी आ मिलनसार छथि । खान बहादुर एहि राजक हितैषी छथि आ हिनक पितामहक समयसँ पहसरा अबैत-जाइत रहलाह अछि । किछुए वर्ष पूर्व हुनक पिताक देहान्त भऽ गेल छनि आ पूर्णियाक कर्बला-मयदानमे जे कबरगाह छैक ओहिमे सबसँ आगाँ दक्षिण-पश्चिममे पहिल कब्र हुनके छनि आ एकटा खूब चिक्कन पाथर ओहि कब्रक माथामे लगाओल छैक । ओहिपर हुनके द्वारा रचित एकटा कविता उत्कीर्ण छैक । कविता फारसीमे छैक । ओ उच्च कोटिक कवि छलाह ।

खानबहादुर अहमद अलीक पिता पूर्णियाक अंतिम फौजदार छलाह आ 1771 ईस्वीमे पूर्णियाक प्रथम यूरोपियन सुपरवाइजर डुकारेलकेँ चार्ज देने रहथिन । नीक प्रशासकक कोटिमे हुनक गणना छलनि ।

ओ पछिलहिसँ पूर्णियामे अपन निवास-स्थान बना लेने छलाह । सेवासँ निवृत्त भेलाक बाद पूर्णियहिमे अपन ड्योढ़ीमे रहय लगलाह । हुनका पर्याप्त धनहु-जमीन्दारी छलनि आ ओ सुखपूर्वक पूर्णियामे रहैत छलाह ।

बहुत दिनसँ हुनक पुत्र अहमद अली खान पहसरा नहि आयल छलाह । एमहर सुनबामे अयलनि जे राजक काज सबमे बहुत सुधार भेल छैक आ प्रजाक आर्थिक उत्थानक हेतु अनेक प्रकारक काज भऽ रहल छैक ।

एहि काज सबमे हुनक मित्र विजयगोविन्द सेहो संबंधित छथि । ई बात हुनका पहसरा अयबामे विशेष उत्साह भेलनि । एकर अतिरिक्त हालहिमे महारानी तीर्थाटनसँ सकुशल घुरि कऽ अयलीह, तेँ जिज्ञासा करब आवश्यक छलनि ।

हुनका संग हुनक अंगरक्षक आ किछु प्यादा छलथिन । विजयगोविन्द सुनितहि आबि अपन मित्रक भेँट कयलनि आ दुनू गोटामे वार्तालाप होमय लागल ।

विजयगोविन्द—'कोना एतबा दिनपर हमरा लोकनि स्मरण अयलहुँ ?'

अहमद अली—'किछु दिन पूर्व हम पूर्णियाक वर्तमान चीफ, मिस्टर डिक्सीसँ भेँट करय गेल छलहुँ । ओ क्सनहुँ ई नहि बिसरैत छथि जे हम पूर्णियाक अंतिम फौजदारक पुत्र छी । खूब नीक संबंध रखैत छथि । ओहि दिन बहुत काल बैसा लेलनि आ गप्पक प्रसंगमे कहलनि जे महारानी इन्द्रावतीक जमींदारी महाराज इन्द्रनारायणक मृत्युक बाद किछु लड़खड़ा गेल छलनि । वस्तुतः ई लड़खड़ी तखनहि प्रारंभ भेल छल जखन महाराज बिमार छलाह । मुदा आब तँ महारानी राजक काया-पलट करय पर लागलि छथि । महारानी जे सुधार सभ कऽ रहलि छथि तकर प्रभारी तँ अहीँक पिता छथि । अहूँ हुनक सहायकक रूपमे काज करैत छियनि । डिक्सी साहेबकेँ ई बात बुझल छनि । ओ तँ महारानीक प्रशंसामे एतबा बाजि गेलाह जे हिन्दुस्तानक रानीक अर्थ हमरा लगैत छल कथा-कहानीक रानी सब । मुदा हमतँ एहि पर्दानशीन महारानीक सुशासनसँ मुग्ध छी । हम ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकारीगणकेँ सेहो हुनक प्रबन्ध-कुशलताक विषयमे जानकारी दैत रहैत छियनि ।'

विजयगोविन्द—'अच्छा, ई गप्प-सप्प सभ होइत रहतैक मुदा पहिने किछु जलपान तँ भऽ जाय ।'

खान—'पहिने कहवा आबय तखन आर किछु हेतैक ।'

विजयगोविन्द—'कहवाक प्रबंध तँ एहि राजमे ओहि समयसँ रहैत आयल छैक जहिया अलीवर्दी खाँक खालिस आ जमाइयो, सैयद अहमद खान पूर्णियाक फौजदार छलाह । हैबत खाँक मुइलाक किछु दिन बादसँ सात वर्ष धरि ओ पूर्णियाक फौजदार रहलाह आ कहवा हुनका खूब प्रिय छलनि । हमरा बहुत प्रसन्नता अछि जे अहाँ आइ हमरा लोकनिक बीच आयल छी । महारानीओ एहिसँ अत्यन्त आनन्दित हेतीह ।'

मस्त-मस्त होइत रहुक आ सम्पूर्ण मंडलीक सेहो कहुआ आबि गेल। अहमद अली कहुआक खूब तारीफ कयलनि। ओ पुछलथिन जे कहुआ के बनौने अछि? पता चललनि जे राजक पुरान खानसामा कहुआ बनौने अछि। ओ छीक बेर अहमद अलीक पिताकें सेहो कहुआ बना कऽ पिऔने छलथि। गपक क्रममे अहमद अली कहलथिन जे ओ दिनाजपुर जिला स्थित 'नेकमर्द' मेला गेल छलाह। एकटा हाथी आ दू टा नीक घोड़ा कीनब हुनक अभीष्ट छलनि। हुनका घोड़ा पसिन्न भेलनि मुदा दाम अधिक छलैक। हाथियो पसिन्न भेलनि मुदा किछु कमजोर छलैक। हुनका मेलामे इहो पता लगलनि जे महारानी तीर्थाटनपर गेल छथि आ ओतयसँ फिरबामे किछु दिन लगतनि। काल्हि पता लागल जे महारानी डयौढ़ी आबि गेलि छथि। हमरा तँ पहुँचबा प्रयत्नक छलहि मुदा महारानीजीसँ एहि अवसरपर दुआ लेब आवश्यक भऽ गेल।'

विजयगोविन्द—'मेलामे कतेक दिन छलहुँ?'

अहमदअली—'चारि दिन छलहुँ मुदा हमरा तँ हाथी-घोड़ा नहिञे पटल। लगहिक जमींदारसँ सेहो मेलामे भेँट भेल। ओहो हाथी किनबाक हेतु गेल छलाह। आब अगिला साल देखल जेतैक। ओतहि व्यापार आयल जे बहुत दिन भेल जे पहुँचा नहि गेल छी आ अहूँ लोकनिसँ भेँट नहि भेल अछि। राजमे जे विकासक काज भऽ रहल अछि तकरो जानकारी अभीष्ट छल।'

विजयगोविन्द—'अच्छा, ई खबरि अछि जे पूर्णियाक प्रधान अंगरेज सुपरवाइजर पूर्णियाक अंतिम फौजदारक घोड़ा-हाथी सभ बेचलक?'

अहमद—'हँ, किएक नहि लेत रहत? ओ तँ अकालक समयमे हाथी-घोड़ा सभक दाना नहि जुटा पायब, तँ हाथी-घोड़ा सभ बेचिए देलक। हमर खालिद साहेब, बड़ सोंखसँ नीक नस्लक हाथी आ घोड़ा सभ किनने छलाह।'

विजयगोविन्द—'घोड़सवार ओ नीक छल आ तेँ सन् सत्तरिक अकालक समयमे ओ घोड़हिपर चढ़िकऽ परगना सभक भ्रमण करैत छल।'

अहमद अली—'विजयगोविन्द! महारानीकेँ हमर सलाम कहि पठाबिऔन।'

तुरत एकटा ख्वासा दौड़ल गेल आ अन्तःपुरमे खबरि पहुँचौलक जे पूर्णियाक अंतिम फौजदारक पुत्र खान बहादुर अहमद अली खान आयल छथि

आ महारानीकेँ 'सलाम' निवेदन करैत छथिन। महारानी उत्तरमे हुनका 'दुआ' कहि पठौलथिन आ धिया-पुताक कुशल-मंगल पुछि पठौलथिन। खान बहादुर एहिसँ प्रसन्न छलाह आ उत्तरमे परिवारक कुशल-मंगल कहा पठौलथिन। एकर बाद जलपान भेल आ तकर बाद ओ लोकनि विश्राम करय लगलाह।

विजयगोविन्द सेहो हुनका लोकनिकेँ छोड़ि बावर्चीकेँ बजाय भोजनक संबंधमे आवश्यक निर्देश देलथिन। अहमद अली खान हुनक दोस्त छलथिन मुदा ओ सामान्य अतिथि नहि छलाह। एक तँ पूर्णियाक अंतिम फौजदारक पुत्र आ दोसर उच्चकोटिक जमींदारमे हुनक गणना होइत छलनि। तेँ हुनक मर्यादाक अनुकूल आतिथ्यक प्रबंध करब भेलैक। महारानी सेहो विजय-गोविन्दकेँ अहमद अली खानक जलपान, भोजन आ रहबाक व्यवस्थाक निर्देश देलथिन।

भोजनादिक बाद बातचीतक क्रम आरम्भ भेल। अहमद अली आरम्भ कयलनि—'हमरा सुनबामे आयल अछि जे अहाँ खरभुज आ तरभुजक बीया सभ कलकत्तासँ अनने छी?'

विजयगोविन्द—'हँ, पटनासँ हम बीया अनने छी आ धीपुर परगनामे एकर खेती प्रारम्भ करा देने छियैक। नदीक कछेरमे ई खूब होइत छैक। हम पटनामे नंगाक कातमे देखलियैक। एकर अतिरिक्त अंगूरक दू टा लत्ती राजमहलक हातामे लगौने छी।'

अहमद अली—'अंगूरक लत्ती केहन होइत छैक? ओकर गाछ केहन छैक?'

विजयगोविन्द—'चलू ने, देखि लिअऽ।'

अहमद अली खान विजयगोविन्दक संगे जाकऽ अंगूर लत्ती देखलनि आ बड़ आनन्दित भेलाह। लत्ती लहलहाइत छलैक। पुनः हुनका पूर्णियाक चीफ हिल्डोंक गप्पक स्मरण भऽ अयलनि। ओ कहलथिन—'हिल्डो साहेब कहैत छलाह जे आब तँ राजस्वक प्रत्येक किस्त राज द्वारा ठीक समयपर चुकती भऽ गेल जाइत छैक। सबसँ पैघ बात अछि प्रजाक आर्थिक स्थितिकेँ सुधारबाक राजक प्रयत्नशीलता। आब बुझैत छी जे पहुँचा राजक रैयतिकेँ माल-गुजारी देबामे कठिनाइ किएक नहि होइत छैक। ओ इहो कहैत छलाह जे पूर्णिया जिलामे मात्र महारानीक जमींदारी एहन छथि जतय 'मोस्ताजिर' अथवा 'बिचौलिया' लगान असूलैत नहि रहैत अछि। राजक अमला द्वारा

लगान वसूल कयल जाइत अछि आ लगान ओतबे वसूलल जाइत अछि जतबा रैयतिक नामे अंकित छैक। राजक अफसरमे रिट साहेब आ देवान रामकिशोर सिंहक ओ प्रशंसा करैत छलाह। हुनका एहिसँ प्रसन्नता छनि जे राज द्वारा इमारती लकड़ीक लाखो गाछ लगाओल गेल अछि। हमहूँ किछु सागुआन आ सीसोक गाछ अपन जमींदारीमे लगबय चाहैत छी।'

विजयगोविन्द—'कतेक गाछ चाही ?'

अहमद अली—'फिलहाल पाँच हजार सागुआन आ पाँच हजार सीसो।'

विजयगोविन्द—'कोनो बात नहि। हमर पौधशालामे गाछ तैयार अछि। हम पठा देब।'

राजमहलक बगीचा देखिकए अहमद अली मुग्ध छलाह। आम, जामुन, कटहर आदिक गाछ पाँतिमे लागल छल। सटले एकटा झील जकाँ विशाल पोखरि बनल छलैक। एक दिस फलक गाछ सभ छलैक आ दोसर दिस नाना प्रकारक फूलक गाछ सभ। एक कातमे मौसमी फूल सभ लागल छलैक। इक्जोरिया आ हरसिंगारी गेनाक गाछ सभ देखि अहमद अली मुग्ध छलाह। पोखरिक कछेरपर सँ पैघ-पैघ वृक्ष लागल छलैक जकरा सभ पर सुग्गा आ बुलबुल सैकड़ाक संख्यामे छल। बुलबुल आ पड़िबल पक्षीसभक सीटी सुनि कऽ अहमद अली किछु काल ठमकि गेलाह आ एहि संगीतकेँ सुनए लगलाह।

बगीचा देखिकऽ जखन ओ घुरलाह तँ महारानीसँ जयबाक आज्ञा माँगलथिन आ सलाम कहि पठौलथिन। महारानी ओकरासँ आशीर्वाद कहि पठौलथिन। एतबा कालक बाद ओ जाय लेल तैयार भऽ गेलाह। विजयगोविन्दक आग्रहपर फेर एक बेर नहुआक दौर चलल आ किछु कालक बाद ओ लोकनि पूर्णिया जयबा लेल घोड़ापर सवार भेलाह।

महारानीक आदेशसँ विजयगोविन्द सिंह रानीगंजक उत्तम कोटिक एक मन घी, उत्तम दहीक एक भार, सागुआन आ सीसोक पाँच-पाँच हजार गाछ रोपबाक हेतु सुरक्षित रूपेँ दोसरे दिन प्रातः अहमद अलीकेँ पठा देलथिन।

छत्तीस

पूर्णियामे अंगरेज लोकनिक अयलाक किछुए दिन बादसँ नीलक खेती शुरू भेल। नीलक पहिल फैक्टरी महारानी इन्द्रावतीक जमींदारीमे प्रारंभ

भऽ गेल। एहि फैक्टरीक निर्माण पूर्णिया नगरसँ किछु कोस दक्षिणमे कयल गेल।

ई 1775 ईस्वीक बात थिक। तखन महाराज इन्द्रनारायण राय जीवित छलाह। प्रारंभिक कालमे नीलक खेती रैयतिक ध्यान खूब आकृष्ट कयलक। पूर्णियाक बाद कड़िहार परगनामे शीघ्रतासँ फैक्टरीक निर्माण भेल। एहि प्रकारेँ पूर्णियाक दक्षिण दिशामे आ कड़िहार परगनामे नीलक खेतीक प्रसार प्रारंभ भेल। ओहि जमीन सभपर विशेषरूपेँ नीलक खेती होइत छल जाहिपर गंगाक बाढ़िक पानि एकबेर आबि जाइत छलैक। कड़िहार आ धुनारीपुर परगनाक जमीन एहि खेतीक लेल खूब उपयुक्त छल। बादमे पूर्णियासँ पश्चिम आ उत्तर दिस नाथपुर परगना दिस सेहो एकर खेतीक प्रसार भेल।

महारानीक नाथपुर परगनामे मिस्टर स्मिथ पैघ क्षेत्रमे नीलक खेती आरंभ कयलनि आ एहिपर आधारित व्यवसाय भेल नीलक गोटी तैयार करब जे रंगक काज करैत छलैक। महारानीक परगना सभक जनसंख्या कम छलैक आ तेँ एकर खेतीक हेतु, स्मिथ नेपालसँ मजदूरसभ आनैत छलाह। हिनके मादे कहल जाइत अछि जे सर्वप्रथम ई महारानीक जमींदारीमे आलूक खेती प्रारंभ करौलनि। शनैः शनैः नीलक खेती आ व्यवसाय बढ़ए लागल।

हवेली परगनाक चौधरी राजक प्रमुख अधिकारी वैद्यनाथ सिंहसँ पुछलथिन—'नीलक खेती एहन लोकप्रिय किए भेल जाइत अछि ?'

वैद्यनाथ सिंह—'ई रंगक काज करैत अछि आ पूर्णियामे बहुत दरपर एकर उत्पादन होइत अछि। निलहा साहेब लोकनि रैयतिकेँ एकर उत्पादन लेल हल-बरद, कमाओन आदिमे आर्थिक सहायता दैत छथिन। फसिल तैयार भेलापर साहेब अग्रिम देल राशि काटि कऽ रुपयाकेँ नीलक फसिलक दाम चुकता कऽ दैत छथिन। मालगुजारी चुकता करबामे ई नगदी फसिलक रूपमे बड़ उपयोगी होइत अछि आ एहि कारणेँ महारानी निलहा साहेब सभकेँ अपन जमींदारीमे नीलक खेती आ व्यवसायक हेतु आज्ञा देने छथिन।'

चौधरी—'हँ, हँ ई ठीक बात छैक जे पहिलुकासँ अधिक नियमित रूपेँ रैयति मालगुजारी अदाय करैत अछि। आब बुझलहुँ जे ई नीलक खेतीक प्रभाव थिक।'

वैद्यनाथ सिंह—'सावक अभिलेख देखलासँ पता चलत जे बहुत तेजीसँ एकर खेती आ फैक्टरीक प्रसार भऽ रहल अछि। महेन्द्रपुर, बनभाग आदिक अतिरिक्त परगना सुल्तानपुरमे कैयटा नीलक फैक्टरी चलि रहल अछि। महारानीक जमींदारीक अतिरिक्त रंगपुर, मालदह आदि जिलामे नीलक खेती होइत अछि।'

चौधरी—'पूर्णिया जिलामे नीलक खेतीक एतेक प्रसार कोना भेलैक?'

वैद्यनाथ सिंह—'एतय कोनो रैयतिकेँ नीलक खेती करबा लेल दबाव नहि देल जाइत छैक। लोककेँ स्वतः एहिमे नफा बुझि पड़ैत छैक। दोसर बात ई जे जखन जमीन आन फसिलसँ खाली रहैत छैक तखन नील बाओग शुरू कयल जाइत छैक। जाहि जमीन सभपर नीलक खेती कयल जाइत छैक ओहिमेसँ प्रायः अधापर नीलक फसिलक कटनीक बाद धान बाओग कयल जा सकैत छैक। और सभमे नील छोड़ि आन फसिल नहि उपजैत छैक। किछुए दिनमे महारानीक जमींदारीमे नीलक खेती बहुत लोकप्रिय भऽ गेल जे किछु रैयति पाँच कट्ठा तँ किछु रैयति सब बीघाधरि एकर खेती करय लागल। निलहा साहेब लोकनि जे नीलक खेतीक खर्चा लेल रैयतिकेँ अग्रिम रुपैया दैत छलखिन, तकर सूदि नहि लैत छलखिन। एहि सभक कारणेँ नीलक खेती एतय लोकप्रिय भेल अछि।'

फैक्टरीमे तैयार नील आमक लकड़ीक बक्सा सभमे भरिकऽ पठाओल जाइछ जाहिमे प्रत्येकमे चारिसँ साढ़े चारिमन धरि नील भरल जाइत छैक। ई विशेषतः कलकत्ता पठाओल जाइत अछि। रैयति सभकेँ नीलक बीयासँ सेहो लाभ होइत छलैक। किछु लोक नीलक खेती नीलक हेतु नहि कऽ कऽ बीयाक हेतु करैत छथि। बीयाक खरीददार विशेष रूपसँ बंगालक निलहा साहेब लोकनि छथि। रैयतिकेँ प्रत्येक एकमन बीयाक दाम फैक्टरी द्वारा चारि रुपैया दरसँ दऽ देल जाइत छलैक। चाउर, गहुम आदिसँ नीलक बीया बहुत अधिक महग बिकाइत छैक आ ई व्यावसायिक फसिलक कोटिमे अबैत छैक। सभसँ पैघ लाभ एहि खेतीमे ई छैक जे कृषक लेल बाधारक कोनो समस्या नहि उठैत छैक। नीलक बीया अथवा नीलक फसिल निलहा साहेब लोकनि बिना कोनो झंझटिक कीनि लैत छलथिन। नीलक फसिल बेचबाक हेतु रैयतिकेँ कतहुओ बाजार नहि जाय पड़ैत छैक। पूर्णियामे व्यावसायिक फसिल मात्र नील छैक जकरा बेचि कऽ रैयति मालगुजारी अदाय करैत अछि। महारानीक राजस्वक वसूलीक नियमितताक सेहो रहस्य छलैक।

एकटा आरो कैयक नीलसँ ई भेलैक जे जिलामे आन मुद्राक संतुलन कायम रहैत छैक। बाहरसँ आब एहि जिलामे मुद्रा अबैत छैक जे पहिने नहि होइत छलैक।

महारानीक रैयति लोकनिक आर्थिक स्थितिमे नीलक खेतीसँ बहुत सुधार भेलैक। महारानीकेँ मालगुजारीक असुलीमे सुविधा होमय लगलनि। एही कारणेँ महारानी नीलक खेतीकेँ प्रोत्साहित करलथिन। पूर्णियामे रैयति, निलहा साहेब आ जमीन्दारक बीच कहियो वैमनस्य नहि भेलैक। कोनो-कोनो जिलामे रैयति आ निलहा साहेबक बीच वैमनस्य नहि छलैक। महारानीक रैयति एहि नीलक खेतीसँ खूब लाभ उठबैत छल।

अपन जमीन्दारीमे नील आ आलूक खेती प्रारंभ करयबाक श्रेय महारानीकेँ छनि।

प्रारंभमे आलू देवता-पितरकेँ प्रसाद रूपेँ नहि चढ़ाओल जाइत छल। उच्च वर्गक लोक सेहो आलूकेँ विदेशी पदार्थ बुझि नहि खाइत छलाह। पुर्तगाली-जहाजी द्वारा एकर बीया अपन देशमे आनल गेल छल।

मुदा एकर खेती खूब सुलभ छलैक। कार्तिकमे आलू रोपल जाइक आ पूस-माघमे उखाड़ि जाय। जे लोकनि आलू खायब प्रारंभ कयलनि ओ लोकनि एकर स्वादक विस्तारपूर्वक वर्णन करथि। एकर स्वाद बहुत प्रिय होइक। एहि प्रकारेँ आलूक प्रचार आ प्रसार होमय लागल। शनैः शनैः सब वर्ग एकरा खाय लागल। मुदा बहुत दिन धरि देवताकेँ आलू नहि चढ़ाओल जाय आ विधवा सेहो नहि खाथि। विदेशी भेलाक कारणेँ प्रारंभमे लोक आलू खयबासँ घबराइत छल मुदा एकर उपयोगिता आ खेतीक सुविधा देखि लोक खूब खाय लागल आ एकर खेतीक खूब प्रसार भेल। मूलतः विदेशी भेलाक कारणेँ एकरा बहुत लोक बिलायती आलू कहऽ लगलखिन।

आलूक प्रारंभ-कालक प्रसंगमे एकटा रोचक कथा अछि। एक गोटाक ओहिठाम भोज छलैक। करबैया नव आ रुचिकर तरकारी बुझि आलूक तरकारी करौने छल। रुचिकर आ स्वादिष्ट लगबाक कारणेँ लोक खूब खयलक। भोज खाइत एक ब्राह्मण परसैयाकेँ पुछलथिन जे ई स्वादिष्ट तरकारी कथीक छल। उत्तर भेटलनि जे ई आलू छल। एतबा सुनैतहि गर्द मचि गेल। परसैयापर ब्राह्मण लोकनि क्रुद्ध भेलाह जे ओ विदेशी वस्तु खोआ कऽ हुनका लोकनिक जाति लेलथिन। ओ लोकनि भोजन

समाप्त नहि करललनि । शीघ्रहिमे ओहि ठेलाह आ एहि पापक लेल प्रायश्चित्त सेहो करलनि ।

मुदा किछुए दिनमे ई प्रमुख तरकारीक स्थान लऽ लेलक । एकर लोकप्रियताक कारण स्वाद आ तेकर गुणवत्ताक अतिरिक्त ई छलैक जे ई बहुतो दिन धरि संजोगल जा सकैत छल ।

सैंतीस

महारानी आब अधिकांश काल पूजा-पाठ, व्रत आदिमे व्यतीत करथि मुदा ओ शासनक काज छोड़ने नहि छलीह । आब अधिकांश काज ओ भैयाजी झाक माध्यमसँ कराबथि । आब वर्षमे एकबेर ओ राज्यक अभ्यन्तर अवस्थित मन्दिर सभक खोज कऽ लेथि । पूजा-पाठ सभ नियमपूर्वक होइत छैक की नहि, तकरो ओ जाँच करा लेथि । विद्यालय सभ जे ओ महाराज इन्द्रनारायणक स्मृतिमे स्थापित करौने छलीह, से सुव्यवस्थित ढंगसँ चलैत अछि कि नहि, तकरहुपर हुनक ध्यान रहैत छलनि ।

हुनक आंतरिक इच्छा छलनि एकटा महादेवक मन्दिर बनयबाक । दीर्घदिनसँ बुढ़ापाक बाट सेहो एहि विषयमे अधिक सचेष्ट भऽ गेलि छथि । आब सोचैत छथि जे हुनक जीवनक अंतिम चरण आबि गेलनि आ तेँ शीघ्रातिशीघ्र मन्दिर निर्माणक काज सम्पन्न कऽ लेल जाय ।

एहि हेतु ओ भैयाजी झा, देवान रामनिहोरा सिंह आ विजयगोविन्दसँ विचार प्रारंभ कयलनि । सबसँ पहिल बात छल मन्दिरक लेल स्थानक चयन । महारानीक राजधानीसँ प्रायः तीन कोसपर हुनक संबंधीवर्गक लोक सभ फड़किया, दुलमनी, बसैठी, खोखा, महुअैठी आदि ग्राममे बसैत छलथिन । भैयाजी झाक विचार भेलनि जे मन्दिर केन्द्रीय स्थानपर बनय । देवानजीक सेहो सैह मत छलनि । सभ गोटे विचारि कऽ स्थिर कयलनि जे मन्दिर निर्माणक लेल बसैठी सबसँ उपयुक्त होयत । हिन्दुक ग्राम सभक केन्द्रमे ई स्थान पड़ैत छलैक । मन्दिर बनयबाक विचार 1796 ईस्वीमे कयल गेल आ ओही समयमे इहो स्थिर कयल गेल जे शकाब्द 1719 (ईस्वी 1797)क फाल्गुन शुक्ल द्वितीयाकेँ शिवलिङ्गक स्थापना कयल जाय । महारानीक विचार छलनि जे मन्दिर परिसरमे एकटा पोखरि आ इनार सेहो होयब

आवश्यक । विजयगोविन्द कहलथिन जे शिवलिंगक स्थापनाक तिथि धरि इनार आ पोखरि सेहो बनिकऽ तैयार भऽ जाय । सैह विचार भेल जे उत्तम कोटिक शिल्पी द्वारा मन्दिर निर्माणक काज अविलम्ब प्रारंभ कयल जाय जाहिसँ निश्चित तिथि धरि ई काज सम्पन्न भऽ जाय । मन्दिर निर्माणक हेतु शिल्पीक चयनक काज रामनिहोरा सिंह पर देल गेल । पोखरि आ इनार खोदयबाक कार्यक्रम एना राखल गेल जे मन्दिर, इनार आ पोखरि सभ शकाब्द 1719 क फाल्गुन शुक्ल द्वितीयाक पहिनहि बनि कऽ तैयार भऽ जाय । एही दिन महारानी महादेवक प्राण-प्रतिष्ठाक निश्चय कयने छलीह ।

दू मासक अभ्यन्तर ई तीनू कार्यमे हाथ लागि गेल । मन्दिर बनय लागल । पोखरिक माटि कटय लागल आ इनार कोड़ल जाय लागल । बीच-बीचमे कतेक प्रतिकूलताक कारणेँ अथवा मन्दिरक लेल आवश्यक सामग्रीक अनुपलब्धताक कारणेँ काज किछु विलम्ब भेल तथापि ताहूक मुदा सामान्यतः कार्यक्रमानुसार कार्य आगाँ बढ़ि रहल छल । महारानीक इच्छा छलनि जे जहिना चन्द्रचूड़क जल देवघरमे बैद्यनाथजीपर चढ़ैत छनि तहिना मन्दिर परिसरक इनारसँ शिवलिंगपर जल चढ़ाओल जाय । शिवजीसँ ओ प्रार्थना करथिन जे एहि इनारक जलकेँ ओ गंगाजलक शक्ति प्रदान करथुन । आब शिवलिंगक स्थापनामे मात्र छओमास रहि गेल अछि । मन्दिर, पोखरि आ इनारक निर्माण-कार्य [illegible] रहल अछि ।

देवान रामनिहोरा सिंह, भैयाजी झा आ विजयगोविन्दकेँ महारानी कहलथिन आ कहलथिन जे दू टा प्रमुख काज बाकी अछि—एक तँ शिवलिंगक निर्माण आ दोसर मन्दिरमे लगयबाक हेतु शिला-लेखक रचना । दोसर काजक लेल एहन विद्वानक अन्वेषण आवश्यक छल जे संस्कृतमे छन्दोबद्ध प्रशस्ति-रचना कऽ सकथि । एहन शिल्पी जे पाथरपर अक्षरांकन कऽ सकय तथा उपयुक्त प्रस्तर-खंडक चयन करए । एकर भार भैयाजी झापर देल गेलनि । एक मास धरि ओ एकर खोज-बीन करैत रहलाह आ तकर बाद काशीक एक विख्यात शिल्पीकेँ निर्माणक भार देल गेलनि । संगहि उत्तम कोटिक शिला-खंड अनबाक भार एक कुशल व्यक्तिकेँ देल गेल । संस्कृतमे छन्दोबद्ध प्रशस्ति-रचनाक भार राजपंडित श्री शुभनाथ मिश्रकेँ देल गेलनि ।

महारानी मंदिर आ मंदिर परिसरक पोखरि आ इनारक प्रगति देखि अत्यन्त आनन्दित छलीह । ओ बीच-बीचमे निर्माण-कार्य देखबाक हेतु

बसैठी चल आबथि। शकाब्द 1719 क माघहिमे मन्दिर बनि कऽ तैयार भऽ गेल। पोखरिक मोहाड़ सभपर सेहो सक्की छिछा देल गेल आ इनारक चारू कात प्रशस्त लहुरा बना देल गेल। काशीसँ छबरि आयल जे शिवलिंग सेहो तैयार अछि। महारानी एक राज-कर्मचारी काशी गेल आ ओतयसँ शिवलिंग ओ एक शिल्पीकेँ जे शिलाखंडपर अक्षरांकन करत, लऽ कऽ महादेवक स्थापनाक तिथिसँ एक सप्ताह पहिने बसैठी आयी गेल। प्रशस्ति-रचना सेहो समयपर प्राप्त भऽ गेल। शिलाखंडपर अक्षरांकनक काज प्रारंभ भऽ गेल। भैयाजी आ सचोंठ रहलाह आ काज सभ कार्यक्रमानुसार आगाँ बढ़ि रहल छल।

निर्धारित तिथि आबि गेल। महारानी अपन सम्पूर्ण प्रजाकेँ महादेवक प्राण-प्रतिष्ठा आ पोखरि तथा इनारक महोत्सवमे सम्मिलित होयबाक हेतु विभिन्न परगनाक चौधरीक माध्यमसँ आमंत्रित कयलथिन। एकर अतिरिक्त ओ अपन कुटुम्बवर्गकेँ आमंत्रित कयलथिन। राजक अधिकारी वर्ग आ कर्मचारी वर्ग आमंत्रितो छलाह आ कार्यकर्त्ता छलाह। परोपट्टाक निवासीकेँ उपस्थित रहबाक हेतु महारानी अनुरोध कयलथिन।

आइ ओ शुभ दिन आबि गेल। आइ फागुन शुक्ल द्वितीया थिक। प्रजावर्ग आ कुटुम्बवर्गक अतिरिक्त एक सय एक ब्राह्मण यज्ञमे भाग लेबाक हेतु उपस्थित छथि। सम्पूर्ण बगीचा लोकेँ बसैठी आबि गेल अछि। प्रायः पचास हजार लोक उत्सव देखबाक हेतु आयल छथि। नव निर्मित मन्दिरमे शुभ मुहूर्तमे श्रेष्ठ वैदिक यद् ब्राह्मण द्वारा सविधि महादेवक प्राण-प्रतिष्ठा कराओल गेल। एकर बाद पोखरिक यज्ञ प्रारंभ भेल आ इनार उड़ाहल गेल।

महादेवक प्राण-प्रतिष्ठाक संगहि मन्दिरमे शिलालेख लगाओल गेल। धूपन, गुग्गुल आदिक धूमसँ सम्पूर्ण वातावरण सुगंधित छल। कीर्ति शिलापर उत्कीर्ण पंडित शुभनाथ मिश्र अपन रचनाक पाठ प्रारंभ कयलनि—

वंशे लभ्ये समाजे सुरगणविदिते भूसुरस्यावतीर्णे—
राजा भूत् कृष्णदेवो नृपति समर सिंहाभिधस्यात्मजातः।
अस्मिन् राज्याभिषेकं फलयितुमिच्छद् भक्ति तुष्टो महेशः
कैलासाद् भूगतोऽस्यात्मधिलखशिरो वैद्यनाथेन साकम् ॥1॥
तस्य तनूजः सुकृतिनृपवरो विश्वनाथ राजोऽभूत्
वीरनारायण राजस्तस्याप्यासीत् सुतस्तस्य।

नरनारायण राजो नरपति कुलमौलि भूषणप्युतः
अर्थिनि कल्पद्रुम इव सुरगणवंशावतंसोऽभूत ॥2॥
तस्यापि वैरिकुलसूदन रामचन्द्र नारायणो नरपतिस्तनयो बभूव।
संतोषिता दश दिशो निज कीर्ति चन्द्र—
ज्योत्स्नाभिरर्थि-निवहः मुदितस्तयेन ॥3॥
यद्वान्नकारि परिवर्धित वारि राशि—
रम्लान कीर्ति विमलेन्दु मरीचिकाभिः।
सोषोषिता दश दिशः नतनूज बन्धु—
नारायणोऽस्य कुल भूषण राम राजः ॥4॥
तेन च सत्कुल जाता भगवोध शर्मणः कृतिनः।
परिणीता बहुपत्नीष्विव लोचनेनादि पुत्रीव ॥5॥
यस्याः प्रतापतरणावुदिते हि चित्ते
पित्रारविन्द अनमालमते विकासम्।
सौहृदय हृद मकरन्द नयोदयेन
अवैव यद् गुणगणमधुपाम्बि तोषात् ॥6॥
यत्रैर्देवगणो द्विजाति-निवहः शस्तावनस्यादरै—
रर्थैः पूर्णमनोऽर्थि-पटलः नर्मोक्तिभिः तज्जनाः।
गर्जद्वैरि मदान्धवारणे चण्डचण्डत् प्रतापाद् भुवि—
दैत्याः सर्व इमे कृता गुण नवैर्धन्याश्च भूमीतले ॥7॥
श्री श्री इन्दुमती सती मतिमती देवी महाराज्ञिका
जाता मैथिल माण्डराभिध कुलाम्भोधौ सरोजालया।
दाने कल्पलतासमः व्रतवती श्री विष्णु सेवापरा
पातिव्रत्य परायणात्र सततं गङ्गेव सम्पादिनी ॥8॥
शाकाब्दे नवचन्द्र शैल धरणी संलक्षिते फाल्गुने
मासि श्वेतदले सितांशुरिव सिते पक्षे द्वितीया तिथौ।
भूदेवैर्वर वैदिकैर्मठमिमं निर्माप्य सचित्तितैभि—
स्तत्रेशेन्दु मतीश्वरस्य विधिना प्राण-प्रतिष्ठां व्यधात् ॥9॥
सोदर कुल-संभव राजपनुकम्पोपजीविनः कृतिनः।
श्री शुभनाथस्य कृतिर्मोदं विदधातु सज्जनतानाम् ॥10॥

उपस्थित जनसमुदाय भाव-गम्भीर भावसँ श्रवण करैत रहल। सभामे दूरसँ आयल एक सामीप्य निवेदन कयलथिन—'पंडितजी, हमरा लोकनि सभ

जोँ संस्कृतक ज्ञाता नहि छी तेँ अपने अपन भाषामे एकरा बुझा दितिऐक तँ हमरहु लोकनि एकर रसास्वादन कऽ सकितहुँ ।'

पंडितजी—'बेस, सुनू । हम अपन भाषामे कहैत छी ।'

'भगवानक प्रसिद्ध गुरगण मूलक ब्राह्मणक सद्वंशमे समर सिंह नामक नृपति भेलाह जनिक आत्मज हर्षेँ राजा कृष्णदेव अवतीर्ण भेलाह । हिनक भक्तिभावसँ संतुष्ट भए स्वयं महेश राजा कृष्णदेवक राज्याभिषेककेँ सफल करबाक हेतु कैलाससँ भूतल पर आबि वैद्यनाथक नामे विराजमान भेलाह ।[1]

हिनक पुत्र कर्तव्यपरायण कुशल राजा भेलाह विश्वनाथ, जनिक तनय भेलाह राजा वीरनारायण । हिनक पुत्र भेलाह नृपति कुलभूषण गुरगणवंश शिरोमणि राजा नरनारायण, जे याचक लोकनिक मनोरथ पूर्ण करबामे कल्पवृक्षक समान छलाह । [2]

राजा नर नारायणकेँ शत्रुकुल संहारक रामचन्द्र सदृश राजा रामचन्द्र नारायण पुत्ररत्न भेलथिन, जनिक कीर्तिचन्द्रिकासँ दशो दिशा व्याप्त भए उद्भासित भऽ गेल । हुनक दानसँ याचकवृन्द अतिशय आनन्दित छलाह । [3]

हिनक (रामचन्द्र नारायणक) दानकालीन संकल्प-जलसँ जलराशि (समुद्र) परिवर्धित भए जाइत छल, जाहिसँ हिनक शरद चन्द्र मरीचिक समान कीर्ति-चन्द्रिका दशो दिशाकेँ उद्भासित करैत छल । हिनक पुत्र भेलाह कुलभूषण राजाधिराज इन्दु नारायण । [4]

ई पण्डित मनबोध शर्माक सत्कुलोत्पन्न आत्मजाक यत्नपूर्वक पाणिग्रहण कएलन्हि, जेना भगवान शंकर पार्वतीक परिणय कएने छलाह । [5]

ओहि महारानीक प्रताप सूर्यक उदय भेला पर निश्चिन्तताक कारणेँ, जनताक हृदयारविन्द विकसित भए गेल आ तानीक सहृदयताक मनोहर मकरन्द-रसमे लुब्ध मधुप जकाँ हुनक गुण-गण संतुष्ट भए ओतहि आनन्द-विभोर भऽ गेल छल । [6]

महारानीक गुण-गणसँ भूतल पर—यश द्वारा देवता लोकनि; प्रशस्त दान, प्रणति आ समादरसँ द्विजाति लोकनि; दानसँ सन्तुष्ट याचक लोकनि; सुन्दर नीतिसँ सज्जन लोकनि, वशीभूत भए गेल छलाह आ प्रचण्ड प्रतापक प्रबलतासँ शत्रुक गर्वित मदान्ध गज घटा वशीभूत छल । [7]

बुद्धिमती पतिव्रता देवी महारानी इन्दुमती सागर समान नाथपुर नामक मैथिल कुलमे महालक्ष्मी सदृश छलीह जे अपन दानसँ कल्पलताकेँ तिरस्कृत कए देलनि । पति परायणा सनातन पवित्र श्री इन्दुमती निरन्तर श्रीविष्णुक सेवामे निरत रहैत छलीह । [8]

शकाब्द 1719क शुभ फाल्गुन शुक्ल द्वितीया शुक्र दिनमे महारानी इन्दुमती श्रेष्ठ वैदिक सद्ब्राह्मण द्वारा एहि निर्मित मन्दिरमे सविधि महादेवक प्राण-प्रतिष्ठा करओलनि । [9]

सोदरपुर वंशमे उत्पन्न महारानीक अनुकम्पासँ सुखपूर्वक जीवन यापन करैत विहार पंडित श्री सुभनाथक ई कृति विद्वत्समाजमे मोद बढ़ाबओ । [10]

भाषामे व्याख्या सुनि लोक आनन्दित छल ।

महारानी दान, भोजन आ सम्मानसँ कुटुम्बवर्गकेँ संतुष्ट कयलनि ।

जाहि वर्षसँ बनैठीमे महादेवक स्थापना भेल अछि ओतय प्रतिवर्ष शिवरात्रिक अवसरपर धूमधामसँ मेला लगैत अछि । परोपट्टाक लोक महादेवकेँ जल ढारबाक हेतु ओहि दिन बनैठी अबैत छथि, मेला देखैत छथि आ मेलामे नाना प्रकारक वस्तु क्रय करैत छथि । मेलाक समयमे महारानीक शिविर सेहो बनैठीमे रहैत छनि । राजक प्रमुख अधिकारी आ कर्मचारी लोकनि सेहो मेलामे उपस्थित रहैत छथि । राज पंडित सुभनाथ मिश्र शिवरात्रिक पाँच दिन पूर्व बनैठी आबथि आ पाँच दिन बाद ओतयसँ जाथि । दस दिन धरि घुरौतीन मेला लागल रहैत छलैक । एहि अवसर पर लोक पोखरिमे स्नान करथि आ मन्दिर-परिसरक इनारक जल महादेवकेँ चढ़ाबथि । बहुत लोक एहि अवसर पर बाहर आबथि अथवा मनिहारीसँ गंगाजल आनिकऽ सेहो महादेवकेँ चढ़बैत छथि । महारानीक लेल मनिहारी घाटसँ गंगाजल अबैत छनि । मन्दिरक चारू कात लगाओल बेलक गाछ सभ फलदार भऽ गेल अछि । एकर अतिरिक्त विभिन्न प्रकारक फूलसँ मन्दिरक परिसर शोभायमान रहैत अछि ।

बनैठी मेलामे परगना हवेली आ परगना धरमपुरक अतिरिक्त दूर-दूरसँ सौदागर सभ अबैत छथि । हिन्दू-मुसलमान सभ एहि मेलामे क्रेता-विक्रेताक रूपमे पैघ संख्यामे अबैत छथि । एकटा जे उत्कृष्ट वस्तु एहि मेलामे बिकबाक लेल अबैत अछि से थिक 'बिदरी' द्रव्यसँ बनाओल बासन सभ । बिदरी एक प्रकारक द्रव्य भेल जाहिमे जस्ताक बाहुल्य रहैत छैक । 'बिदरी'क बासन बनयबाक कला हैदराबादक निजामक 'बिदार'सँ महारानी इन्द्रावतीक जमींदारीमे पूर्णिया आयल छल । ओहि बिदरीक बर्तन सभपर उत्कृष्ट कोटिक नक्काशीक काज कयल जाइत छैक । एकर कारीगर सभ हवेली परगनामे बसि गेल छल । एहि 'बिदरी' द्रव्यक बर्तन सभ यथा हुक्का, पिकदान, तश्तरी बनाओल जाय । अर्थनक उत्कृष्ट बाद ओहिपर सामान्य सोना-चानीक नक्काशी कयल जाइत छल । पूर्णिया जिलाक रईस आ रजवाड़ा सभ द्वारा

एकर खूब खपत होइत छल। नवागन्तुक अंगरेज शासक लोकनिक बीच सेहो कम्पेनीमे बिदरी-बर्तनक व्यवहार लोकप्रिय भऽ गेल। पुर्णियासँ मुर्शिदाबाद, अवध आ दिल्ली पर्यन्त 'बिदरी'क बर्तन उपहारमे पठाओल जाइत छल। बसैठीक शिवरात्रिक मेलामे एकर खूब बिक्री होइत छलैक आ एकर कारण छलैक जे पुर्णियाक जमीन्दार लोकनि एहि मेलामे महारानीक निमंत्रण पर अवश्य आबथि। आन राजा-महाराजा आ अभिजात्य वर्गक लोक सभ 'बिदरी'क कलापूर्ण वस्तु सभ कीनि लैत छलाह।

गौड़-मधुरक लेल ई मेला प्रसिद्ध छल। एकर कारण छलैक जे एहि मेलासँ किछुए दूर पर परगना धर्मपुरक सीमा छल जतय दूर-दूर धरि विस्तृत चरौर छल। शिवरात्रिक समय धरि दूर-दूरसँ महींस-गाय आदि चरबाक हेतु एहि परगनामे आबि जाय, कारण जे खूब सुलभ दर पर एतय चराइ लेल जाय, गाहक चराइओ लेले नहि जाय। एहि कारणेँ मेलाक अवसर पर दूध प्रचुर मात्रामे भेटैक। ई मेला छेना आ खोआक लेल नामी छल। लोक मेला आबि कऽ मधुर खयबे टा करथि। एहि छेनाक मधुर सभक सेहो विशेषता छलैक जे ई बड़ सस्त बिकाय। दूधक आपूर्ति शिवरात्रिक अवसर पर मांगसँ अधिक भऽ जाइक। एहि अवसर पर राज द्वारा जे लोककेँ भोजन कराओल जाय, ओहिमे ई मधुर सभक खूब व्यवहार होअय। एकर अतिरिक्त दूर-दूरक हलुआइ सभ मधुर बनबय लेल एहिठामसँ खोआ कीनि कऽ लऽ जाइत छल।

एहि मेलामे दू वस्तु लोक विशेषरूपेँ कीनय—रानीगंजक घी आ ओहि ठामक मेड़ीक कम्बल।

जहियासँ बसैठीक मन्दिर बनल तहियेसँ बसैठीमे शिवरात्रिक अवसर पर मेला लागब प्रारंभ भेल जे अबाध रूपेँ चलैत रहल।

अड़तीस

महारानी माघी पूर्णिमामे गंगा स्नान करबाक हेतु काढ़ागोला अबैत छथि। पुर्णियासँ काढ़ागोला प्रायः दस कोस हटैक। एहिमे हुनका कैकटा उद्देश्य रहैत छलनि। एहि अवसर पर काढ़ागोलामे विशाल मेला लगैत छलैक। एहि स्थानक नाम पहिने कर्णगोला छल मुदा बादमे ई कांगरा-

गोला आ तकर बाद काढ़ागोला भऽ गेल। आसाम-कुमाऊँक व्यापारी सभ जीर-मरीच आ अन्यान्य प्रकारक मसालाक व्यापार करबाक हेतु एहि मेलामे अबैत छल। तिब्बत आ नेपालक व्यापारी सेहो रुद्राक्ष, बघछाला, छूरी, कटौता, खुकड़ी आ देशी बन्दूक सभ बेचबाक हेतु एहि मेलामे अबैत छल। गंगाक कछेरपर तम्बू आ खड़क हलुकापर सभसँ विशाल नगर बसि जाय।

सम्पूर्ण क्षेत्रमे विशाल बालुकाराशि, आ तेँ जगहक कोनो अभाव नहि। एहिमे पतियानीसँ व्यापारी लोकनि अपन दोकान लगबथि। लगमे बहैत शांत आ स्वच्छ जलवाली गंगा नदी। लोकसभ, खास कऽ कऽ जमींदार लोकनि, साल भरिक लेल आवश्यक वस्तु सभ जे एहि मेलामे उपलब्ध होअय, से कीनैत छलाह। किछु वस्तु एहन छलैक जे एही मेलाठाममे भेटैक जेना कपिला गायक चामर, शंख, शंखक चूड़ी आदि।

रामटहल आ मुसरी झा मित्र छथि। मुसरी राजक कर्मचारी छथि। दुनू मेलाक विषयमे वार्तालाप करैत छथि। रामटहलक मोनमे कोनो-कोनो बातक जिज्ञासा छलनि जकर समाधान हेतु उताहुल छलाह। ओ जिज्ञासा कयलथिन—'औ मुसरी झा, ई तँ कहू जे महारानी डेरा खसाकऽ मेलामे किएक रहैत छथि?' रामटहल दिस ताकि मुसरी झा कहलथिन—'महाराज समर सिंहसँ लऽ कऽ आइ धरि जे शासक एहि कुमाण वंशमे भेल छथि, सभ माघी पूर्णिमाक मेलामे अबैत रहलाह अछि। महारानी अबैत छथि तँ ई कोनो नव बात नहि भेलैक।'

—'किछु कारण तँ हेतैक?'

—'कारण छैक। सभसँ पहिने तँ माघी पूर्णिमाक गंगा स्नानक अपन महत्त्व छैक। महारानी राज-काजमे लागल रहितहुँ सतत देवाय-धर्मादिमे लागल रहैत छथि। जतबा दिन ओ माघी पूर्णिमाक मेलामे रहैत छथि, प्रतिदिन एक सय एक ब्राह्मणकेँ भोजन करबैत छथि।'

रामटहल—'हँ, ई तँ हमरा बूझल नहि छल।'

मुसरी—'अहाँकेँ बूझल होयत जे पूर्णिया जिलाक सभ जमींदार एहि मेलामे अबैत छथि आ सभ गोटाकेँ एक दोसरासँ भेँट होइत छनि।'

रामटहल फेर प्रश्न कयल—'हमरा सुनबामे आयल अछि जे कलक्टरो मेलामे कैम्प करैत छथि से किएक?'

मुसरी—'मेलामे हजारो हजार लोक अबैत छैक, भारी भीड़-भड़क्का रहैत छैक। कोनो प्रकारक उपद्रव ने भऽ जाइ ताहू कारणेँ कलक्टर साकांक्ष रहैत छथि आ सहायकक संग मेला पर्यन्त मेला-परिसरमे निवास करैत छथि।'

रामटहलक प्रश्न बढ़िते जा रहल छलनि—'महारानीक नोकर-चाकर, देवानजी आ राजक अधिकारीगण पैघ संख्यामे अबैत छथिन, से किऐक ?'

—'महारानी एकबेर तँ मेलामे नहि औतीह। हुनक पालकी ढोअयबला कहार सभ, भनसिया, नोकर, पहरेदार आ परिचारिका सभक आयब तँ आवश्यक छैक।'

—'हँ, ई तँ अत्यावश्यक छैक।'

—'एकर अतिरिक्त एहि मेलामे राजक लेल बहुत किछु क्रय कयल जाइत छैक। वर्ष भरिक खर्चक योग्य अनेक वस्तु राज द्वारा कीनल जाइत छैक आ एहि कारणेँ देवानजी आ ड्योढ़ी सुपरिनटेन्डेन्ट सेहो अबैत छथि।'

—'से की सभ कीनल जाइत छैक ?'

मुसरी गनबऽ लगलाह—'वर्ष भरिक तेल छैक मन ओर, मरीच, लौंग, दालचीनी, सुपारी आदि कीनल जाइत छैक आ एहि मेलामे सस्त दरपर सभ भेटि जाइत छैक कारण जे दूर-दूरसँ व्यापारी सभ विशाल नाओ अथवा घोड़ा एवं गाड़ी सभ पर सामान बनैत छथि।' ओ थम्हैक एकि कऽ आगाँ बजलाह—'एतबे नहि, घोड़ाक जीन, हाथीक हौदा, ओढ़ैनक लेल पैघ-पैघ चद्दरि आदि एहि मेलामे खरीद होइत छैक। गाड़ीक पहिया जेहन मजगूत एहि मेलामे भेटैत छैक तेहन पूर्णियामे कतहु नहि भेटैत छैक।'

रामटहल—'अहाँ ई बात सभ कोना जनैत छिऐक ?'

मुसरी—'हम राजमे नोकरी कऽ कऽ एतबो नहि बुझबैक ?'

रामटहल—'ई वस्तु सभ की महारानी अपनहि किनतीह ?'

मुसरी—कहियो महारानीकेँ केओ परदासँ बाहर देखने छथिन ?'

रामटहल—'से तँ कहियो नहि देखने छियनि।'

मुसरी—'अरे, देवानजी, ड्योढ़ी सुपरिनटेन्डेन्ट सभ कथी लेल मेला अबैत छथि ? वैह लोकनि वस्तु-जात कीनताह मुदा महारानीसँ विधिवत् आदेश प्राप्त कऽ कऽ सामान सभ किनल जाइत छैक। अच्छा ओमहर देखू, लगहाक जमींदार आ पूर्णियाक जमींदार खान बहादुर अहमद अली खान महारानीसँ भेँट करबाक लेल हुनके निवास दिस जा रहल छथि।'

रामटहल—'अहाँ तँ कहलिऐक जे महारानी ककरो सोझामे नहि आबैत छथिन। तखन हिनका लोकनिसँ कोना भेँट करथिन ?'

मुसरी—'महारानी ककरहुसँ सोझाँसोझी भेँट नहि करैत छथिन। परिचारिका लोकनि, देवान रामनिहोरा सिंह आ अपन सम्बन्धी वर्गक माध्यमसँ महारानी आगन्तुक लोकनिसँ सम्पर्क कऽ लैत छथि। परिचारक अथवा परिचारिकाक माध्यमसँ लोक अपन 'सलाम', 'प्रणाम' आदि महारानीकेँ कहि पठबैत छथिन आ ओ ओमहरसँ आशीर्वाद, दुआ आदि कहि पठबैत छथिन। जिज्ञासा करयबला जमींदार लोकनिकेँ कहबा, शरबत, जलपान आदिक आग्रह सेहो कयल जाइत छैक। देवानजी आ ड्योढ़ी सुपरिनटेन्डेंट आदि अपन सहायकक संग एहि सभ कार्यक लेल मेलामे नियुक्त रहैत छथि।'

रामटहल—'आब बुझलिऐक जे एहि मेलाक राजक लेल बड़ उपयोगिता छैक। सभ जमीन्दारकेँ एक दोसरासँ भेँट करबाक सुयोग भऽ जाइत छनि।'

मुसरी—'अच्छा, तूँ अहाँ तँ मित्र छी। हम राजमे नोकरी करैत छी। आइ की बर्खपर अहाँसँ हमरा भेँट होइत अछि ?'

रामटहल—'प्रायः सात वर्ष पर।'

मुसरी—'आइ कोना भेँट भेल ?'

रामटहल—'मेला आयल छलहुँ, तेँ।'

मुसरी—'एहि मेलाक इहो एक जबर्दस्त उपयोगिता छैक, एक दोसरासँ भेँट-घाट।' रामटहल—'बहुत ठीक।'

रामटहल सन्तुष्ट भऽ कऽ नमस्कार कऽ मेला घूमऽ चल गेलाह।

उनचालीस

महारानीक जमींदारीक अभ्यन्तर प्रजा सुखपूर्वक अपन जीवन-यापन करैत छल। खेती-गृहस्थी सेहो सुविधापूर्वक कयल जाइत छलैक। राजक बान्ह आ नहरि-छहरिक कारणेँ अभावक कालमे खेतीक हेतु किछु पानि भेटि जाइत छलैक। सीसो आ सागुआन आदिक गाछ सभ पैघ भऽ गेल छल आ प्रत्येक वर्ष किछुओ किछु नव गाछ लगाओल जाइत छल। रैयति सभकेँ एहि जंगल सभसँ जारनिक लेल लकड़ी भेटि जाइत छलैक। गाछक पात सभ सेहो जारनिक उपयोगमे अबैत छलैक। जमींदारीमे शांति आ सुव्यवस्था छलैक। जमींदारीमे चोर-डाकूक उपद्रव नहि हो तकरा पर जेठरैयति लोकनि पूर्ण ध्यान रखैत छलाह।

लॉर्ड कॉर्नवालिस 1786 ईस्वीमे भारतमे ईस्ट इण्डिया कम्पनीक सर्वोच्च पदाधिकारीक कार्यभार ग्रहण कयलनि। ओ निर्णय लेलनि जे जमींदार लोकनिक संगे चिरस्थायी प्रबंध कऽ देल जाय। पहिने 1789मे दससाला बन्दोबस्तक काज आरंभ भेल आ विचार भेलै जे एकरहि चिरस्थायी कऽ देल जाय। बन्दोबस्तक पूर्व कोलब्रुक पूर्णिया जिलाक परगना आ जमींदारी सभक पैमाइश कयलनि। ओहि समयमे पूर्णिया जिलामे जमींदारीक संख्या छलैक 36 आ जमींदारीक मालिकक संख्या 38 छलैक। हिटली साहेब आब पूर्णियामे नहि छलाह। ओ बहुत दिन पूर्णियामे रहलाह।

दससाला बन्दोबस्तक समयमे पूर्णियाक जमींदार सभकेँ कलक्टर अपन कार्यालयमे बजौलथिन। महारानी इन्द्रावती ने स्वयं नहि गेलीह मुदा हुनक प्रतिनिधिक रूपमे भैयाजी झा आ रिट साहेब गेलाह। ओहि समयमे ई देखल गेलैक जे सम्पूर्ण जिलाक तीनिटा जमींदारी—महाराज माधवसिंहक जमींदारी, परगना धर्मपुर; महारानी इन्द्रावतीक जमींदारी हवेली पूर्णिया आ सूर्यपुरक जमींदारीमे जिलाक आधा राजस्वक वसूली भऽ जाइत छलैक। जिलाक कुल राजस्व लगभग बारह लाख रुपैया छलैक। एकर अर्थ ई भेल जे शेष 33टा जमींदारी अपेक्षाकृत बहुत छोट छलैक। जिलाक तीनटा पैघ जमींदारी रहलाक कारणेँ जमींदार आ ब्रिटिश सरकारक समक्ष एहि जिलामे महारानी इन्द्रावतीक बेस दबदबा छलनि। दस सालक हेतु पुरान जमींदार सभक संग बन्दोबस्त कऽ लेल गेलैक आ लॉर्ड कॉर्नवालिसक इच्छा छलनि जे यथाशीघ्र दससाला बन्दोबस्तकेँ चिरस्थायी कऽ देल जाय।

दससाला बन्दोबस्तकेँ 1793 ईस्वीमे चिरस्थायी करबाक हेतु निर्णय लेल गेल जाहिमे महाराज दरभंगाक पूर्णिया जिलाक परगना धर्मपुरक जमींदारी आ महारानी इन्द्रावतीक जमींदारी किछु कारणेँ चिरस्थायी प्रबंधमे नहि आबि सकल। चिरस्थायी प्रबंधक हेतु दुनू जमींदारीमे किछु-किछु आर अभिलेखक जाँच करबाक छलैक आ आरो किछु बात पर निर्णय करबाक छलैक। एक बेर चिरस्थायी भऽ गेलाक बाद ओहिमे कोनो परिवर्तन चाहे सरकार दिससँ, चाहे जमींदार दिससँ, संभव नहि छलैक। ई कागज-पत्र जमींदारहुकेँ प्रस्तुत करबाक हेतु कहल गेलनि आ कलक्टर सेहो अपन अमला लोकनिकेँ आवश्यक अभिलेख उपस्थित करबाक आदेश देलथिन। ई स्पष्ट कऽ देल गेलैक जे दससाला बन्दोबस्त पक्का भेल आ दस्तावेज सभक उपलब्धिक बाद दुनू पक्ष द्वारा चिरस्थायी बन्दोबस्तक कागजपर दसखत कयल जायत।

भैयाजी झा आ रिट साहेब पहुलरा इस्टेटक दससाला बन्दोबस्तक कागज लऽ कऽ महारानी लग ऐलाह आ ओहि पर महारानी अपन दसखत कऽ पुनः

कलक्टरकेँ पठा देलथिन। कम्पनी सरकारक दिससँ कलक्टर ओहिपर दसतखत कयलनि। एहि सम्झौताक परिणाम ई भेल जे महारानीक जमींदारीक सम्पूर्ण स्वामित्व हुनका हाथमे आबि गेलनि। हुनका मात्र निश्चित वार्षिक राजस्वक किस्त निर्धारित तिथि पर जमा कऽ देबाक छलनि। महारानीक कागज-पत्र बिल्कुल साफ छलनि मुदा कम्पनीक दृष्टिसँ किछु कागज सभ जे नहि भेटल छलनि सेहो बादमे जोड़ि देबाक छलैक।

हिन्दू अथवा मुगल शासन-कालमे जमींदार एखन धरि भू-स्वामी नहि घोषित कयल गेल छल। पहिले-पहिल कॉर्नवालिस द्वारा जमींदार अपन जमींदारीक भू-स्वामी घोषित कयल गेल। जमींदार सभक निरंकुश होयबाक प्रायः एहो एक कारण छलैक। भू-स्वामित्वक घोषणाक कारणेँ बहुत जमींदारकेँ प्रजापर अत्याचार करबाक अवसर भेटि गेलैक। ओ सभ रैयतिसँ मनमाना लगान वसूल करय लागल। पूर्णिया जिलाक राजस्वक इतिहासमे एहन अत्याचारक अनेको कथा भेटत मुदा महारानीक जमींदारीक स्थिति एहिसँ भिन्न छलैक। हुनक जमींदारीमे प्रत्येक रैयति पहिनहिसँ जनैत छल जे लगानक रूपमे जमींदारकेँ कतेक देबाक छैक। रैयतिक 'जमा'केँ इच्छानुसार कियो घटा-बढ़ा नहि सकैत छल। नव बन्दोबस्तसँ अनेको जमींदारीमे रैयतिपर अत्याचार प्रारंभ भेल अथवा अत्याचार बढ़ि गेल मुदा महारानीक जमींदारी एकरासँ मुक्त रहल।

महारानी अपन जमींदारीमे जे व्यवस्था कयने छलीह से यथावत् चलैत रहल। पैघसँ पैघ अड़ोस-पड़ोसक जमींदारीमे जमींदार अथवा राजस्व-ठिकेदारक अत्याचार देखैत छल मुदा महारानीक जमींदारीमे रैयतिपर कोनो अत्याचार नहि छल। एकर कारण छल जे राजक संबंध अपन रैयतिसँ महाराज समर सिंहक समयसँ संतानक समान छलैक जकरा अनेक पीढ़ी भेल। महारानी स्वयं राजक राजस्व-ठिकेदार नहि छलीह जे ओ प्रजासँ मनमाना मालगुजारी वसूल करितथि। समर सिंहसँ महारानी इन्द्रावती धरि प्रजासँ हुनक संबंध रहल छलैक। अन्तहु ई नियम नहि छलैक जे प्रजाकेँ जमींदार दुःखावस्थामे, विवाह-दानमे अथवा अग्निकाण्डमे मदति करथि। मुदा महारानी नेँ एहि लेल एक विभाग खोलने छलीह जकर काज छलैक प्रजाकेँ बेर-विपत्तिमे सहायता प्रदान करब। पहुलराक जमींदारी अत्यन्त पुरान छलैक। अंगरेज हिनका लोकनिकेँ जमींदार नहि बनौने छलनि। ओ लोकनि पहिनहिसँ जमींदार छलाह, तकर स्वीकृति मात्र ईस्ट इण्डिया कम्पनी द्वारा देल गेल छलैक।

महारानीक दयालुता तँ सर्वविदित छल। आकरहु हुनकासँ अत्याचारक आशंका नहि छल। एकर इहो कारण छल जे महारानीक शिक्षा-दीक्षा एहन छलनि जे हुनकासँ ई संभवे नहि छलनि। कर्मचारी आ अधिकारीगणक संग सेहो हुनक व्यवहार मातृ-तुल्य छलनि।

महारानीक प्रत्येक अमला, राजक अधिकारी अथवा प्रजावर्गकेँ ई विश्वास छलैक जे हुनका लोकनिक दुःखक घड़ीमे महारानी ठाढ़ रहथिन। एहि सभक मूलमे एकटा बात छलैक जे महारानी अपने तँ निःसंतान छलीह मुदा ओ सम्पूर्ण प्रजावर्गकेँ अपन संतान बुझैत छलथिन।

आब भैयाजी झा महारानीक काजमे सहायता करैत छथिन मुदा सभ काज महारानीक आदेशसँ होइत छल। महारानी नियमित रूपसँ अपन कार्यालयमे उपस्थित होइत छलीह। भैयाजी आ दिवान राम सिंहोरा सिंह एहि समयमे निश्चित रूपेँ उपस्थित रहैत छलाह। दिवानजी पर महारानीक अटूट विश्वास छलनि आ ओहो महारानीक विश्वास-पात्र बनल रहला।

चालीस

महारानीक एकटा कोनो बहिनिक बालक छलथिन गंगादत्त झा। हुनक आर्थिकस्थिति अति दयनीय छलनि। मासमे हुनका भोजनहुँमे सन्देह छलनि। महारानी जीकेँ जखन हुनक आर्थिक संकटक पता लगलनि, ओ गंगादत्त झाकेँ सपरिवार सहसरा डयौढ़ी बजा लेलथिन। ओतय हुनक रहबाक प्रबंध कऽ देलथिन।

मुदा गंगादत्त चटोर छलाह आ हुनका एहि बातक घमंड छलनि जे ओ महारानीक खास संबंधी छथि। एहि संबंधक बलपर ओ बहुत नाजायज काज सभ करथि।

डयौढ़ीसँ थोड़बे दूरपर बजारक टोल छलैक। प्रतिदिन ओ बिनु दाम देनहि माछ उठाकऽ लऽ अबथिन। दूध-दही आ खोआ हुनका प्रतिदिन चाही। ओ बिनु मूल्य चुकौने बजारहि हलुआइक ओहिठामसँ प्रतिदिन ई वस्तु सभ लऽ आबथि। मलाह आ हलुआइ सभ द्वारा वस्तु नहि देलापर ओ क्रुद्ध भऽ जाथि आ ओकरा लोकनिकेँ धमकी देथिन। एहन स्थितिमे अन्ततोगत्वा हुनका माछो भेटि जाइन आ मधुरो भेटि जाइन।

हुनक ई काज निरन्तर चलैत रहल। आखिर भऽकऽ मलाह आ हलुआइ सभ महारानीक ओहिठाम फरियाद लऽ गेल। महारानी सभ बात सुनि कऽ हलुआइ आ मलाह सभक सम्पूर्ण दाम अपन निजी कोषसँ चुकता कऽ देलथिन।

सभक चल गेलाक बाद महारानी गंगादत्त झाकेँ बजौलथिन आ कहल-थिन — 'हलुआइ अथवा मलाह सभक वस्तु बिनु मूल्य देनहि लेब उचित नहि। ई प्रजापर अत्याचार थिक। अहाँ द्वारा प्रजापर कोनो प्रकारक अत्याचारक अर्थ भेल जे ओहिमे हमरो सहमति अछि।' एहिपर गंगादत्त राशा नहि देलाह आ बजलाह — 'हम कोनो हलुआइ अथवा मलाहक कोनो वस्तु कहाँ उधार लेने छिऐक?'

—'की सभ हमरा झूठि कहि गेल अछि?'

—'की ओ सभ आयल छल?'

गम्भीर स्वरमे महारानी कहलथिन—'हँ, आयल छल आ जतबा अहाँ सभ हलुआइ सभक आ मलाह सभक बाकी छलैक, हम दऽ देलिऐक। आब ओकरा सभकेँ डेरा-धमका कऽ कोनो वस्तु उधार नहि आनब।' महारानीक स्वरमे ओ चेहराक गम्भीरताक भीतरमे निहित अभिप्रायकेँ बुझबामे गंगादत्तकेँ भाङठ नहि रहलनि। ओ अपन अपराध स्वीकार कयलनि आ कहलाह जे भविष्यमे एहि कामसँ ओ बाज रहताह।

मुदा, गंगादत्त अपन चालि छोड़ऽवला नहि छलाह। आब उधार लेबाक पद्धति बदलि लेलनि। आब जे उधार लैत छथिन तँ ई कहि कऽ जे यदि महा-रानीजीकेँ एकर खबरि होएत सभ देखहिन तँ हम तोरा सभकेँ उजड़बा देबौ।

एहि प्रकारेँ गंगादत्त द्वारा उधार लेबाक क्रम जारी रहल। मलाह आ हलुआइ ई सोचि कऽ हुनका उधार देब बन्द नहि करथि जे महारानीक बहि-निक बेटा छथिन, पैसा तँ आबिये जायत। मुदा उधार लेल वस्तु सभक दाम जखन बहुत अधिक भऽ गेलैक तँ पुनः महारानीजी लग फरियाद आयल। महारानीजी पुनः निजी कोषसँ मूल्य चुकता कऽ देलथिन, मुदा एहि बेर ओ बहुत दुखी भेलीह। गंगादत्तकेँ बजौलथिन। गंगादत्त गिड़गिड़ाइत आबि कऽ आगाँ ठाढ़ भऽ गेलाह। महारानी दोसर दिस तकैत रुक्ष स्वरमे कहल-थिन — 'गंगादत्त! अहाँ ई हलुआइ आ मलाह सभकेँ किएक तंग करैत छिऐक? अहाँ बिनु मूल्य देनहि माछ आ मधुर सभ किएक आनैत छिऐक? अहाँकेँ किछुए दिन पूर्व हम मना कयने छलहुँ आ कहने छलहुँ जे आब ई काज नहि करब। अहाँकेँ जखन माछ, मधुर, दूध अथवा दही किनबाक रहय, अहाँ हमरासँ पैसा माँगि लियऽ। उधार नहि आनू। अहाँकेँ तँ परिवारक

भरण-पोषण हेतु वृत्ति देल जाइत अछि।' गंगादत्त हाथ जोड़ैत कहलाह—'गलती भऽ गेल। आब पुनः शिकायत नहि आओत।' महारानी किछु कहलीह नहि। गंगादत्त थोड़ेक काल ठाढ़ रहि चल गेलाह।

मुदा, पन्द्रह दिनुक बादे ओ फेर ई धंधा प्रारम्भ कयलनि। मास दिन बाद फेर हलुआइ आ मलाह सभ महारानी लग फरियाद कयलक। महारानी पुनः ओकरा सभकें अपन निजी कोषसँ मूल्य चुकता कऽ देलथिन।

महारानी गंगादत्तक एहि प्रकारक व्यवहार ओ अपन आदेशक उल्लंघनसँ अत्यन्त व्यथित भऽ उठलीह। अभ्यन्तरसँ उठैत आक्रोशक लहरिकें संयत रखैत पुनः गंगादत्तकें बजबाय पुछलथिन—'अहाँ फेर वैह काज कयलहुँ जे करबासँ हम अहाँकें मना कयने छलहुँ।'

गंगादत्तक पुनः गुम्मा-रटन्त उत्तर छलनि—'हमरासँ गलती भेल। आब एहन काज नहि करब।'

महारानी—'ध्यान राखू जे भविष्यमे ई गलती नहि हो।'

कहबाक लेल महारानी कहि देलथिन, किन्तु हुनका विश्वास छलनि जे गंगादत्त अपन दुर्वृत्ति छोड़ताह नहि। रैयतिकें तंग करिते रहताह। अन्तर्द्वन्द्वमे पड़लि मानसिक क्लेशसँ पीड़ित महारानी ओहि दिन उपवास कऽ गेलीह। हुनका ई नहि बुझि पड़नि जे कोन दण्ड एहि व्यक्तिकें देल जाय। अन्तःपुरमे सभकें बुझबामे आबि गेलैक जे महारानी उपवास कऽ कऽ गंगादत्तक पापक प्रायश्चित्त कयलनि अछि।

मुदा, एहि प्रायश्चित्तक असरि गंगादत्तपर नहि भेलनि। किछु दिनुक बाद गंगादत्त पुनः वैह कारबार शुरू कयलनि। मास दिनुक बाद फेर मलाह आ हलुआइ सभ महारानी लग आयल। महारानी ओकरा लोकनिकें मूल्य चुकता कऽ देलथिन। गंगादत्तकें बजा देलनिह कहियो मलाह अथवा हलुआइ सभकें मना नहि कयलथिन।

महारानी आब गंगादत्तकें सेहो मना करब छोड़ि देलनि। हलुआइ-मलाह आदि, गंगादत्त द्वारा देल उपद्रवक बात महारानीसँ निवेदन कऽ चल जाय। आ, महारानी प्रत्येक बेर प्रायश्चित्तस्वरूप उपवास करथि। ई क्रम चलैत रहल। जखन महारानी उपवास करथि तँ सम्पूर्ण ड्योढ़ीमे सभकें जानल भऽ जाइक जे महारानी भवन बहिर्गत गंगादत्तक कुकृत्यक हेतु प्रायश्चित्त कऽ रहलि छथि।

लगभग एक वर्षक बाद गंगादत्तकें पता चललनि जे प्रत्येक बेर महारानी भूखलि रहि कऽ आ निजी कोषसँ मूल्य चुकता कऽ कऽ हुनक अपराधक प्रायश्चित्त करैत रहलि छथि। ई जानि ओ बड़ लज्जित भेलाह आ तकर बाद ओ अपन ई आदति छोड़लनि।

एकतालिस

अंगरेजी शासनक जड़ि जमल जाइत छल। विधि-व्यवस्थाक स्थिति सेहो नीक भेल जाइत छल। पूर्णियाक उत्तर सीमानपर सेहो शान्ति छलैक। आब भुटिया सभक आक्रमण पूब आ उत्तर दिशासँ नहि होअय। संन्यासी-आंदोलन सेहो समाप्त छलैक। आब कदाचहु, कहियो कोनो संन्यासीसँ भेंट नहि होअय। एहन स्थितिमे महारानीक जमींदारीक स्थिति सेहो उत्तरोत्तर नीक भेल जाइत छलनि, मुदा महारानी आब वृद्धावस्था दिस अग्रसर भेलि जाइत छलीह। ओ अधिकाधिक समय पूजा-पाठमे बितबथि। आब ओ मुख्यालयसँ कम बाहर जाइत छलीह। बीच-बीचमे ओ मोहनी गढ़ी जाइत छलीह जे अड्डा रहल ओ पूर्णियाक समीप छलैक आ ईस्ट इण्डिया कम्पनीक अधिकारीसँ सम्पर्क बनल रहनि।

आब भैयाजीभा आ हुनक बालक, राजक प्रबंधमे प्रमुख रूपसँ भाग लेथि। महारानीकें एहिसँ लग कोनो योग्य संबंधियो नहि छलथिन जनिक सहायता ओ राजक प्रबंधमे लितथि। भैयाभा तँ प्रायः हुनक सहायकक छलथिन। महारानीक इच्छा छलनि जे भैया झाक संगहि विजयगोविन्द अधिकाधिक रूपमे राजक प्रशासनमे भाग लेथि। बहुत कालसँ भैया झा आ विजयगोविन्दकें ओ अपन प्रतिनिधि बनबथि। ओ बुझैत छलीह जे एक दिन विजयगोविन्दकें राजक भार सम्हारए पड़तनि। विजयगोविन्दक प्रशिक्षण सेहो ओहि ढंगक भऽ रहल छलनि।

महारानीक संग ईस्ट इण्डिया कम्पनीक चिरस्थायी प्रबंधक समझौता एखनहु धरि नहि भेल छलैक। एहिसँ राजकें कोनो हानि नहि छलैक, मुदा भविष्यमे एकरा चलते कोनो विघटन अथवा झंझटि भऽ सकैत छलैक। महारानीकें ई आशंका छलनि आ तें ओ भैया झा, विजयगोविन्द, राजक प्रमुख अधिकारी रिड साहेब, जे राजस्व विभागकें देखैत छलथिन, आ देवान राम मिहीरा मिहकें मोहनी गढ़ी बजबा पठौलथिन।

परिचारिका महारानीकें सूचित कयलथिन जे रिट साहेब, देवानजी, भैयाजी झा आ विजयगोविन्द उपस्थित छथि। महारानी भैया झाकें सदन लग बजौलथिन आ कहलथिन जे रिट साहेब आ देवानजी कलक्टरसँ भेंट करथुन आ अहूँ संगमे रहिऔन। रिट साहेब आ देवानजी चिरस्थायी प्रबंधक कागज पक्का करा लेथि।

भैयाजी झा, रिट साहेब आ देवानजीकें सम्पूर्ण सूचना दऽ देलथिन। एहिपर रिट साहेब कहलथिन—'एखनहि हमरा लोकनि कलक्टरसँ एहि संबंधमे बातचीत करब।'

महारानी पुनः भैयाजी झा द्वारा संवाद पठौलथिन—'रिट साहेब आ देवानजीकें तँ सब बात बुझले छनि जे कोन कारणें एखन धरि चिरस्थायी प्रबंधक कागजपर दस्तखत नहि भेल छैक। दू टा परगना—श्रीपुर आ फतेहपुर सिंधिया राजकें कोना हासिल भेलै से दस्तावेज नहि भेटैत छलैक। मुदा छानबीन कयलापर ओ दस्तावेज सभ भेटि गेलैक आ रिट साहेब ओ दस्तावेज सभ देखने छथिन।'

रिट साहेब—'हँ, ओ दस्तावेज सभ हिफाजतिसँ राखल छैक।'

भैयाजी झा—'महारानी जी कहैत छथि जे पहसरा इस्टेटक कागज सभ कलक्टरक ऑफिसमे जतय राखल छैक ओकरा ताकि कऽ निष्कर्षोपरान्त स्पष्ट भऽ गेलैक जे कोन कारणें 1793 ईसवीक चिरस्थायी बन्दोबस्त राजक संग नहि कयल गेलैक। कलक्टरक दफ्तरमे सेहो श्रीपुर आ फतेहपुर सिंधिया परगनाक कागज नहि भेटैत छलनि। अपने दस्तावेजक नकल मात्र कऽ कलक्टरक दफ्तरमे सेहो दऽ देलासँ आगामीदिन समझौताक कागजपर दस्तखत भऽ जेतैक। ओ कहैत छथि जे हमरा लोकनि एखनहि कलक्टर साहेबसँ भेंट करिऔक।'

भैयाजी झा, रिट साहेब, देवान जी आ विजयगोविन्द कलक्टरक दफ्तर गेलाह। मोहनीगढ़ीसँ ओतय जयबामे एक घंटासँ कममे लगलनि। कलक्टर साहेब अपन ऑफिसमे छलाह। ई लोकनि हुनका भेंट करबाक संवाद पठौलथिन। ओ तुरन्त हिनका लोकनिकें बजौलथिन।

कलक्टर साहेब—'आउ भैयाजी झा, महारानी केहन छथि? हुनक स्वास्थ्य केहन छनि?'

भैयाजी झा – 'हुनक स्वास्थ्य नीक छनि। ओ हमरा लोकनिकें राजक संगे चिरस्थायी प्रबंधक समझौताक संबंधमे अहाँसँ भेंट करबा लेल पठौने छथि।'

कलक्टर साहेब—'की रिट साहेब, परगना श्रीपुर आ फतेहपुर सिंधिया, पहसरा इस्टेटकें कोना हासिल छैक से पता चलल?'

रिट साहेब—'हँ, ओ कागज सभ हमरा लग अछि।'

कलक्टर—'ई कागज सभ कियेक ने भेटैत छल?'

देवानजी—'एक बेर कोनो मोकदमाक क्रममे अदालत बजाओल ओहि-ठामसँ, ई दुनू परगना कोना हासिल छलैक, तकर कागज माँगल गेल छलैक। ओ कागज सभ ओही मोकदमाक बस्तामे पड़ल छलैक। ताकलापर भेटि गेल छैक।'

कलक्टर—'ओकर नकल हमरा चाही। हमरो लग ओहि दुनू परगनाक कागज उपलब्ध नहि अछि।'

देवानजी—'हम काल्हि अपनेकें ओकर नकल पहुँचा देब।'

कलक्टर—'हम तँ अपनहि उत्सुक छी जे पहसरा इस्टेटक चिरस्थायी प्रबंधवला कागजपर दुनू पक्षक दस्तखत भऽ जाय। जाबे एखन धरि चिरस्थायी प्रबंध नहि भेल अछि, ओतय चिरस्थायी प्रबंध करयबाक लाट साहेबक दफ्तरसँ तगादा आबि रहल अछि। एकरा यथाशीघ्र समाप्त कऽ लिअऽ। नवताल बन्दोबस्त तँ भेले छैक। ओहिमे मात्र श्रीपुर आ फतेहपुर सिंधिया, पहसरा इस्टेटकें कोना हासिल छैक से स्पष्ट देखाक छैक। हँ, तँ चिरस्थायी प्रबंधक समझौता-पत्रपर दस्तखतक हेतु कहिया तिथि निश्चित करैत छी?'

भैयाजी झा—'यदि अपनेकें सुविधा हो तँ परसुके तिथि राखल जाय।'

कलक्टर—'हमरा स्वीकार अछि।'

सभ गोटे कलक्टरक ओहिठामसँ महारानीक ओतय मोहनीगढ़ी गेलाह आ कलक्टरसँ जे गप्प भेल छलनि तकर सूचना महारानीकें देलथिन। महारानी आदेश देलथिन जे काल्हिए सभ कागज लऽ कऽ कलक्टरक ओहिठाम चल जाउ। पहसरासँ घोड़सवार पठाय काल्हि भिनसर धरि सभ कागज मँगवा लिअऽ। एहि अनुसारेँ काज कयल गेलैक आ कागज लऽ कऽ देवानजी, रिट साहेब ओ भैयाजी दोसर दिन पुनः कलक्टरक ऑफिस पहुँचलाह। फतेहपुर सिंधिया आ श्रीपुर परगना संबंधी कागजक मूल प्रतिक संग नकल सेहो कलक्टरकें देल गेल। तैयार कऽ लेल गेल छलैक। महारानीक कागज सभ तँ बिल्कुल साफ छलनि, मुदा तैयो धुम्हारसि करबामे एक सप्ताह लागि गेलनि। राजक अधिकारीगण आ कर्मचारी जे एहि काजमे लागल छलाह, प्रतिदिन

मोहनीगढ़ीमे कलक्टरक ऑफिस अछि। एहि मामलाक अन्दर चिरस्थायी प्रबंधक दस्तखत हेतु कागज तैयार भऽ गेलैक। आब ओहिपर सरकारी पक्षसँ कलक्टरक आ जमींदारक पक्षसँ महारानीक दस्तखत हेतनि। विचार भेलैक जे दस्तखत मोहनीगढ़ीमे हो। कलक्टर साहेब सेहो एहिमे अपन सहमति देलथिन। परञ्च तिथि एहि काज लेल निश्चित करब रहैक।

महारानी सभ वृत्तान्त सुनि बहुत प्रसन्न छलीह। ई काज 1793 ईस्वीमे हेबाक चाहैत छल से आब 1802 ईस्वीमे भऽ रहल अछि। महारानी आब सोचैत छलीह जे वृद्धावस्था आबिए गेल अछि। मरण-हरणकेँ के देखने अछि आ तेँ ओ यथाशीघ्र दस्तखतबला काज समाप्त कऽ लियऽ चाहैत छलीह।

बेयालिस

आइ मोहनीगढ़ीमे दरबार लागल अछि। महारानी परदाक ओटमे अपन स्थानपर आसीन छथि। दीवान रामकिशोर सिंह तथा राजक मुख्य अधिकारीलोकनि यथा रिट साहेब, बैद्यनाथ सिंह, धर्मलाल सिंह, मन्नूलाल सिंह, बैजनाथ मिश्रक अतिरिक्त बाबू भैयाजी झा आ हुनक पुत्र बाबू विजयगोविन्द झा दरबारमे अपन-अपन स्थान ग्रहण कयने छथि। एकर अतिरिक्त राजक कर्मचारी सभ उपस्थित छथि। दोसर दिस कलक्टर साहेब आ कप्तान साहेब तथा सरकारी कर्मचारी लोकनि छलाह। पहिने महारानी जीक सोझाँमे चिरस्थायी प्रबंधक समझौताबला कागज दस्तखतक हेतु राखल गेल। एहि दस्तावेजक दू प्रति छल। एकर बाद कलक्टर साहेब दुनू प्रतिपर दस्तखत कयलनि। तकर बाद एक प्रति महारानीजीकेँ दऽ देल गेलनि आ दोसर प्रति कलक्टर साहेब रखलनि। एहि प्रकारेँ बहु वर्षसँ लटकल चिरस्थायी प्रबंधक दस्तावेजपर 11 अप्रैल, 1802 ईस्वीकेँ दुनू पक्षक दस्तखत भेल। महारानीक जमींदारीक नाम छल 'महालात परगना हवेली पूर्णिया तथा महाल कालू मोतालके सूबा जिलाबंगलशुलात'। जमींदारीक सनदावली रूपमे महारानी इन्द्रावतीकेँ 'रानी इन्दर रानी' कहल गेल अछि। एहि सनदावलीमे ताहि दिनुक सूबा बंगालमे पूर्णिया, सुलतानपुर, फतेहपुर सिंघिया आ श्रीपुर आदि महारानीक जमींदारीमे छलनि। सूबा बिहारमे नाथपुर आ गोरारीक अतिरिक्त

तखी मुर्तजापुर, मकनहुर पथ, गोला नवाबगंज आदि जेहन महल महारानीक अधिकारमे छलनि। कुमारीपुरमे तँ महारानी जमींदार आ कानूनगो दुनू छलीह। कटिहार परगना महारानीक सौतिनियाबला देवानक अधिकारमे छलनि। दसशाला बन्दोबस्त 1790 ईस्वीमे भऽ गेल छलैक आ तेँ यद्यपि 1793 ईस्वीमे चिरस्थायी प्रबंधक कागजपर दस्तखत नहि भेलैक, तथापि दुनू कोनो पक्षकेँ नोकसान नहि केलैक।

आइ महारानीक लेल बड़ आनन्दक दिन छल। दुनू पक्षक दस्तखत सम्पन्न भेलाक बाद मोहनीगढ़ीमे विशाल भोजक आयोजन छल जाहिमे राजक अधिकारी, कर्मचारी आ जेठरैयति लोकनिक अतिरिक्त सरकारी पक्षसँ कलक्टर, कप्तान साहेब आ आन-आन सरकारी पदाधिकारी आ कर्मचारी लोकनि छलाह। दुनू पक्ष खूब प्रसन्न छल। दस बजे दिनमे भोज प्रारंभ भेल आ संध्या धरि ई सम्पन्न भेल। राजक मुख्य खानसामाक तत्त्वावधानमे भोजक सामग्री सब तैयार कयल गेल छल। कलक्टर साहेब भोजक तारिफ कयलनि आ जयबाक काल ओ आ कप्तान साहेब महारानीसँ विदा हेबाक अनुमति लेलनि।

महारानी बहुत प्रसन्न छलीह। ओ भैयाजी झा आ विजयगोविन्दकेँ कहा कऽ पठौलनि जे आब अहाँ लोकनि राजक सेवा करू? चिरस्थायी प्रबंधक कागज पर जे दस्तखत नहि भेल छल तकरा लेल हम बहुत चिन्तित छलहुँ। आइ हम निश्चिन्त भऽ गेलहुँ। ई कहि महारानी धुनमे मग्न भेलीह। एहन बुझि पड़ैत छलैक जे ओ आब परलोक दिस बेसी आ इहलोक दिस कम तकैत छलीह। भैयाजी झा आ विजयगोविन्दकेँ एहने आभास भेलनि।

तैँतालिस

महारानी चिरस्थायी प्रबंधक दस्तावेजपर दस्तखत कयलाक बाद बहुत थाकि गेलीह। तीन-चारि मासक बाद हुनका ध्यानमे एलनि जे ओ सानुकूल आ मीमांसाक वास्ते सभ अपनौने छलीह तकर की स्थिति छैक? संस्कृत विद्यालय सभक की स्थिति छैक? सड़क-बान्ह, इनार आ अस्पताल की स्थिति छैक? एतन राज्यमे कानून आ व्यवस्थाक की स्थिति छैक? बहुत बात हुनका मोन पड़ए लगलनि। महारानी वृद्धावस्थाक कारणेँ किछु कमजोर

भऽ गेल छलीह । संतान नहि रहबाक दुःखसँ ओ भीतर पीड़ित छलीह । हुनका आब बड़ चिन्ता होमऽ लगलनि जे हुनक अंतिम संस्कार के करतनि, हुनक श्राद्ध के करतनि आदि । एहने मानसिक अवस्थामे ओ बाबू भैयाजी झाकेँ आ विजयगोविन्द तथा बूढ़ा देवान राम बिहारी सिंहकेँ बजौलथिन । सभ उपस्थित भेलाह ।

महारानी पर्दाक ओटमे बाबू भैयाजी झाकेँ बजौलथिन आ हुनका कहलथिन जे कहाँकेँ हम प्रजाक उन्नति तथा जमींदारीक विकासक हेतु जे काज सभक प्रभारी बनौने रहलहुँ तकर प्रगतिक विषयमे हम जानय चाहैत छी । विजय गोविन्दकेँ हम अहाँकेँ सहायकक रूपमे देने छलहुँ । देवानजीक तँ ई काज आरम्भ कयने छथि । आब हमर मन नीक नहि रहैत अछि, मुदा हार्दिक इच्छा रहैत अछि जे काज सभक प्रगतिकेँ बूझी आर ई जानि ली जे काज सभ सिलसिलावार अछि की नहि । हमरो मानसँ, हम चाहितहुँ, अस्वस्थ होयबाक कारणे राजक काज नहि देखि सकैत छी । आवश्यक किस्तक चुकतीक की स्थिति छैक ?

देवानजी बजलाह जे, आदेश हो तँ राजक प्रमुख अधिकारीकेँ आ प्रमुख बेटाईवाल लोकनिकेँ बजा ली । विजय गोविन्द झा प्रत्येक विभागक स्थितिक समीक्षा करबाह आ महारानीजीक जानीता सुननीह ।

महारानी—'हम अहीँ तीनू गोटासँ स्थितिक जानकारी चाहैत छी । हमरा ई कहू जे राजक आर्थिक स्थिति, विकास, कानून-व्यवस्था आदिसँ अहाँ लोकनि संतुष्ट छी ?'

भैयाजी झा—'हम तँ संतुष्ट छी । विगत पन्द्रह वर्षमे राजक औद्योगिक गेल काज सभ संतोषजनक गति पकड़ने अछि ।'

महारानी—'देवानजीक दृष्टिकोण ?'

देवानजी—'हम प्रगतिसँ खूब संतुष्ट तँ नहि छी, मुदा असंतुष्ट हेबाक कोनो कारण नहि अछि ।'

महारानी—'विजय गोविन्द ! देवानजी एना किएक बजैत छथि ?'

देवानजी—'हमर कहबाक ई अभिप्राय नहि अछि जे काज सभमे प्रगति नहि भेल छैक । हम मात्र एतबे कहैत छी जे महारानी जाहि उत्साह आ निष्ठासँ एहि काज सभक प्रगति देखय चाहैत छलीह, से नहि भेल छैक । ई नहि कहैत छी तँ एहि राजमे राम-राज्य कायम भऽ जाइत । एना प्रजाक स्थितिमे बहुत सुधार भेल छैक । प्रजाकेँ कल्याणक हेतु आगाँ भेटि जाइत छैक ।

प्रजा समयपर मालगुजारीक चुकता करैत अछि । मुदा बीमारी बाढ़िक घर-दरबज्जा तँ एखनहु फुसेक छैक । प्रति वर्ष अगिलग्गीमे सैकड़ानि घर जरि जाइत छैक । हमरा लोकनि एकरो किछु प्रतीकार कऽ सकितहुँ तँ महारानी प्रसन्न होइतथि आ तखन हम कहि सकितहुँ जे प्रगतिसँ हम संतुष्ट छी ।'

महारानी—'विजयगोविन्द, देवानजीकेँ कहियौन जे हुनक भावनासँ हमरा संतोष अछि । विजयगोविन्द, अहाँ तीनू गोटासँ बढ़िकऽ हमरा लेल एहि राजमे केओ नहि छथि । हम ई कहि दैत छी जे आब हम अधिक दिन नहि जीबय । राजक प्रगतिक विषयमे जानकारी सभक जे हमर इच्छा भऽ रहल अछि, ई हमर मरबाक समयक मोह थिक ।'

देवानजी—'सरकार, हमरा क्षमा कयल जाय । एना नहि बाजल जाय । हमरा लोकनि महारानीजीक संतान छी । ई कोन काने केओ सुनत ?'

महारानी—विजयगोविन्द, हमर अन्तकाल लगिचा गेल अछि, एहिमे सन्देह नहि, मुदा हम अहाँ लोकनिकेँ कहय चाहैत छी जे हमर मुइलाक बाद अहाँ लोकनि वफादारीसँ राजक सेवा करब । एहिसँ राजकेँ जे लाभ हेतैक से तँ हेबे करतै, अहूँ लोकनिक स्थिति ठीक रहत । एहि बातकेँ सतत स्मरण राखब । राज नहि तँ के महारानी, के महाराज आ के देवान आ के अधिकारीगण ? राजक अस्तित्वहिपर सभक अस्तित्व अछि ।'

देवानजी—'महारानी जी चिन्तातुर भऽ जाथि । हुनक पुण्यक प्रतापसँ सभ काज ठीकसँ चलतै ।'

महारानी—'अच्छा, एक बात ध्यानपर आयल । एकमहा गाँवमे केओ महादेवक स्थापना कयने छल, मन्दिरो बनौने छल, मुदा हमरा खबरि भेटल अछि जे चोर ओहि मन्दिरसँ शिवलिंग चोरा कऽ लऽ गेलैक । अहाँ लोकनिकेँ एकर जानकारी अछि ?'

देवानजी—'हम काल्हिए बुझलियैक ।'

महारानी—'राजक दिससँ एकटा शिवलिंग मंगाकऽ पुनः ओहि मन्दिरमे स्थापित कऽ देल जाय । हमरा बड़ दुःख भेल अछि जे ओहि कुलमे आब केओ बाँचल नहि छैक । महादेवक अद्भुत लीला छनि !'

देवानजी—'शिवलिंग यथाविधि पुनः शीघ्र स्थापित कऽ देल जेतैक ।'

तखन कयलाक बाद महारानीजी चलि गेलीह । बाबू भैयाजी झा, विजयगोविन्द आ देवानजी अत्यन्त दुःखी भऽ गेलाह । महारानीजी वस्तुतः एहि दुनियासँ उदासीन भेल जाइत छथि, एहने ओहि तीनू गोटाकेँ बुझि पड़लनि ।

कैयाजी भा आ विजयगोविन्द ई सोचय लगलाह जे महारानीक बाद राज कोना चलत, एहिपर तँ ओ किछु प्रकाश नहि देलथिन । ओ ई कहैत छथि जे ओ आब अधिक दिन नहि बचतीह तखन हुनक कर्त्तापुत्र के हेतनि एहूपर तँ कोनो मन्तव्य नहि देलनि । कैयाजी आ विजयगोविन्दसँ तँ निकट महारानीकेँ आर केओ नहि छथिन, तथापि कर्त्तापुत्रक निर्णय किएक नहि भऽ रहल छैक ! मुदा ई एहन विषय छलैक जे महारानीसँ पूछल नहि जा सकैत छलैक । देवानजी सेहो महारानीक उत्तराधिकारीक लेल चिन्तित छलाह । ओ सोचथि जे बिना धर्मापुत्र बनौने यदि महारानी चल जाइत छथि तँ हुनका सौदियवला देयाद राजक उत्तराधिकारीक रूपमे ठाढ़ हेथिन ।

सौरियाक देयाद लोकनिकेँ सेहो महारानीक शारीरिक अवस्था आ वृद्धावस्थाजन्य दुर्बलताक भान छलनि आ ओही लोकनि महारानीक बाद राजक उत्तराधिकारीक विषयमे सोच-विचार प्रारंभ कऽ देने छलाह । देवानजीकेँ ने आदर महारानी दैत छलथिन ने राजक कोनो अधिकारीकेँ प्राप्त नहि छलैक आ ने ई स्नेह ककरहु प्राप्त छलैक । हुनक जीवन भरिक वफादारी आ निष्ठापूर्ण व्यवहारसँ महारानी अत्यन्त संतुष्ट छलथिन । कैयाजी आ कर्त्तापुत्रक विषयमे देवानजीसँ परामर्श लेब चाहलनि, मुदा किछु सोचिकऽ ओ चुप रहि गेलाह । हुनका ई भय भऽ गेलनि जे देवानजी ई ने बुझथि जे कर्त्तापुत्र महारानी ककरा बनौथिन ताहूमे कैयाजीकेँ सन्देह छलनि ।

चौवालिस

आइ भिनसरे सूचना भेटलैक जे महारानी महादेवक पूजाक हेतु बसैठी जेतीह । तुरन्त सभ व्यवस्था भऽ गेल । ई मन्दिर ओ बड़ उत्साहसँ बनौने छलीह । शिवरात्रिक अवसरपर ओ प्रत्येक वर्ष ओतए कैम्प करैत छलीह । आइ बहुत दिनक बाद सामान्य ढंगसँ ओ अर्चना स्थलपर गेलीह, पूजा-पाठ कयलनि आ बहुत काल धरि बैसिकऽ मन्दिरमे भोलबाबाक कीर्तन सुनलनि । मन्दिर-परिसरमे जे जे बेल, आक-धथूर आ फूल सभक गाछ लगौने छलीह, तकर निरीक्षण कयलनि । पोखरिकेँ ठाढ़ भऽ कऽ देखलनि । इनारक बहुत किछु त्रुटि भेल छलैक तकर अविलम्ब मरम्मति करयबाक आदेश देलथिन । महादेवक पूजा-पाठ आ मन्दिरक रख-रखावसँ ओ बहुत प्रसन्न छलीह । महादेव मन्दिरक पुजेगरीकेँ ओ बनौलथिन आ एक सय बीघा जमीन-मिलिक

लाखेराज—हुनक नामे लिखबाक आदेश देलथिन आ संगक परिचारिकाकेँ कहलथिन जे पुजेगरीकेँ कहुन जे एहने निष्ठासँ हुनकर बापो ओ मन्दिरमे पूजा-पाठ करैत रहथि । पुजेगरीसँ परिचारिकाकेँ इहो पूछय कहलथिन जे हुनका आरो कोनो वस्तुक इच्छा छनि ?'

पुजेगरी महारानीक दयासँ अभिभूत भऽ बजलाह—'हम भोला बाबासँ प्रार्थना करैत छी जे महारानी युग-युग जीबथि आ हुनक कीर्ति दसो दिशामे पसरनि । हमरा कोनो वस्तुक अभाव नहि रहल । हम तँ सपनहुँमे ई बात नहि सोचने छलहुँ जे हमरा सय बीघाक मिलिक लाखेराज भेटत । हम जाबत जीयब आ हमर बाद हमर पुत्र-पौत्रादि महादेवक पूजामे रत रहताह आ एहीसँ हमरो आ हुनको लोकनिक कल्याण हेतनि ।

महारानी मन्दिरक सम्पूर्ण परिसरकेँ छहरदेबालीसँ घेरि देबाक आदेश सेहो देलथिन । मन्दिरक जे अहलू छल तकरा सेहो दस बीघा मिलिक लाखेराज जमीन देल गेलैक । ओ कहियो ई नहि सोचने छल जे स्वयं महारानी आबि कऽ ओकरा दस बीघा जमीन देथिन । ओ महारानीक पयरपर आबि कऽ खसि पड़ल आ बाजल जे ओ आ ओकर सन्तान-सन्तान महादेवक चरणमे लोटैत रहत ।

मन्दिरसँ थोड़बे दूरपर एकटा बुढ़िया ब्राह्मणी रहैत छलीह । हुनका लेल ई प्रख्यात छल जे ओ प्रतिदिन सभसँ पहिने आबि महादेवक पूजा करैत छथि आ संध्या काल मन्दिरमे दीप जरबैत छथि । महारानीकेँ सेहो ई बुझल छलनि आ महारानी एहिसँ हुनकापर मनहि-मन बहुत प्रसन्न रहैत छलथिन । हुनका एकटा बेटी छलनि जकर बियाह नहि भेल छलैक । ओहि बुढ़िया आ बुढ़ियाक बेटीकेँ मन्दिरपर बजबौलथिन ।

बुढ़िया महारानीकेँ आशीर्वाद देलकनि आ हुनक बेटी प्रणाम कयलकनि । बुढ़ियाकेँ आर केओ नहि छलैक । कन्याक उमेर सात-आठ बर्खक छलैक । महारानी आदेश देलथिन जे एक हजार रुपैया राजकोषसँ बुढ़ियाकेँ देल जाय । बेटीक बियाहक लेल ई राशि ओ सुरक्षित राखि लेत आ एकर अतिरिक्त परवरिश लेल पचीस बीघा जमीन बुढ़ियाकेँ देल गेलैक ।

ई सभ कयलाक बाद महारानी बहुत काल धरि असगरे मन्दिरमे पूजा कयलनि । संभवतः हुनक मनमे आबि गेल छलनि जे आब ओ एहि जीवनमे महादेवक पूजा लेल एहि मन्दिरमे नहि आबि सकतीह । पुनः ओ मन्दिरक फर्शसँ उतरि मन्दिरक परिक्रमा कयलनि । फुलवाड़ी सभकेँ निहारिकेँ

देखलनि। पुनः मन्दिरपर अबलीह आ ओतयसँ मन्दिर-परिसरक पोखरि आ इनारकेँ देखलनि। कतेक काल धरि ठाढ़ भऽ कऽ ओ देखिते रहलीह।

एहि बीच बहुत रैयति सभ ओहिठाम जमा भऽ गेल आ ओ लोकनि महारानीक जय-जयकार करय लागल। के कहैत छल जे महारानी, भोला बाबा आ ओहि परिसरक लोकसँ विदा लेबाक हेतु आयलि छलीह! जेनाक पहिने ओ पुनः भोला बाबाकेँ प्रणाम कयलथिन आ अपन डयोढ़ीक लेल विदा भेलीह।

पैँतालिस

महारानी आब सतत दुखित रहैत छलीह आ संभवतः एही कारणेँ ओ मोहनीगढ़ीमे रहऽ लगलीह। एहन ओ इहो सोचिकऽ रहय लगलीह जे पूर्णियाँसँ नीक वैद्य-हकीम ओतय सुविधापूर्वक उपलब्ध भऽ जाइत छलैक आ जिलाक मुख्यालय सेहो ओतयसँ बहुत समीप छलैक। ओ आब कोनो विशेष अवसरहिपर पहसरा अबैत छलीह।

महारानी आब पूजा-पाठ, दान-धर्म, देवाय-धर्मादिमे लागल रहैत छथि, मुदा एहि सभमे लागल रहलोपर एखनहुँ ओ राजक किछु काज देखैत छलीह। ओना, ओ आब बाबू भैयाजीझा आ हुनक पुत्र विजयगोविन्दपर राजक संचालन-हेतु पूर्ण निर्भर छलीह। शरीरक शक्तिए घटि गेल छलनि तेँ दोसर कोनो उपायो नहि। भैया झा आ विजयगोविन्दकेँ जमींदारीक प्रशासनक प्रशिक्षण महारानीक तत्त्वावधानमे भेटलनि। मुदा, महारानी चाहैत छलीह जे हुनक मृत्युक उपरान्त भैयाजी झाकेँ अथवा विजयगोविन्दकेँ हुनक सौरिखाक देयाद लोकनि चैनसँ राजक भोग नहि करय देथिन। परन्तु, कयल की जा सकैत छलैक? महारानी अपन दिससँ अपन देयाद सभकेँ कहियो एहन कारण उपस्थित नहि होमय देलथिन जाहिसँ हुनका लोकनिक आपसी संबंध कटु होइन। यथासंभव ओ अपन देयाद लोकनिसँ सम्पर्क रखैत छलीह। यज्ञ-भोजन आदिक क्रममे महारानी हुनका लोकनिकेँ आमंत्रित करैत छलथिन।

महारानी आब अधिक काल रोग-शय्याहिपर पड़लि रहैत छथि। बाबू भैयाजीझा आ विजयगोविन्दक अधिकांश समय महारानीक सेवा-सुश्रूषामे बितैत छनि। ओहिसँ समय निकालि ओ ओकनि राज-प्रशासनक काज सेहो

देखैत छथि। बूढ़ा देवानजी दफ्तदारीसँ अपन काजमे संलग्न रहैत छथि। हुनका एके बातक चिन्ता छनि जे महारानीक बाद एहि राजक की गति हेतैक। महारानीकेँ अपन रोग-शय्यापर राज-संबंधी सभ सूचना भेटैत रहैत छलनि। ओ सुनि लेथिन, मुदा अपन प्रतिक्रिया प्रकट नहि करथिन। भैयाजीझा आ विजयगोविन्दकेँ ओ एकेटा बात कहथिन जे प्रजापर कहियो कोनो प्रकारक अत्याचार नहि हो। प्रजाक सुख-सुविधाक लेल राजक दिससँ जे काज सभ ओ अपन जीवन-कालमे प्रारंभ करौलनि से सभ चलैत रहय, ई परामर्श ओ सतत दुनू पिता-पुत्रकेँ दैत रहथिन। महारानी राजक उत्तराधिकारीक विषयमे किछु प्रकाश नहि करथि आ ई चर्चाक विषय भऽ गेल छल।

महारानीकेँ एहि बातक संतोष छलनि जे ओ ईस्ट इन्डिया कम्पनीसँ चिर-स्थायी प्रबंधक समझौता कऽ लेने छलीह। हुनका इहो आशंका छलनि जे चिर-स्थायी प्रबंध नहि भेलापर हुनक मृत्युक बाद एहिमे अंग्रेज लोकनि लागि सकैत छलैक। मुदा एहिसँ ओ आब निश्चिन्त छलीह। महाराज इन्द्रनारायणक अपन सुधार सभ आ राजक उन्नतिक लेल अपन कयल काज सभ हुनका स्मरण अबनि। बाबू भैयाजीझा आ विजयगोविन्द हुनक आशाक बिन्दु छलथिन। हुनका ई आशा छलनि जे हुनक मृत्युक बादो हुनक इच्छानुकूल ओ लोकनि सुचारु रूपसँ राजक संचालन करैत रहताह। मुदा कोन अधिकारसँ? महारानीक मृत्युक बाद तँ कानूनन राजक अधिकार हुनक देयाद लोकनिक हाथमे चल जयतनि। भैयाजीझा आ विजयगोविन्दकेँ राजक स्वामित्व नहि रहतनि। एहनो स्थितिमे ओ कर्तापुत्रक निर्णय नहि कऽ रहलि छलीह!

महारानी दुःखित छथि से आब ककरो नहि अनठीह, ई समाचार सुनि प्रतिदिन राजक विभिन्न कोनसँ प्रजागण महारानीक जिज्ञासामे अबैत छल। महारानीक आदेश छलनि जे एहन सभ लोकक लेल भोजन आ विश्रामक प्रबंध राज दिससँ रहय। डयोढ़ी सुपरिन्टेन्डेन्ट भैयाराम मिश्र अधिक काल मोहनीगढ़ीमे रहैत छथि। महारानीक इच्छानुसार एहन लोक सभक आतिथ्यमे ओ जुटल रहैत छथि।

आइ मोहनीगढ़ीमे वैद्य-हकीमक जमघट अछि। ओ लोकनि सम्मिलित रूपसँ महारानीकेँ देखलथिन आ एहि निर्णयपर ऐलाह जे ओ आब किछुए दिनक अतिथि छथि।

ओ आब बहुत कम बाजथि। हुनका एकान्त प्रिय लगनि। हुनक सौरिखाक देयाद लोकनि सेहो हुनका देखय अयलथिन आ एहि निर्णयपर अयलाह जे ओ आब कम्मे दिनक अतिथि छथि। सौरिखाक देयाद लोकनि जे

हुनका देखय अयलथिन, महारानी हुनको लोकनिकेँ ई कहि कहलथिन जे भैयाजीभा आ विजयगोविन्दपर ध्यान रखथि आ अहूँ सभ मेल-मिलापसँ रहब। महारानी भैयाजीभा वा विजयगोविन्दपर ध्यान रखबाक हेतु किएक कहैत छलथिन ? राज तँ हुनका लोकनिक अधिकारमे आवश्यकता नहि छलनि ! महारानी एखनहुँ दुनू बाप-बेटामेसँ ककरहु कर्त्ताधुत्र नहि बनौने छथिन। महारानीकेँ सौरियाबला देवानक संग हुनक राज-वैद्य सेहो आयल छथिन। महारानीकेँ देखलाक बाद हुनको कहब छलनि जे ओ आब नहि बचतीह। दू दिन सौरियाबलासभ मोहनीगढ़ीमे रहि पुनः सौरिया चल गेलाह।

महारानी एखन धरि कर्त्ताधुत्र ककरहु नहि बनौलथिन। भैयाजी भा आ विजयगोविन्दसँ निकट संबंधः हुनका केओ नहि छलथिन। बाद ओ दुनू पिता-पुत्रकेँ राजक गोपनीय कागत-पत्र बुझा देलथिन। हुनक शक्ति बहुत क्षीण भऽ गेल छलनि। बजबामे कष्ट बुझि पड़नि। तैं आब ओ इशारासँ गप्प करथि। हुनका परिचारिका लोकनि सतत हुनक सेवामे लागल रहैत छलथिन।

आब महारानीकेँ भोजनोमे रुचि नहि रहि गेल छलनि। ओ मात्र गंगाजल पिबथि। हुनका लेल मनिहारी घाटसँ नियमितरूपेँ गंगाजल आनल जाय। हकीम आ वैद्यक जोर देलहुपर ओ भोजन नहि करथि। फलक रस देल जाइत छलनि, मुदा ओहो पीबय लेल ओ तैयार नहि होथि।

हुनक दृष्टि समाप्त भऽ गेल छलनि। एही स्थितिमे महारानीक समय बीति रहल छलनि। हुनक सम्बन्धी लोकनि जिज्ञासासँ मोहनीगढ़ी बरोबरि आबि रहल छथिन। आब ककरहु ई विश्वास नहि छैक जे महारानी बचतीह।

एहनो समयमे महारानी बबुआ झाकेँ स्मरण कयलथिन। ई बबुआ भा वैह छलाह जे हुनक विवाहमे बबुआ छलथिन आ 'इन्दुमती'क नरथ पता हुनक पिता मनबोध भाकेँ देने छलथिन। ई बबुआ भा राजमे सेवक बना देल गेल छलाह, मुदा आइ महारानी हुनका एकावन बीघा जमीन, लिखिक लाखेराज, देबाक आदेश देलथिन। इशारासँ विजयगोविन्दकेँ कहि ओ ई भाव स्पष्ट कयलनि।

महारानीक शक्ति आब बहुत क्षीण भऽ गेल छलनि। ककरहु आब हुनक जीवनक आशा नहि छलैक। सौरियाबला हुनक देयाद सेहो मैह भुकिकऽ गेल छलाह आ तरहिकर ओ लोकनि अपन अधिक कार्यक्रम तैयार करबामे लागल छलाह। हुनका लोकनिक ई कार्य-नीति छलनि जे महारानीक दिवंगत भेलापर ओ लोकनि अपनाकेँ हुनक जमींदारीक स्वामी घोषित करताह। महारानी

एहि बातकेँ बुझैत छलथिन आ तेँ ओ अपन देयाद लोकनिसँ सौजन्यक हेतु निवेदन करने छलथिन आ भैयाजी भा एवं विजय गोविन्दपर ध्यान रखबा लेल कहने छलथिन। मुदा एहि निवेदनक की होमयवला छलैक ? भैयाजी अथवा विजयगोविन्दकेँ महारानीक मृत्युक बाद कोन हक छलनि ! वसीयतनामाक अभावमे तँ देयादे लोकनिकेँ महारानीक मृत्युक बाद राजपर हक होइत छलनि।

महारानीकेँ होश छलनि, मुदा हुनक शक्ति अत्यन्त क्षीण भऽ गेल छलनि। महारानीकेँ आवाज नहि आबैत छलनि। ओ आब इशारासँ 'हँ', 'नइ' उत्तर दैत छलथिन। बाहरमे देवानजी, वैद्यनाथ सिंह, रिट साहेब, मधुलाल, भैयाराम मिश्र आदि महारानीक स्वास्थ्यक जानकारीक हेतु प्रतीक्षारत छलाह। प्रातःकाल राज-वैद्य महारानीजीक नाड़ी देखलथिन। ओ बाहर अयलाह आ सभकेँ कहलथिन जे महारानीजी आब बारह घंटासँ अधिकक अतिथि नहि छथि। अधिक संभव जे ओ आइ दुपहरे धरि जीवित रहथि।

छेआलिस

भैयाजी भा आ विजयगोविन्दकेँ देवानजी अपन लग बजौलथिन आ कहलथिन—'महारानीसँ एखनहुँ बुझि लिअ जे ओ कर्त्ताधुत्र ककरा बनबैत छथिन। महारानीक मृत्यु आब सन्निकट छनि। सुन्दर स्थिति जे एखनहुँ हुनका होश छनि। आब एहिमे विलम्ब नहि होयबाक चाही।' भैया भाकेँ कनहुनेँ प्राण अयलनि।

भैया भा संकोचपूर्वक कहलथिन—'देवानजी, अहीँ ई बात महारानीसँ पुछियौन।'

देवान जी—'बड़, प्रतीक्षा करू। भैयाराम मिश्रकेँ सेहो बजा लिअौन। रिट साहेब, वैद्यनाथ सिंह, मधुलाल, धर्मलाल सिंह आदि सभ अधिकारीकेँ बजा लिअौन। विजयगोविन्दकेँ सेहो संग कऽ लिअऽ।' ई कर्मचारी सभ कहियो महारानीसँ मुहाँमुँही नहि भेटैत छलथिन।

भैयाजी—'देवान जी, महारानीकेँ अहीँ पुछियौन।'

देवान जी—'हँ, हम पुछबनि। महारानी ककरा अपन उत्तराधिकारी घोषित करथिन, ई ओ अपने कहि देथु। हुनक मर्म ओ जनतथि, सेहो स्पष्ट

कऽ जयबाक चाही। ओ अकरा धर्मपुत्र बनौलथिन, सैह हुनक कर्म करथिन आ सैह एहि राजक उत्तराधिकारी होयताह। यदि एखन ई स्पष्ट नहि भऽ जाइत छैक तँ राजक उत्तराधिकारीक प्रश्न लऽ कऽ अनेक समस्या उपस्थित होयत।'

अधिकारीगण तथा भैयाजी झा आ विजयगोविन्द देवानजीक संग महारानी लग पहुँचलाह। महारानी जी एकटक सभकेँ देखय लगलथिन आ फेर आँखि मूनि लेलनि।

देवानजी—'सरकारक आज्ञा चाही जे हिनक कर्त्तापुत्र के छथिन।'

महारानी आँखि खोललनि आ चारू दिस जेना किछु ताकय लगलीह। भैयाजी झा आ विजयगोविन्द सोझाँमे नहि छलथिन। ओ लोकनि पाछाँ दिस छलथिन। देवानजी महारानीक हृदयक भावकेँ बुझलनि। ओ पाछाँ घूमि भैया झा आ विजयगोविन्द दिस तकलनि। ओ दुनू आगाँ बढ़िकऽ महारानीक सोझाँमे अयलाह। महारानी हुनका दुनू गोटाकेँ देखय लगलथिन। हुनक आँखिसँ निरन्तर अश्रुधाराह चलि रहल छलनि।

देवानजी—'सरकारसँ आज्ञा चाहैत छी जे जिनका कर्त्तापुत्र बनबैत छियनि। जिनका बनबय चाहैत छियनि, तनिकर नाम हमरा लोकनिकेँ कहि देल जाओ।'

महारानी एकटक विजयगोविन्द आ हुनक पिता भैयाजी झाकेँ देखि रहल छलथिन। एना बुझि पड़ैत छलैक जे हुनका दुनू गोटाक विषयमे ओ किछु सोचि रहल छलीह।

देवानजी—'सोझाँमे बाबू भैयाजी झा आ विजयगोविन्द झा ठाढ़ छथि। कर्त्तापुत्रक फैसला आब कऽ देल जाय।'

भैयाजी झा आ विजयगोविन्दक अतिरिक्त राजक अधिकारी लोकनि, राज-वैद्यजी आदि सेहो महारानी जी लग ठाढ़ छलाह। देवानजी जखन महारानीसँ कर्त्तापुत्रक विषयमे पुछय लगलथिन तँ ओ भैयाजी झाक हाथ पकड़ि कऽ कानय लगलीह। हुनक हाथ पकड़नहि ओ देवानजी दिस ताकय लगलथिन।

सबकेँ ई स्पष्ट भऽ गेलैक जे महारानी भैयाजी झाकेँ अपन कर्त्तापुत्र बनौलथिन।

देवानजी पुनः महारानीकेँ पुछलथिन—'बाबू भैयाजी झाकेँ कर्त्तापुत्र नियुक्त कयल गेलैक?'

एकर उत्तरमे महारानी मूड़ी डोला देलथिन।

आब कोनो दुविधा नहि रहि गेल जे बाबू भैयाजी झाकेँ महारानी कर्त्तापुत्र बनौलथिन। सभ एखनहुँ सोचैत छल जे एतबा दिनतँ ओ एहि गंभीर प्रश्नपर चुप किएक छलीह। हुनका इहो आशा नहि छलनि जे ओ अधिक दिन जीतीह। ई ओ स्वयं बाजल छलीह जे हुनक अन्त समय अनिचा गेल छलनि। जे हो, आब निर्विवाद रूपसँ ई जानकारी सबकेँ भऽ गेलैक जे बाबू भैयाजी झा महारानीक कर्त्तापुत्र भेलाह।

सैंतालिस

सन् 1211 साल, तारीख 1 अगहन, दिन मंगल, तदनुसार 15 नवम्बर, 1803 ईस्वी।

भौड़ागढ़ीक राजमहलमे आइ हाहाकार मचल अछि। सभ शोकमे डूबल अछि। आइए भिनसर महारानीजी भैयाजी झाकेँ कर्त्तापुत्र नियुक्त कयलनि आ छओ घंटाक बाद दुपहरक समयमे राज-वैद्य महारानीक नाड़ी आ लक्षण देखि कऽ भैंट स्वरसँ कहलथिन जे 'आब किछुए क्षणमे महारानी हमरा सभक परित्याग कऽ देतीह।'

ओहिठाम बहुतहो लोक। सभ जेना निराशाक सागरमे डूबि गेल। अङ्गनसँ बाहर कऽ हुनका भूमिशोग करा देल गेलनि। शीघ्रहि ओ गोदान कयलनि। राज-पंडित शुभनाथ मिश्र उपस्थित छलाह। विधिपूर्वक वैतरणी कर्म करा देल गेल।

भैयाजी झा, विजय गोविन्द आदि महारानीकेँ गंगाजल पिऔलथिन। जल घोंटैत संग-संग महारानीकेँ हिचकी अयलनि आ हुनक प्राण विलीन भऽ गेलनि। महलमे भयंकर रुदन आरंभ भेल। नोकर-चाकर, परिचारिका सभ, अधिकारी वर्ग, संबंधी वर्ग, प्रजावर्ग—जे केओ उपस्थित छलाह, सभक आँखिसँ नोर बहि रहल छलनि।

एही कालमे देवानजी विजयगोविन्द झाकेँ कहलथिन जे कानब-खीजब छोड़ि आब आगाँक काजमे लागू। संध्याकाल धरि दाह-कर्म समाप्त भऽ जयबाक चाही। अपन पिताजीकेँ कहियौन जे ओ आगि देबा लेल तैयार रहथि।

राजपंडित अंतिम संस्कारक हेतु आवश्यक वस्तु सभक एकटा फरदी बनौलनि । देवानजीकेँ ओ वस्तु सभ मङा देबाक हेतु कहलथिन । तुरन्त एकटा तहसीलदारकेँ नओ मन चाननक लकड़ी, घृत, तिल, सुगन्धित तेल, जौ तथा अन्यान्य आवश्यक वस्तु सभ अनबाक आदेश भेटैक आ शीघ्रे सब वस्तु आबि गेल । अर्थी बनाओल गेल । महारानीक संबंधी लोकनि हुनक अर्थीमे कान्ह देलथिन । किछुए कालमे लव-जुलूस सौरा नदीक कछेरमे स्थित श्मशान घाटपर पहुँचल । राज-पंडित सेहो संगहि छलथिन । भैयाजी झा कर्त्तापुत्रक हैसियतसँ महारानीकेँ मुखाग्नि देलथिन । वैदिक मंत्रोच्चारक बीच किछुए समयमे हुनक शरीर पंचतत्त्वमे विलीन भऽ गेलनि । दू हजार वर्गमीलक स्वामित्ववाली तथा तीन लाख अस्सी हजार रुपैया सरकारकेँ वार्षिक राजस्व देवयवाली आ तेरह लाख पन्द्रह हजार छओ सय तेरानबे रुपैयावला इस्टेटक स्वामिनी महारानी इन्द्रावती आब नहि रहलीह ।

महारानीक मृत्युक बादेसँ भैयाजी झा आब राजा भैयाजी झा कहबय लगलाह आ हुनक पुत्र कुमर विजयगोविन्द कहबय लगलथिन ।

महारानी बिनु कोनो प्रकारक वसीयतनामा लिखने निस्संतान मुइलीह । एहि कारणेँ ओहि समयक कानूनक अनुसार हुनक व्यक्तिगत सम्पत्तिपर दिनांक 16 नवम्बर, 1803 ईस्वीकेँ पूर्णियाक जज डब्ल्यू० वोडी द्वारा सरकारी मोहर लगा देल गेल । पुनः 17 नवम्बरकेँ महारानीक पहसरा स्थित सम्पत्तिपर सेहो जजक मोहर लगाओल गेल जाहिसँ बादमे ई सम्पत्ति सभक कानूनन जे अधिकारी होथि तनिका भेटि जाइन्हि । महारानीक मृत्युक चारिमे दिन भैयाजी झाकेँ हुनक श्राद्ध करबाक छनि । हुनका महारानीसँ तीनिये दिनक सम्बन्ध छलनि । एहि कारणेँ ओ चारिमे दिन महारानीक श्राद्ध करितथि ।

एहि श्राद्धमे पन्द्रह हजार छओ सय सत्तरि रुपैया खर्चक अनुमान छलैक । ई राशि जज महारानीक एक विश्वस्त कर्मचारीकेँ अग्रिम दऽ देलथिन । एहि प्रसंगमे जज गवर्नर-जेनरलसँ जे अनुमति मङने छलथिन ताहिमे लिखल गेल छल जे 'रानीक उच्चजाति आ उच्च ओहदाकेँ देखैत उपर्युक्त खर्चक स्वीकृति देब आवश्यक अछि ।' महारानीसँ अंगरेज प्रशासक लोकनिक प्रभावित छलाह ।

महारानीक श्राद्ध सम्पन्न भऽ गेल । राजा भैयाजी झा हुनक उत्तराधिकारी भेलथिन । मुदा, हुनक विरोध प्रारम्भ भऽ गेल । महारानीक सौरियाबला देयाद राजा राजेन्द्र नारायण राय आ महेन्द्र नारायण राय सौरियासँ संवाद पठौलथिन जे राजक वास्तविक उत्तराधिकारी ओ लोकनि छथि । भैयाजी झा

अपन गुजर-बसर लेल किछु लऽ कऽ विरत भऽ जाथु आ राजक उत्तराधिकारी बनबाक मोह-माया छोड़थु । सम्बन्धीवर्गक लोक सभ सेहो समुचित सलाह नहि देथिन । किछु गोटाक इच्छा छलनि जे लड्डू लड़य आ भिल्ली सड़य । देखितहिँ-देखितहिँ राजमे दू पक्ष भऽ गेल । ई दू पक्ष कोनो सिद्धान्तपर आधारित नहि छल । मूलमे एकेक अभिप्राय छलैक जे एहन परिस्थितिमे जे जाहि पक्षसँ रुपैया-पैसा टानि सकय, से टानय ।

अड़तालिस

हवेली परगनाक चौधरी— 'देवानजी, महारानी तँ वैकुंठवासिनी भऽ गेलीह । आब हमरा लोकनिक की हेतैक ?'

देवानजी— 'अहाँ लोकनि राजक कार्य पूर्ववत् करैत रहू आ कमायल मुशहरा भेटल करत । किछुए दिनमे सब स्पष्ट भऽ जेतैक ।'

चौधरी— 'सुनबामे आबल अछि जे सौरिया बला सभ कहैत छथिन जे राजक असल मालिक ओ लोकनि छथि । भैयाजी झा तँ समुचित रूपेँ कर्त्तापुत्र सेहो नहि बनाओल गेल छलाह । येनकेन प्रकारेण दरबारी सभक कहलासँ ओ महारानीकेँ आगि देलथिन आ कर्त्तापुत्र बनि गेलाह । महारानी हुनका कर्त्तापुत्र बनौलथिन तकर घोषणा कहियो नहि कयल गेल आ ने कागजपर एहि संबन्धमे किछु लिखल गेल ।'

—'हमरा लोकनि तँ देखलिऐक जे महारानी भैयाजी झाकेँ सभ अधिकारीगणक समक्ष कर्त्तापुत्र बनौलथिन ।'

—'लोक कहैत अछि जे अहाँ भैयाजी झाक तरफदारी कयलियनि ।'

—'आब ककरो कहला-सुनलासँ नहि हेतैक । मामिला कचहरी जयबे करतै । एहि जमींदारीमे तेरह लाखसँ अधिकक तहसील-वसूलक अतिरिक्त कैक लाख आमदनी सैरात महालसँ आ बकाश्त जमीनसँ छैक । ई तँ सत्य छैक जे महारानीक प्रत्यक्ष वंशधर केओ नहि छथिन । मुदा एहि पैघ सम्पत्तिक उत्तराधिकारी बनबाले केओ आगाँ बढ़ि सकैत अछि जकरा कनेको हक बुझि पड़तैक ।'

—'एखन धरि तँ राजा राजेन्द्रनारायण राय आ महेन्द्रनारायण राय दुइए गोट मोकदमा दायर कयने छथिन ।'

—'अहाँके बुझल अछि जे महारानीक कोनो बहिनिक पुत्र गंगादत्त झा छथिन । अहाँके स्मरण होयत जे महारानी हिनका राजमहलमे शरण देने रहथिन आ ई सपरिवार पहुसरा ड्योढ़ीमे रहैत छलाह आ महारानी हिनका लेल मासिक वृत्तिओ निर्धारित कऽ देने छलथिन । यैह गंगादत्त मलाह आ हलुआइ सभसँ उधार लैत छलथिन । महारानीक मना कयलहुपर ओ अपन चालिसँ बाज नहि अबैत छलथिन । अनशन कऽ कऽ महारानी हुनक आदति छोड़ौलनि । मधुर आ माछक दाम महारानी निजी कोषसँ दऽ दैत छलथिन । वैह गंगादत्त झा आ हुनक दुनू पुत्र रचिपति झा आ भोलानाथ झा आब राजक उत्तराधिकारक दाबी करैत छथि । हुनका लोकनिक मोकदमाक कागज बनि गेल छनि ।'

—'ई तँ खूब सुनलहुँ ।'

—'भैयाजी झा सतर्क छथि आ एखन धरि जमींदारी हुनके दखलमे छनि । विजयगोविन्दकेँ सेहो जमींदारी चलयबाक प्रशिक्षण महारानी स्वयं दऽ कऽ गेल छथिन ।'

—'अच्छा देवानजी, ई तँ कहू जे महारानी पहिनहि सँ लिखि-पढ़ि कऽ किएक ने कर्त्तापुत्रक नियुक्ति कयने छलीह जे मरणकालसँ छओ घंटा मात्र पूर्व ओ पुछलापर लोककेँ इशारासँ कहलथिन जे भैयाभाकेँ ओ कर्त्तापुत्र नियुक्त करैत छथि ?'

—'एहिमे एकेटा बात देखैत छी जे यदि महारानी लिखि-पढ़ि कऽ कर्त्तापुत्र बनबितथि तँ सौरियावला ओहि कागजक आधारपर मामिला दायर करितथिन जे संभवतः महारानी अपन जीवनमे नहि चाहैत छलीह । मुदा, भगवानक लीला देखू जे सौरियाक राजा राजेन्द्रनारायण राय आ महेन्द्रनारायण राय दुनू निःसंतान छथि । समरसिंहक वंशमे आब केओ भविष्यमे राजा नहि भऽ रहल छथि ।'

—'भगवानक लीला अपरम्पार छनि ।'

—'ई संक्रमण काल थिक । वफादारीसँ अपन काज करू । भगवान नीके फल देताह ।'

—'सुनबामे आयल अछि जे मरबासँ पूर्व महारानीजी अहाँक काशी-वासक हेतु वृत्ति निर्धारित कयने छथि । ओही कागजपर ओ ईहो लिखने छथि जे हुनक मृत्युक बादे ई बात प्रकाशमे आबय । की अहाँ महारानी जीकेँ एहि संबंधमे किछु कहने छलियनि ?'

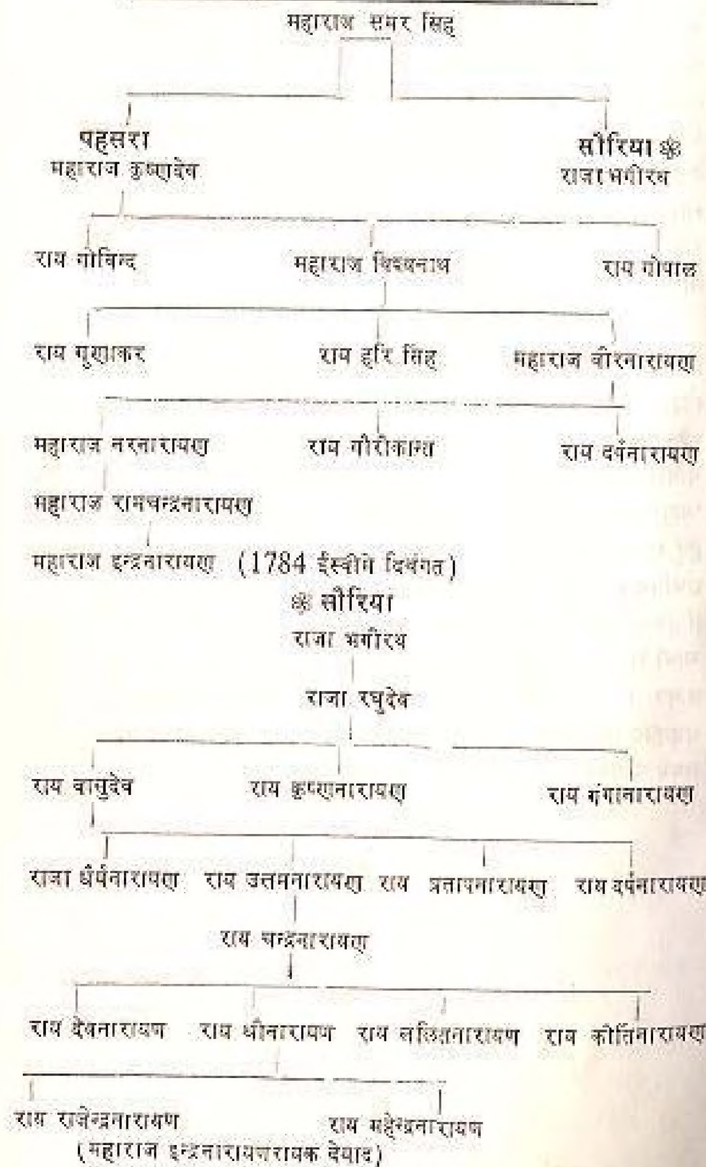
—नहि, हम हुनका एतबे बात एक दिन गप्पक प्रसंगमे कहने छलियनि जे राजक नोकरीसँ छुट्टी भेलाक बाद काशीवासक हमर विचार अछि । एहिपर ओ कहलनि जे एखन अहाँ काज करबाक योग्य छी, काज करू । मुदा, जहिया काशीवास करबाक इच्छा होअय, अहाँ अवश्य काशी चल जायब । देवानजी कनेक रुकि कऽ बजलाह — 'हम तँ आब बहुत वृद्ध भऽ गेल छी । कहिया ने देवानगिरी छोड़ि दितहुँ मुदा महारानीक उदारता, स्नेह ओ वात्सल्यसँ हुनक सेवामे संलग्न रहलहुँ । आब हम विचार कऽ रहल छी जे काशी चल जाइ आ ओतहि बाबा विश्वनाथ ओ माँ गंगाक आश्रयमे अपन अंतिम समय बिताबी ।

देवानजी एकाएक गंभीर ओ करुणार्द्र भऽ गेलाह । शून्य दिस निर्निमेष देखैत बाजऽ लगलाह — 'जावत महारानी छलीह तावत हुनक स्नेहक डोरीमे बान्हल रहलहुँ । जहाजक पंछी जकाँ अजस्र ममताक आश्रयमे रहैत रहलहुँ । आब तँ ओ रहलीह नहि । तखन हमहीँ किएक एहि मायाजालमे लपटायल रही ?' फेर किंचित विलमि मन्द स्वरेँ कहलथिन— 'महारानीक वैभव देखू जे ओ बिना हमरा जनतब देने हमर काशीनिवासक हेतु सब व्यवस्था कऽ गेलीह । आ से कागज ओ विजयगोविन्द लग राखि देने छलथिन । एहन छलीह विशालहृदया हमरा लोकनिक महारानी । हम सब तँ हुनक ममताक शीतल छायामे जीवन यापन कयल तेँ कृतकृत्य छी । मुदा भावी पीढ़ीक लोक महारानीक सम्बन्धमे केवल कथा किंवदन्ती मात्र सुनत-जानत । महारानीक चरित्र लोककथा वा पौराणिक उपाख्यानक सदृश श्रवणीय भऽ जायत । श्रुति-परम्परामे बूढ़-पुरान लोक अपन धिया-पुताकेँ लगमे बैसाकऽ कहल करतैक जे एक छलीह महारानी ... ...'



परिशिष्ट—1

सुरगण लौआम शाखाक वंशावली



परिशिष्ट—2

माण्डर मूलक रजौरा शाखाक वंश-वृक्ष

विद्यावारिधि महामहोपाध्याय नरसिंह
|
महो शूलपाणि
|
महो विभाकर
|
महामहोपाध्याय नारायण
|
महामहोपाध्याय देव शर्मा
|
महामहोपाध्याय जगन्नाथ
|
महामहोपाध्याय वरेश
|
महो पशुपति
|
महो शिवपति
|
महो शशपति
|
अपेल
|
लाखन
|
महो महादेव
|
राम
|
महो गोपीनाथ
|
वैयाकरण मनबोध

ईसहपुर निवासी वैयाकरण मनबोध झा महारानी इन्द्रावतीक पिता छलथिन ।

परिशिष्ट—3

महारानी इन्द्रावतीक पिता मनबोध झाक विवाह नड़आर ग्रामवासी पवौली मूलक अड़ियाम वासाक रामेश्वर झाक कन्यासँ छलनि ।

रामेश्वर झाक वंशावली

रामेश्वर झा
|
रुद्रदत्त झा
|
राजा भैयाजी झा
|
राजा विजयगोविन्द सिंह
|
कुमर विजयगोपाल सिंह — कुमर भवगोपाल सिंह

रामेश्वर झा महारानी इन्द्रावतीक मातामह छलथिन । रुद्रदत्त झा हुनक मान आ राजा भैयाजी झा हुनक ममिऔत भाइ छलथिन जे महारानीक धर्मपुत्र भेलथिन । 1815 ईस्वीमे राजा भैयाजी झाक मृत्युक बाद राजा विजयगोविन्द सिंह पड़ुसरा इस्टेटक उत्तराधिकारी भेलाह । राजा विजयगोविन्दकेँ दू पुत्र छलनि मुदा दू मेसँ एकोकेँ बालक नहि ।

